

अतीत

प्यार की एक अधूरी कहानी

Sachin Gupta

“ये एक ऐसी अधूरी तस्वीर है जिसका कलाकार खो गया है”

अतीत प्यार की एक अधूरी कहानी

SACHIN GUPTA

All Rights Reserved. Copyright © 2018.Sachin Gupta

उनके लिए जिन्होंने कभी प्यार किया है,
उसे महसूस किया है दिल से,
उसे पाना चाहा है,
उसके लिए सामना किया है अपने बीच आए दिक्कतों
से, लोगों से, दुनिया से और उनके तौर तरीकों से।

DISCLAIMER

इस कहानी के सभी पात्र काल्पनिक हैं। नाम, स्थान और घटनाएँ केवल लेखक की कल्पना है या काल्पनिक रूप से प्रयोग किया गया है। इसका वास्तविक व्यक्ति, जीवित या मृत, या वास्तविक घटनाओं से कोई समानता नहीं है। यदि समानताएं हो भी जाती हैं तो ये केवल संयोग माना जाएगा।

ABOUT THE AUTHOR

“अतीत” सचिन गुप्ता की लिखी पहली किताब है। ये उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं। घर की परिस्थिति ठीक ना होने के कारण इन्हें चौदह साल के उम्र में ही काम करने मुम्बई आना पडा। शुरू से ही इन्हें पढाई में बहोत दिलचस्पी थी। दुसरे प्रदेश में काम करने के साथ-साथ इन्होने पढाई भी की। इस तरह से ये अपनी पढाई केवल बारह तक ही कर सके। आगे ये केवल एक ही तरफ ध्यान दे सकते थे पढाई या रोजगार। इन्होंने रोजगार को चुना। इनका कहना है कि इन्होंने गरीबी और तकलीफ को उतना ही करीब से देखा है जितना की लोग आईना देखते हैं। कम उम्र में ही इन्हें दुनिया की समझ आ गई थी। अक्सर ये हमेशा किसी सोच में खोए रहते थे। उनके आस-पास क्या होता उन्हें खबर नहीं रहता था। उन्हीं सोच में खोकर कल्पना करने की अपनी क्रिया को इन्होने पहचाना और कहानी लिखने के लिए प्रेरित हुए।

PROLOGUE

आकाश- मैं अपने बारे में?

रिया- हाँ नहीं तो क्या मेरे बारे में?

आकाश- अपने बारे में मैं क्या बताऊँ? मैं खुद अपने बारे में कुछ नहीं जानता।

रिया- कुछ नहीं जानते मतलब?

आकाश- समझ लो कि मैं एक ही जन्म में दुसरी जिन्दगी जी रहा हूँ। मेरी यह जो जिंदगी है ये सिर्फ छह साल पहले ही शुरू हुई है, इसके पहले मैं कौन था, कैसा था, मेरे माता-पिता कौन थे कुछ नहीं पता। जब मेरी आंख खुली तो मेरे आसपास ऐसा कोई नहीं था जो मुझे पहचानता हो। सब अनजाने से लग रहे थे, मैं किसी को पहचान नहीं पा रहा था। डाक्टर ने कहा कि मुझे हिस्टेरिकल एमनेशिया हुआ है। सर पर गहरी चोट लगने के वजह से सब कुछ भुल जाने की बिमारी। यहाँ तक कि मैं अपना चेहरा देखकर भी खुद को नहीं पहचान पा रहा था। ऐसे में वहाँ सिर्फ एक ही शख्स मौजूद था जिसने मेरा साथ दिया, जिसने मुझे नदी से निकाल कर अस्पताल ले गया और फिर मुझे अपने साथ रखा 'खन्ना अंकल'। उन्हें मेरी कोई ऐसी चीज नहीं मिली जिससे मेरी पहचान हो सके। उन्होंने ही मेरा नाम आकाश रखा। बस तबसे मैं इसी पहचान के साथ जी रहा हूँ।

रिया- क्या तुमने कभी जानने की कोशिश नहीं की? अपने

अतीत के बारे में जानने की?

आकाश- नहीं की, क्योंकि अंकल समझाते थे कि कुछ बातें भूल जाना ही सही होता है। क्या पता तुम्हें तुम्हारे अतीत में कुछ चीजें ऐसी भी मिल जाए जिसका सामना तुम नहीं कर पाओ, क्या पता कुछ लोग ऐसे भी मिल जाए जो तुम्हारे दुश्मन हो? तो तुम्हें जो यह नयी जिंदगी भी मिली है ये भी गवां बैठोगे। थोड़े दिनों तक मैं परेशान था पर धीरे-धीरे मेरा मन लगने लगा, काम करने लगा बहोत कुछ सीख भी गया। यहां अच्छा लगने लगा। कभी-कभी अंकल ये भी कहते थे कि तुम यहां घुल मिल गए हो इसका मतलब ये नहीं की तुम अपने आप को पूरी तरह से भुला दो, यह सवाल अपने मन में रखो कि तुम कौन हो? तुम ऐसा क्यों हो? और बाकी सब समय पर छोड़ दो। समय सबसे ज्यादा ताकतवर होता है और जिस दिन वो तुम्हारे साथ होगा उस दिन तुम्हें तुम्हारे सारे सवालों का जवाब मिल जाएगा।

1

अनजान जिंदगी

रात के करीब दो बज रहे होंगे। तभी

आकाश निंद से जाग उठा। जैसे मैराथन में दौड़ लगा कर आया हो वैसे हांफ रहा था। सर में दर्द हो रहा था। भर चेहरे से पसीने टपक रहे थे। शायद कोई बुरा ख्वाब देखकर इतना घबड़ाया हुआ था। पलंग से उठकर वो वाँश रूम गया। चेहरे को धोकर फिर वो रसोई में जाकर चाय बनाने लगा। इतनी रात गए चाय बनाना? दरअसल ये इसकी रोज़ की आदत हो गयी है। ये ऐसे सपने रोज़ देखता है और फिर उसे दिमाग से निकालने के लिए चाय पीता है। रसोई से चाय लेकर वो वापस अपने बेडरूम में आया। चाय को मेज़ पर रखकर उसने खिड़की खोला। वहीं कुर्सी लगाकर वो बैठ गया और चाय पीने लगा। वहां से आसमान की चमक साफ-साफ दिखाई दे रही थी। अक्सर ऐसा होता है कि जब हम अकेले होते हैं तब अपनी पिछली कुछ यादों को याद कर लेते हैं, उसे दोहरा लेते हैं। आकाश भी अकेला ही था। इसी बीच वो अपनी कुछ बातें मन ही मन दोहराने लगा। आकाश- पूरे छह साल हो चुके हैं। मुम्बई जैसे शहर में अकेले रहते हुए। अपना कहने वाले बहोत हैं पर... सगा एक भी नहीं। इस वजह से बहोत खोया सा रहता हूँ। ऊपर से ये सपने। बड़े अजीब किस्म के हैं ये सपने। न कोई चेहरा दिखाई देता है और ना कोई दृश्य। केवल आवाज़ें सुनाई देती हैं। बहोत सारी आवाज़ें वो भी एक साथ। लोगों की आवाज़, खन-खन करती तलवार जैसी आवाज़, बिलखते हुए किसी लड़की की आवाज़। मैं डर जाता हूँ...रोजाना। बहोत कोशिश करता हूँ कि इस बार ऐसा सपना आएगा तो मैं डरूंगा नहीं बल्कि उसे गौर से देखने की कोशिश करूंगा, उसे समझने की कोशिश करूंगा लेकिन जब वो सपना आता है तो पता ही नहीं चलता कि वो सपना है, ऐसा लगता है कि हकीकत है और मैं उन्हीं के बीच में खड़ा हूँ। सभी परछाई की तरह नज़र आते हैं या अपने समझ से कहूँ तो... भुत की तरह। भुत से वैसे याद आया कि काफी रात हो चुकी है और मैं खिड़की भी खोल रखा हूँ। अब मैं जाकर वापस सो जाता हूँ क्योंकि सुबह गैरेज भी जाना है। आकाश जाकर बिस्तर पर लेट गया और कब सो गया पता ही नहीं चला। अगले दिन सुबह हो चुकी थी। आकाश का निंद टूट चुका था। निंद टूटने के बावजूद भी वो अपनी आंखें नहीं खोल पा रहा था क्योंकि सुरज की धूप रौशनदान से सिधे इसके चेहरे पर आ रही थी। बाहर से कुछ बच्चों की आवाज़ें भी आ रहीं थीं। आकाश बिस्तर से उठकर बालकनी में गया। निचे देखा तो बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। वहीं सामने वाली आंटी भी

थीं जो सबको डांट रही थीं।

हे बच्चों! सुबह-सुबह क्या शोर मचा रखा है? जाओ कहीं और खेलो। आंटी ने उन्हें डांटते हुए कहा।

आंटी, पूरी सोसायटी में ऐसी जगह कहीं नहीं है इसलिए हम यहीं खेलेंगे(एक बच्चे ने जवाब दिया)।

आकाश उस लड़के की बात पर मुसकुराने लगा। तब तक आंटी की नजर उस पर पड़ गयी।

आंटी- आकाश, अब तुम ही समझाओ इन लोगों को, मेरी तो ये एक नहीं सुनते।

आकाश- जाने दो ना आंटी बच्चे हैं, यहां नहीं खेलेंगे तो कहां खेलेंगे?

आंटी- खेलना जरूरी है क्या? एक तो आज सन्डे है और उनकी छुट्टी है। बाकी दिन तो वो आराम नहीं कर पाते। आज मौका मिलता है आराम करने का तो वो भी इन लोगों के वजह से नहीं कर पाते।

आकाश- आंटी, बच्चे हैं खेलेंगे नहीं तो और क्या करेंगे? वैसे भी अंकल को इनसे कोई शिकायत नहीं होगी क्योंकि वो जानते हैं आराम करने से सिर्फ थकावट दूर होती है, सुकून नहीं मिलता। सुकून के लिए थोड़ा हलचल होना जरूरी है।

आंटी- हाँ वैसे तुम भी ठीक ही कहते हो। अच्छा ये बताओ तुम इतना कुल कैसे रहते हो? उन्होंने मुस्कराते हुए पुछा।

आकाश-बस आंटी ऐसे ही।

आकाश को गैरेज के लिए देर हो रहा था इसलिए वो जल्दी से नहा धोकर, तैयार होकर घर से निकल गया। रास्ते में आंटी की कही हुई एक शब्द आकाश के दिमाग में बहोत देर से घुम रही थी “कुल”।

“कुल”, इस शब्द ने उसे वहीं रोक दिया। वो आंटी से आगे बात कर सकता था लेकिन नहीं किया क्योंकि वो खुद से ही बातें जो करने लगा था।

आकाश-(मन ही मन) “हा कुल? अब उन्हें कैसे बताता कि मैं कितना कुल रहता हूँ? जिस चीज को वो कुल समझती हैं दरअसल वो नहीं जानतीं कि वो एक नकाब है। हां नकाब, जिसका इस्तेमाल मैं खुद की खामियां और तकलीफ छुपाने के लिए करता हूँ। मुझमें बस यही खामियां हैं कि मेरे पास ऐसा कोई नहीं जिसे मैं अपना कह सकूँ। अब मेरी यही खामियां हैं तो तकलीफ होगी ही। कौन नहीं चाहता कि उसका एक परिवार हो माँ हो बाप हो भाइ-बहन हो। इनके बिना जिंदगी अशांत होती है, मेरी भी है इसलिए मैं लोगों से लगाव रखने की कोशिश करता हूँ, अच्छे बर्ताव से पेश आने की कोशिश करता हूँ ताकि मैं उनके करीब रह सकूँ और वो मेरे करीब रह सकें और मुझे किसी की कमी महसूस न हो। बस यही है मेरे नकाब का सच। वैसे यहां मेरी अच्छी जान-पहचान हो गयी है। लोग मुझे चाहते हैं, इज़्जत करते हैं। खास करके दादी। मेरे पड़ोस में ही रहती हैं। इन दिनों गांव गयीं हैं नहीं तो आज मैं घर से बिना कुछ खाए नहीं निकलता क्योंकि रोज सुबह-सुबह वो मुझे नाश्ता देने आ ही जाया करती हैं। खैर यही है मेरी दिनचर्या। रोज सुबह उठना, काम पर जाना, दिन भर काम करना, शाम को घर वापस आना, थोड़ी बहुत पड़ोसियों से बातें करना फिर खाना बनाना और खाकर सो जाना। सुबह से फिर वही सिलसिला जारी रहता है।

आकाश गैरेज पहुंच गया। यहां पर वो एक मैकेनिक का काम करता है। उसके साथ में और भी दो लोग काम करते हैं बंटी और गजेन्द्र पाजी। आज सन्डे था इसलिए गजेन्द्र पाजी नहीं थे आए सिर्फ बंटी आया था क्योंकि वही गैरेज का देखभाल करता था।

बंटी- और आकाश भईया कैसे हो?

आकाश- ठीक हूँ। तु कैसा है?

बंटी- क्या बताऊँ भईया? आज सोचा कि छुट्टी कर के कहीं बाहर घुमने जाऊंगा, लेकिन बाहर चला जाऊंगा तो गैरेज कौन खोलेगा? और काम कौन करेगा? सच बताऊँ भईया जितना काम करके नहीं थकता उतना तो इस गैरेज का शटर उठाने और बंद करने से थक जाता हूँ, अगर यह जिम्मेदारी नहीं होती ना तो आज मैं आता ही नहीं। अपने गर्लफ्रेंड के साथ कहीं घुमने चला जाता।

आकाश- तु घुमने ही जाना चाहता है ना? आकाश ने उसके कंधे पर हाथ रखकर पुछा।

बंटी- “हाँ”।

आकाश- तो जाना। गैराज तो तुने खोल दिया, रह गया काम तो आज काम कम है मैं अकेले कर लूंगा।

बंटी- क्या सच में? लेकिन अगर सेठ को पता चला तो?

आकाश- अंकल को मैं समझा दूंगा। तु जा लेकिन शाम को चाभी लेने आ जाना।

बंटी- थैंक्स भाइ! लेकिन एक बात मुझे समझ में नहीं आता, आप दूसरो के छुट्टी के लिए सेठ से बात कर लेते हो लेकिन खुद तीसों दिन काम पर क्यों आते हो? सन्डे को भी आराम नहीं करते। ऐसा तो है नहीं कि सेठ आपको मना कर देंगे।

आकाश- तेरी बात सही है, अंकल मुझे मना नहीं करेंगे लेकिन मैं छुट्टी लेकर क्या करूंगा? कहां जाऊंगा, किसके साथ जाऊंगा? मेरे पास तो ना कोई गर्लफ्रेंड है और ना कोई परिवार। इसलिए छुट्टी करके घर पर बैठने से अच्छा है काम पर आ जाओ। सबके हालात अलग-अलग तरह के होते हैं, कोई एक जैसा नहीं होता इसलिए तु अब जा नहीं तो मैं बोलते रह जाऊंगा।

बंटी- “ठीक है।”

बंटी चला गया और आकाश काम में लग गया। पहले का तीन-चार बाइक पड़ा था उसी में समय गुजार रहा था और कुछ काम तो था नहीं। खन्ना अंकल भी रविवार को गैरेज नहीं आते। खन्ना अंकल, एक ऐसे इंसान जिन्होंने आकाश को एक नई जिंदगी दी और जिने का रास्ता दिया। अगर वे नहीं होते तो आज ये यहां नहीं होता। आकाश तो नहीं जानता है कि वो किस हाल में था? बस उसे इतना पता है कि जब उसकी आंखें खुली तबसे खन्ना अंकल ने ही उसका देखभाल किया है। उसे अपना बेटा मानते हैं। आकाश उनके घर में चार साल तक रहा है। उनके परिवार के सभी लोग आकाश से बहोत प्यार करते थे। फिर भी आकाश वो सब छोड़कर यहां रहने आ गया। अब यहां आए उसे दो साल हो चुके हैं। ऐसे लोगों को छोड़कर यहां अकेले कौन रहना चाहेगा लेकिन इसके पिछे एक वजह थी जो मैं आपको आगे धीरे-धीरे बता दूंगा।

सुबह से दोपहर हो गया, दोपहर से शाम। आकाश ने अपना सारा काम खत्म कर लिया था। बस अब बंटी के आने का इंतजार कर रहा था। जैसे ही वो आया आकाश ने सब

उसके हवाले छोड़कर घर को चल दिया। उसके दिन ऐसे ही गुजर जाते हैं। ना कोई नयी चीज ना कोई नयी बात। लेकिन आज का दिन हमेशा से कुछ अलग साबित हुआ क्योंकि आगे जो हुआ वो हर रोज से अलग था। आकाश घर को जा रहा था। लगभग अंधेरा हो चुका था। घर से करीब एक किलोमीटर की दूरी पर ये पहुंचा था तभी उसे किसी की आवाज सुनाई दी। कोई मदद के लिए बुला रहा था। सड़क भी सुनसान था, आश-पास कोई दिखाई नहीं दे रहा था। आकाश उस आवाज का पीछा करने लगा। वो वहां जा रुका जहां से कोई आवाज दे रहा था। आवाज सड़क के किनारे लगी एक गाड़ी के पीछे से आ रही थी। पहली बार आकाश का ऐसे दुविधा से पाला पड़ा था। वो कैसे भी कोशिश करके उस गाड़ी के करीब गया। उसने देखा कि एक लड़की के साथ कुछ लोग जबरदस्ती करने की कोशिश कर रहे थे। आकाश ने कैसे भी हिम्मत करके उनमें से एक को पकड़ कर दूर फेंक दिया। बाकी के लोग लड़की को छोड़कर आकाश को देखने लगे। मौका मिलते ही वो लड़की आकर आकाश के पीछे छुप गयी। उस लड़के को दूर फेंकते ही आकाश के पैर कांपने लगे थे। वो डर गया था। जैसे-जैसे आकाश पीछे हटते जा रहा था वैसे-वैसे वो लोग इसके तरफ बढ़ते जा रहे थे। अचानक वे दौड़ते हुए आकाश के पास आ गए। उनमें से एक इसपर झपटा भी लेकिन इस ने उसे उल्टा उसी दिशा में धक्का दे दिया। चारों बहुत गुस्से में थे। इस बार ये लोग एक साथ आकाश पर टूट पड़े। आकाश ने चारों को एक साथ अपने दोनों हाथ फैलाकर रोकने की कोशिश की लेकिन उनमें से एक ने आकाश को पकड़ लिया और दुसरे ने मौका देखते ही उसके चेहरे पर एक मुक्का जड़ दिया। मुक्का लगते ही आकाश निचे गिर पड़ा। सभी लातों से उसे धोने लगे। उनमें से एक उसे छोड़कर उस लड़की की ओर जाने लगा। आकाश ने उसका पैर पकड़ कर उसे अपने ओर खींच लिया। काफी देर तक ये मार खाते रहा लेकिन किसी को उस लड़की के तरफ जाने नहीं दिया। कुछ ही देर में वे लोग भी थक गए और इसकी बहादुरी पर गर्व करने लगे।

उनमें से एक- (अपने साथियों से) छोड़ दो, जाने दो इसे।

दुसरा- पता नहीं किस मिट्टी का बना है ये? अब तक जिनसे भी हमारा पाला पड़ा है वो कभी टीका नहीं, एक तु ही ऐसा मिला है जिसने हमें थका दिया।

इतना कहकर वो बिना रुके चले गए। आकाश दर्द के मारे जमीन पर ही रेंग रहा था। चेहरे पर चोट भी लग गया था। इसे दर्द में देखकर वो लड़की इसके पास आकर बैठ गयी और अपना रुमाल निकाल कर इसका खून साफ करने लगी। दर्द इतना हो रहा था कि आकाश ने उस लड़की की तरफ देखा भी नहीं। वो पुछ रही थी कि, “ज्यादा दर्द तो नहीं हो रहा है?”

आकाश- नहीं दर्द नहीं हो रहा है, मैं ठीक हूँ।

हमेशा की तरह इस ने अपना दर्द उस लड़की से भी छुपाने की कोशिश की। वो खड़ा होकर चलने की कोशिश कर रहा था पर ठीक से खड़ा नहीं हो पा रहा था।

लड़की- चलिए मैं आपको घर छोड़ देती हूँ।

आकाश- नहीं मैं चला जाऊंगा। आपका घर कहां है? चलिए मैं छोड़ देता हूँ।

लड़की- नहीं नहीं मेरा घर यहीं है मैं चली जाऊंगी। मुझे बचाने के लिए शुकिया।

आकाश ने सिर हिलाकर इशारे में कहा “कोई बात नहीं” और मुड़कर घर की ओर चल दिया। कुछ देर तक वो वहीं खड़े रहकर आकाश को देखती रही। कुछ देर बाद वो भी चली

गयी।

आकाश भचकते हुए कैसे भी घर पहुंचा। दर्द तो बहुत हो रहा था लेकिन सच कहें तो उसे मन ही मन मजा भी बहुत आ रहा था। वो इसलिए क्योंकि ऐसा इसके साथ पहले कभी नहीं हुआ था, कभी लडाइ-झगडा नहीं किया था और आज देखो लडा भी और जीता भी। वाकई में इस वारदात से आकाश का मिजाज़ बदला हुआ था। यहाँ से वहाँ उछल कूद भी कर रहा था और खिलखिला कर हंस भी रहा था।

खैर अब उसे काफी देर हो रहा था इसलिए वो खाना बनाने की तैयारी करने लगा। झगडे का भुत भी अब तक सर से उतर चुका। सब सुन सन्नाटा लग रहा था। वो सोच रहा था कि कुछ तो मैं भुल रहा हूँ, क्या भुल रहा हूँ? हाँ याद आया, मैं गाना भुल रहा था। इसमें यही एक अनोखी बात थी कि ये गाना बहोत अच्छा गा लेता है। खास करके ये खाना बनाते वक्त गाना जरूर गाता है। तो उसने अपना पसंदीदा गाना “बातें ये कभी ना तु भुलना” गाना शुरू कर दिया।

काफी देर तक गाना गाते रहा। गाना खत्म होते ही अचानक दरवाजा खटखटाने की आवाज़ आई। वो दरवाजे की तरफ मुड़कर देखने लगा। एक पल के लिए वो ये सोचकर डर गया कि कहीं वो लोग मेरा पीछा करते हुए यहां तक तो नहीं आ गए?

जब उसका ध्यान दरवाजे की कुंडी पर गया तो देखा कि उसने तो दरवाजा भी बंद नहीं किया है। बहोत हिम्मत बांधकर उसने कहा कि, “दरवाजा खुला है”।

दरवाजा खुला। सामने एक लडकी खड़ी थी हाथ में एक बर्तन लिए।

आकाश- ये थोड़ी जानी पहचानी लग रही है। उसने मन ही मन सोचा।

लडकी- अऽ आपके लिए कुछ.. लाइ थी।

लडकी को तो वो पहचान नहीं पा रहा था फिर भी उसने उसे अंदर आने के लिए कहा।

आकाश उसे पहचानने की कोशिश कर रहा था क्योंकि उसे ऐसा लग रहा था कि वो उसे जानता है।

लडकी- क्या हुआ? लगता है आप मुझे इतनी जल्दी भुल गए। अरे मैं वही हूँ जिसे आपने अभी कुछ देर पहले उन बदमाशों से बचाया था।

आकाश- ओह अच्छा तो वो आप थीं , माफ करना सही से आपका चेहरा नहीं देख पाया था।

लडकी- कोई बात नहीं।

आकाश- लेकिन आप तो दुसरे ओर गयी थी ना? फिर यहां कैसे?

लडकी- पहले आप ये पकौड़े तो ले लीजिए इतनी देर से लेकर खड़ी हूँ।

आकाश- ओह हाँ लाओ इसमें दे दो (आकाश ने एक बर्तन उठाते हुए कहा)।

लडकी- काफी देर तक बाहर खडा करा दिया आपने।

आकाश- क्या! आप देर से खड़ी थीं? पर आपने जैसे ही दरवाजा खटखटाया मैंने तुरंत आपको आवाज दिया।

लडकी- हां इसमें आपकी कोई गलती नहीं थी, वो मैं ही खडे होकर आपका गाना सुनने लगी थी।

आकाश- ओह! माफ करना मुझे पता नहीं था।

लडकी- कोई बात नहीं वैसे आप गाना बहुत अच्छा गाते हैं? आपके आवाज में इतनी कशिश थी, इतना सूर और दर्द का संगम था कि मैं वहीं खड़े होकर आपको सुनने लगी।
आकाश- सही कहा आपने। दर्द तो मुझे विरासत में मिला है और शायद इसी के वजह से इतना अच्छा गा लेता हूँ।

लडकी- अच्छा वो कैसे?

आकाश- वो तो मुझे पता नहीं पर अक्सर कुछ लोग कहते रहते हैं कि काश तेरे इतना दर्द हमें भी होता तो हम भी आज तेरे साथ सुर में सुर मिला लेते।

लडकी- “तेरे इतना दर्द” मतलब? आप को किस बात का दर्द है? आप तो खुश दीखते हो।

आकाश- मैं भी तो यही कहता हूँ कि मैं तो खुश हूँ पर लोग मानते ही नहीं।

जब आकाश ने उससे यह बात कही तो वह कुछ देर के लिए खामोश हो गई। उसका चेहरा देख कर ऐसा लग रहा था कि वो भी इस बात को मानती है कि आकाश में सच में वैसी ही बातें हैं जैसा कि लोग उसे कहा करते हैं। सवाल तो उसके मन में बहोत सारे थे, अब वो कोई सवाल करे उससे पहले आकाश ने ही एक सवाल कर दिया, “क्या अब मैं जान सकता हूँ कि आप कौन हैं?”

लडकी- आ हाँ वो मैं वो.... मैं वो लास्ट वाला रूम हूँ ना उसमें जो दादी रहती हैं उन्हीं के साथ मैं यहाँ आयी हूँ। अ मेरा नाम रिया है, वो दादी पकौड़े बनायी थी तो बोलीं कि ये पकौड़े आप को देकर आऊँ।

आकाश- अच्छा दादी गांव से आ गई क्या? दादी तो जब भी कुछ बनाती हैं मेरे लिए जरूर भेजती हैं।

रिया- हाँ, पता है दादी मुझे क्या कह के भेजी हैं? बोलीं हैं कि ये मेरे हीरो को देकर आओ। हा हा हा...

आकाश और रिया एक साथ हंस पड़े।

आकाश- अच्छा चाय बन रहा है पियोगी ना?

रिया- हाँ हाँ बिल्कुल!

चाय बनाकर आकाश ने एक कप चाय रिया को दे दिया और एक कप खुद ले लिया।

रिया चाय का एक सीप मारकर कहती है हुमममममम क्या चाय है।

आकाश के पास उससे पुछने के लिए कुछ नहीं था इसलिए उसके मन में जो आया वो पुछ पड़ा, “तब वापस गांव कब जाना है?”

रिया- ये लो कर लो बात आये एक दिन हुए नहीं कि भगाने का प्लैन बनाने लगे आप, आपको तो मुझे घुमाने-फिराने का प्लैन बनाना चाहिए और आप उल्टा पुछ रहे हो कि “तो फिर घर कब जाना है” क्या यार? अच्छा आप कभी गेट आफ इंडिया या ताज या मरीन लाइंस गये हैं?

आकाश- नहीं तो मैं... कभी नहीं गया।

रिया- फिर तो और अच्छी बात है दोनों अनजाने भुलते-भटकते एक साथ जाएंगे।

आकाश- अरे मरवाना है क्या? मैं नहीं जा सकता।

रिया- क्यों? क्यों नहीं जा सकते आप?

आकाश- क्योंकि....

रिया- क्या क्योंकि बताइये ना क्युं नहीं जा सकते आप?

आकाश-देखो मैं इसलिये नहीं जा सकता क्योंकि मुझे और आप को मिले सिर्फ पंद्रह मिनट ही हुए हैं और हमारी अच्छे से जान-पहचान भी नहीं हुई है, इसलिए हमारा अकेले जाना ठीक नहीं होगा। दूसरी तरफ दादी। उनको पता चला तो मेरे बारे में गलत सोचेंगी।

रिया- नहीं नहीं प्लीज़ चलीये ना! दादी को पता नहीं चलेगा प्लीज़ प्लीज़.....

उसकी गीङगीडाहट और आँखों में आकाश से उम्मीद की चमक, आकाश को अपने वश में कर रही थी। बहुत गीङगीडाने के बाद आकाश मना नहीं कर सका और कह दिया “अच्छा तो ठीक है चलते हैं कल घूमने ताजा।”

रिया- अरे वाह... आ हा तो कल तैयार रहिएगा।

आकाश- हाऽ ठीक है।

वो चली गई। आकाश तो सोच में पड़ गया कि मैं उसके बातों में कैसे उलझ गया? कुछ भी हो जाय पर मुझे हां नहीं कहना चाहिए था, पर अब तो मैंने हामी भर दी है जाना तो पड़ेगा ही। चलो पहले खा पी के सो जाता हूँ इस बारे में कल सोचूंगा। खाना होने के बाद आकाश सोने की कोशिश कर रहा था पर नींद नहीं रही थी। बार-बार एक ही ख्याल मन में आ रहा था कि क्या था ये? अचानक एक लड़की आइ जिससे कभी कोई जान-पहचान नहीं है और थोड़ी ही देर में मुझे साथ घूमने जाने के लिए राजी कर दी। कैसे जाऊंगा मैं कल उसके साथ? कल गैरेज जाना है बहोत सारी गाड़ियां आने वाली हैं सर्विसिंग के लिए और खन्ना अंकल को इस बात की भनक भी लग गयी कि आकाश एक लड़की के साथ घूमने गया है तो क्या होगा? दुनिया भर की दिक्कतें थीं पर जब उसे उसकी गीङगीडाहट याद आयी तो सोचा कि जाने दे यार कल छुट्टी कर लेता हूँ, उसे घुमाने के बहाने मैं भी घुम लूंगा वैसे भी मैं भी कभी गेट आफ इंडिया नहीं गया। चलो अब ज्यादा रात हो गयी है सो जाता हूँ।

अगले दिन सुबह छह बजे उसकी नींद खुली। आकाश आज अपने मर्जी से पहली बार छुट्टी करने वाला था और आज का मौसम भी कुछ बदला-बदला सा लग रहा था। भीगी हुई मिट्टी की हल्की-हल्की खुशबू आ रही थी। बाहर काफी शोर भी हो रहा था। आकाश- इतना शोर क्यों हो रहा है?

बिस्तर से उठकर उसने दरवाजा खोला। बाहर आसमान में चारों तरफ काली घटाएं मंडरा रही थीं, तेज हवा के वजह से पेड़ के पत्ते आपस में टकरा रहे थे। मौसम एकदम ठंडा था बारिश का कोई ठिकाना नहीं कि कब बरस जाये। ऐसे में पड़ोस की औरतें बाहर धुप में सुखाए हुए कपड़े उतार रहीं थीं। तभी आकाश की नज़र रिया पर पड़ी। वो इसे ही देख रही थी और अपनी आंखें मलका रही थी। जब आकाश ने उसे देखा तो याद आया कि आज तो उसे उसके साथ बाहर घूमने जाना है, मतलब आज काम पर नहीं जाना है। आकाश ने वापस दरवाजा बंद कर लिया और सोचा कि चलो डेढ़ दो घंटा और सो लेता हूँ वैसे भी आज काम पर नहीं जाना है। वो जाकर फिर से बिस्तर पर लेट गया। अभी आकाश की आंख लग ही रही थी तब तक कोई दरवाजा खटखटाने लगा।

आकाश- कौन है?

रिया- मैं हूँ रिया।

आकाश- हुमम? इतनी सुबह यह क्यों आयी है? आकाश ने मन ही मन सोचा और फिर कहा, “हां एक मिनट आता हूँ।”

आकाश ने दरवाज़ा खोला और पुछा क्या हुआ?

रिया- अरे आप सो रहे थे क्या?

आकाश- हां मैंने सोचा आज तो छुट्टी है तो थोड़ा देर और सो लेता हूँ। कोई काम था क्या?

रिया- नहीं, बस आपको याद दिलाने आयी थी कि आज हमें जाना है। अ आप मुझे ले जा रहे हैं ना?

आकाश- अरे हाँ बिल्कुल इसमें कोई शक है? अच्छा अंदर तो आओ। चाय पीयोगी?

रिया- अरे बिल्कुल इसमें कोई शक है? पर चाय मैं बनाउंगी। आपके हाथों का चाय तो मैं पी चुकी हूँ अब तुम मेरे हाथों का चाय पीयो।

आकाश- क्या सच में... तुम चाय बनाओगी?

रिया- नहीं बनाऊँ? ठीक है तब नहीं बनाती हूँ कोई बात नहीं।

आकाश- अरे नहीं-नहीं बनाओ ना मैंने कब मना किया? आप बनाओ तब तक मैं भी हाथ मुँह धोकर ताजा हो जाता हूँ।

रिया- हां-हां ठीक है इतनी विनती करते हो तो बना देती हूँ।

आकाश- क्या लड़की है यार सब बातें खुद ही बोले जा रही है बनाउं? जाने दो नहीं बनाती हूँ, ठीक है तुम इतनी विनती करते हो तो बना देती हूँ। इसके आगे तो मेरा कोई बस ही नहीं चल रहा है। देखो तो कैसे हस रही है। हस लो हस लो मेरे भी दिन आयेंगे। आकाश ने मन ही मन सोचा।

हाथ मुँह धोने के बाद वो आराम से सोफे पर बैठ गया। न जाने आकाश के मन में क्या आया वो वहाँ से उठकर किनारे वाले सोफे पर जा बैठा जहाँ से किचन में रिया साफ दिखाई दे रही थी। रिया को किचन में चाय बनाते देखने के बाद आकाश को पता चला कि यहां पर खाना-खजाना की बहोत बड़ी कुक आइ है। मोहतरमा एक हाथ में चम्मच लिए बार-बार चाय निकाल कर चख रही थी फिर शक्कर डाल रही थीं फिर चख रही थीं फिर चायपत्ती डाल रही थी।

आकाश- अच्छा चाय हो गया क्या ?

रिया- हां हां हो गया ये लो।

आकाश- पता है चाय बनाने का ऐसा अंदाज मैंने आज तक नहीं देखा। इस तरह से तो हमारा भट्ट भी चाय नहीं बनाता जैसा की तुम बना रही थी।

रिया- पी के तो देखिये। आपका भट्ट इतना लाजवाब चाय भी नहीं बनाता होगा।

आकाश ने चाय चखा। चाय सच में बहुत लाजवाब था।

आकाश- हुमम... चाय तो अच्छा है।

रिया- कह रही थी ना कि आपका भट्ट इतना अच्छा चाय नहीं बनाता होगा?

आकाश- बिल्कुल सही कहा तुमने।

रिया- अच्छा मैं चलती हूँ। तो कब निकलेंगे घुमने के लिए?

आकाश- अउ बस अभी एक-दो घंटे में निकलते हैं।

रिया- ठीक है तब चलती हूँ। अरे मैं तो भुल ही गयी। वो दादी आप को बुला रही थीं।

आकाश- क्युं कोई काम है क्या?

रिया- मुझे नहीं पता, तुम खुद आ कर पुछ लो।

आकाश- ये आप से मैं तुम कब हो गया?

रिया- अभी।

आकाश- ठीक है थोड़े देर में आता हूं।

रिया- ठीक है आना जरूर, मैं चलती हूं।

कुछ देर बाद आकाश दादी के घर गया।

आकाश- क्या हुआ दादी आपने बुलाया? कोई काम है क्या?

दादी- आकाश! आओ बेटा बैठो। तुमसे एक काम था, करोगे?

आकाश- हाँ दादी बोलिए ना, क्युं नहीं करूंगा?

दादी- बेटा आज रिया का जन्मदिन है और...

आकाश- क्या, आज रिया का जन्मदिन है?

दादी- धिरे बोलो रिया सुन लेगी। मुझे तुमसे यही काम था कि आज रिया का जन्मदिन है और मैं चाहती हूँ कि हम उसे सरप्राइज पार्टी दें। मेरा तो उम्र हो गया है इसलिए मैं तुम्हें बुलाइ हूँ। पार्टी का बंदोबस्त तुम्हें ही करना होगा, करोगे ना?

आकाश- अरे हाँ हाँ दादी बिल्कुल करूंगा।

दादी- वैसे भी कइ सालों से किसी ने उसका जन्मदिन नहीं मनाया।

आकाश- क्यों दादी?

दादी- क्योंकि किसी को उसके खुशी में कोई रुचि नहीं है। सभी को अपनी ही चिंता रहती है। उसके पास सब कुछ तो है घर, गाड़ी, पैसा, जमीन-जायदाद सब कुछ, लेकिन इन सब का इंसान क्या करेगा जब उसके पास दो पल की खुशी ही ना हो?

दादी की बात सुनकर आकाश को इस बात का पता चला कि रिया का हाल भी उसी के जैसा है। मेरे पास परिवार नहीं है तो मैं ऐसा हूँ और उसके पास तो सब कुछ है तब भी वो ऐसी है। ऐसे परिवार के होने का फायदा क्या जो अपनो के बारे में ही ना सोचे? उन लोगो को इसके सुख और दुख से कोई लेना-देना नहीं था, अगर लेना देना था तो सिर्फ पैसों से। अभी आगे भी बातें हो ही रहीं थी तब तक रिया आ गयी। आकाश ने जल्दी से अपने चेहरे का भाव सकारात्मक कर लिया और ऐसा दिखावा करने लगा कि हम कुछ और बातें कर रहे थे।

आकाश- अच्छा दादी आप टेन्शन मत लो काम हो जायेगा।

रिया- किस काम की बात हो रही है?

आकाश- नहीं कुछ नहीं वो दादी के लिए कुछ लाना था। अच्छा दादी फिर मैं चलता हूँ।

दादी- हां बेटा ठीक है पर शाम का याद रहे।

आकाश- हाँ दादी याद रहेगा।

आकाश वहां से बाहर आ गया। पिछे-पिछे रिया भी आयी।

रिया- ओ हीरो रूको तो।

आकाश- बोलो!

रिया- क्या बोल रहीं थीं दादी?

आकाश- यही कि आज तुम्हारा जन्मदिन है।

रिया- अच्छा? लेकिन तुम ऐसे क्यों लग रहे हो?

आकाश- ऐसे क्यों लग रहे हो मतलब?

रिया- अऽ मतलब तुम अंदर गये तो अलग लग रहे थे और अभी ऐसे लग रहे हो जैसे किसी ने तुम्हें कान के नीचे दो-तीन जड दिया हो? हा हा हा।

आकाश- हां हां हंसो-हंसो, मुझपर हंस रही हो ना? ठीक है फिर मैं जाऊंगा ही नहीं घुमने।

रिया- नहीं नहीं नहीं नहीं माफ कर दो अब नहीं हँसूंगी।

आकाश- ठीक है।

अभी आकाश आगे बढ़ा ही था कि वो फिर से इसके सामने आ गयी।

रिया- अच्छा तो कब चलेंगे?

आकाश- बस अभी थोड़ा बाहर जा रहा हूँ, कुछ देर बाद आऊंगा तो चलेंगे, ठीक है।

रिया- ठीक है पर जल्दी आना।

आकाश- हां ठीक है।

आकाश के पास पैसे नहीं थे इसलिए वो गैरेज गया। बंटी बाहर ही काम कर रहा था।

बंटी- और आकाश भईया क्या बात है आज इतना देर हो गए?

आकाश और बंटी चार सालों से एक साथ काम कर रहे हैं। उसे आकाश के तौर-तरीके के बारे में सब पता था शायद इसलिए उसे इसपर पहले से ही हल्का सा शक हो गया था कि कुछ तो बात है जो आज आकाश भईया देर हो गए हैं।

आकाश- लेट नहीं बल्कि आज मैं काम पर ही नहीं हूँ।

बंटी- हा हा मुझे पता था कि कुछ तो बात है चलो अब बताओ कि छुट्टी क्यों किए?

आकाश- बस ऐसे ही किया।

बंटी- मुझे उल्लू मत बनाओ, आपको अच्छी तरह से जानता हूँ। बेवजह की छुट्टी तो नहीं करते हैं आप। बताओ ना क्या बात है?

आकाश- कोई बात नहीं है यार!

बंटी- मैं मान ही नहीं सकता। कोई न कोई बात तो जरूर है।

आकाश- अब क्या बताऊँ यार? बस... एक लड़की है। पड़ोस में दादी रहती हैं ना उन्हीं के यहां आयी है। कल मेरे घर आयी थी पकौड़े लेकर, मुझे नहीं पता था कि वो पकौड़े नहीं मेरे लिए मुसीबत लेके आयी है। क्या पता कैसे बातों-बातों में घुमने जाने की बात करने लगी और मैं मना भी नहीं कर पाया। इसलिए आज छुट्टी करना पड़ा।

बंटी- अच्छा तो कहाँ लेकर जा रहे हो घुमाने?

आकाश- सच कहूँ तो वो मुझे लेकर जा रही है घुमाने मैं नहीं क्योंकि मैं कभी गेट आफ इंडिया गया ही नहीं।

बंटी- हा हा हा अच्छा है भाई तरक्की कर रहे हो।

आकाश- अच्छा चल ये बता खन्ना अंकल आये हैं क्या?

बंटी- हाँ आये हैं क्यों पैसे नहीं हैं?

आकाश- हाँ यार। चल ठीक है मैं उनसे मिल कर आता हूँ।

गजेन्द्र भाइ- और आकाश भइ कैसे हो?

आकाश- ठीक हूँ पाजी।

गजेन्द्र भाइ- आज काम पर नहीं हो क्या?

आकाश- हाँ यार। अच्छा मैं अंकल से मिल कर आता हूँ।

आकाश खन्ना अंकल के आफिस में गया।

खन्ना अंकल- अरे आकाश आओ। क्या बात है आज काम पर नहीं हो?

आकाश- हाँ अंकल आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा था इसलिए नहीं आया।

खन्ना अंकल- क्यों क्या हुआ? तबीयत वगैरह ठीक तो है न?

आकाश- सब ठीक है कुछ नहीं हुआ है। बस ऐसे ही मन नहीं लग कर रहा था आने का इसलिए...

खन्ना अंकल- तो कहीं घूमने क्यों नहीं चले जाते?

आकाश- हाँ मैं भी यही सोच रहा था कि कहीं घूमने चला जाऊँ पर मेरे पास पैसे नहीं थे इसलिए आया हूँ।

खन्ना अंकल ने फौरन जेब से कुछ पैसे निकाल कर आकाश को दे दिए और बोले कि और चाहिए तो बोलना।

आकाश- नहीं अंकल इतने में हो जाएगा। ठीक है तो अब मैं चलता हूँ।

खन्ना अंकल- ठीक है लेकिन सम्भलकर। पता है ना अपने हालत के बारे में?

आकाश- हाँ अंकल पता है। आप चिंता मत कीजिए कुछ नहीं होगा।

इतना कहकर आकाश आफिस से बाहर आ गया। बाहर आते ही गजेन्द्र भाइ बोले, “ओए आकाश कुडी को घुमाने ले जा रहा है क्या?”

आकाश- न नहीं तो गजेन्द्र भाइ...

गजेन्द्र भाइ- ओए चल रहने दे मेरे से मत छुपा। तु आज जो ये कर रहा है न वो मैंने बहोत पहले कर लिया है। अच्छा ये बता तु उसको बस से तो घुमाने नहीं ले जा रहा है न?

आकाश- और कैसे ले जाऊंगा?

गजेन्द्र भाइ- क्या भाइ? साथ में लड़की है थोड़ा शर्म तो कर! कम से कम बस से तो मत ले कर जा।

आकाश- तो कैसे लेकर जाऊँ?

गजेन्द्र भाइ के आंखें ना जाने क्या सोचकर चमचमा रही थीं? आकाश भी तुरंत समझ गया कि ये क्या सोच रहे हैं?

आकाश- नहीं यार पाजी, मैं इसे नहीं चला सकता।

गजेन्द्र भाइ- अरे यार आकाश इससे अच्छा मौका नहीं मिल सकता उसे टेस्ट करने के लिए।

बात हो रही थी हार्ले डेविडसन का फैट बॉब माडल की जिसे हाल ही में आकाश ने कबाड़ से लाकर उसे रिपेयर करके उसके डिजाइन में कुछ बदलाव किए थे। अब वक्त था इसे टेस्ट ड्राइव पर ले जाने का। आकाश को इस बात का अंदाजा भी नहीं था कि आज का दिन उसके लिए इतना रोमांचक होने वाला है। बाइक स्टार्ट करके वो वहां से तुफान की तरह निकल पड़ा। उसके हुरराते साइलेंसर के आवाज से लोगों का ध्यान भटक जा रहा था।

बाइक को सोसायटी के गेट से थोड़ा दूर पर पार्क करके आकाश गेट पर जा खड़ा हो गया ताकि रिया को लगे कि हम बस से जाने वाले हैं और वो अचानक उसे बाइक दिखाकर

सरप्राइज कर सके। आकाश वहीं उसका इन्तज़ार कर रहा था। कुछ देर बाद रिया अपने बाल्कनी में आकर झांकी कि आकाश आया है कि नहीं? आकाश को देखते ही उसने इशारा किया कि वहीं रुको मैं आ रही हूँ। निचे आते ही वो दौड़कर आकाश के पास चली आइ।

रिया- चलो चलो जल्दी! कोइ देख ना ले?

उसे सच में भनक तक नहीं लगा कि आकाश बाइक लेकर आया है इसलिए वो उसकी उंगली पकड़ कर दुसरी ओर ले जा रही थी।

आकाश- अरे वहां कहां?

रिया- तो कहां? रास्ता यहीं से है ना?

आकाश- रास्ता तो यहीं से है लेकिन क्या हम पैदल जाएंगे?

रिया- नहीं, बस से।

आकाश- बस से? फिर तो मैं नहीं जाऊंगा।

रिया- तो किससे जाओगे?

आकाश ने मुस्कराते हुए बाइक के तरफ उंगली दिखाकर कहा “इससे”।

जैसे ही वह बाइक को देखी, दबी आवाज में कहती है, “आकाश? क्या ये... क्या हम इससे जाने वाले हैं? क्या ये तुम्हारी बाइक है?”

आकाश- आऽ हां क्यों अच्छा नहीं है?

वो तो खुशी से चिल्लाने लगी, उसके पांव ज़मीन पर नहीं उतर रहे थे इतना कूद रही थी।

आकाश- अब जल्दी चलो नहीं तो यहीं बारिश हो जायेगी।

रिया- खडुस नहीं तो!

आकाश- क्या?

रिया- कुछ नहीं।

आकाश- ठीक है बैठो।

रिया बाइक पर बैठ गयी।

आकाश-(मन ही मन) क्या बताऊँ मैं, इतना चीपकु लडकी मैंने कभी नहीं देखा था। बाइक पर बैठी नहीं की कमर में हाथ डालकर चिपक गई।

दोनों जैसे-तैसे यहां-वहां पूछते-पुछते मरीन लाइंस पहुंचे। बाइक साइड में पार्क करके दोनों टहलने लगे। नजारा काफी आकर्षित था। हवाओं में पानी की खुशबू आ रही थी, बादल तो वैसे ही तैर रहे थे जैसे सुबह में तैर रहे थे। दोनों अपनी आंखों से समुद्र के लहरों को गिन रहे थे। ऐसे नजारे से परे कुछ और देखने का मन नहीं हो रहा था।

रिया- तुम्हें पता है जितना मजा मुझे यह सब देखकर आ रहा है, उससे कहीं ज्यादा तुम्हारे साथ होकर। आज तक मुझे कोई भी कभी भी कहीं मेरी खुशी के लिए नहीं ले गया, यहां तक की कोई मेरी बात भी नहीं सुनता था। तुमने सुनी मेरी बात और लेके भी आ गये यहां। मुझे लगता है तुम जितना मेरे करीब हो शायद उतना और कोइ नहीं।

आकाश उसे समझ सकता था, वो भले ही बाहर से ऐसी थी पर वो जानता था कि वो कितने तकलीफ में है? आकाश उसे दिलासा भी नहीं दे सकता था कि एक दिन सब ठीक हो जाएगा और सब तुम्हारी बात सुनेंगे क्योंकि वो इंसान जिसे खुद अपने किस्मत पर यकीन नहीं वो किसी और को कैसे यकीन दिला सकता है?

रिया- अच्छा अपने बारे में बताओ ना कुछ!

आकाश- मैं अपने बारे में?

रिया- हाँ नहीं तो क्या मेरे बारे में?

आकाश- अपने बारे में मैं क्या बताऊँ? मैं खुद अपने बारे में कुछ नहीं जानता।

रिया- कुछ नहीं जानते मतलब?

आकाश- समझ लो कि मैं एक ही जन्म में दूसरी जिन्दगी जी रहा हूँ। मेरी यह जो जिंदगी है ये सिर्फ छह साल पहले ही शुरू हुई है, इसके पहले मैं कौन था, कैसा था, मेरे माता-पिता कौन थे कुछ नहीं पता। जब मेरी आंख खुली तो मेरे आसपास ऐसा कोई नहीं था जो मुझे पहचानता हो। सब अनजाने से लग रहे थे, मैं किसी को पहचान नहीं पा रहा था। डाक्टर ने कहा कि मुझे हिस्टेरिकल एमनेशिया हुआ है। सर पर गहरी चोट लगने के वजह से सब कुछ भूल जाने की बिमारी। यहाँ तक कि मैं अपना चेहरा देखकर भी खुद को नहीं पहचान पा रहा था। ऐसे में वहाँ सिर्फ एक ही शख्स मौजूद था जिसने मेरा साथ दिया, जिसने मुझे नदी से निकाल कर अस्पताल ले गया और फिर मुझे अपने साथ रखा 'खन्ना अंकल'। उन्हें मेरी कोई ऐसी चीज नहीं मिली जिससे मेरी पहचान हो सके। उन्होंने ही मेरा नाम आकाश रखा। बस तबसे मैं इसी पहचान के साथ मैं जी रहा हूँ।

रिया- क्या आपने कभी जानने की कोशिश नहीं की? अपने अतीत के बारे में जानने की?

आकाश- नहीं की, क्योंकि अंकल समझाते थे कि कुछ बातें भूल जाना ही सही होता है। क्या पता तुम्हें तुम्हारे अतीत में कुछ चीजें ऐसी भी मिल जाए जिसका सामना तुम नहीं कर पाओ, क्या पता कुछ लोग ऐसे भी मिल जाए जो तुम्हारे दुश्मन हो? तो तुम्हें जो यह नयी जिंदगी भी मिली है यह भी गवां बैठोगे। थोड़े दिनों तक मैं परेशान था पर धीरे-धीरे मेरा मन लगने लगा, काम करने लगा बहोत कुछ सीख भी गया। यहाँ अच्छा लगने लगा। कभी-कभी अंकल ये भी कहते थे कि तुम यहाँ घुल मिल गए हो इसका मतलब ये भी नहीं की तुम अपने आप को पूरी तरह से भुला दो, यह सवाल अपने मन में रखो कि तुम कौन हो? तुम ऐसा क्यों हो? और बाकी सब समय पर छोड़ दो। समय सबसे ज्यादा ताकतवर होता है और जिस दिन वो तुम्हारे साथ होगा उस दिन तुम्हें तुम्हारे सारे सवालों का जवाब मिल जाएगा।

इसलिए रिया मैं तुमसे कह रहा हूँ कि आज जो तुम्हारी नहीं सुनता वो एक दिन तुम्हारी ज़रूर सुनेगा, तुम्हें प्यार करेगा।

आकाश की बातों से रिया भावुक हो चुकी थी। अपनी भावुकता छुपाने के लिए उसने बात को घुमा दिया।

रिया- अच्छा हम क्या यहीं बैठे-बैठे बातें ही करेंगे कि कहीं और भी जायेंगे?

आकाश- हाँ हाँ बिल्कुल जायेंगे।

दोनों वहाँ से गेट ऑफ इंडिया गये। वे नहीं जानते थे कि वे वहाँ जाकर कुछ ऐसा करेंगे कि वो पल वो मौसम वो जगह इनके लिए इतना यादगार हो जायेगा कि वे कभी एक-दूसरे को नहीं भूल पाएंगे।

जैसे ही ये दोनों वहाँ पहुंचे बादल बरस पड़े। सब कोई यहाँ वहाँ छुपने लगे। ये भी एक पेड़ के निचे छुप गये। पता नहीं रिया के दिमाग में क्या चल रहा था, वो चुप थी।

आकाश- क्या हुआ? क्या सोच रही हो?

रिया- कुछ नहीं मुझे लगता है कि हम भी इन लोगो जैसे ही हैं जो यहाँ आकर चार पांच फोटो लेंगे और फिर एक-दो वडापाव खाकर चले जाएंगे।

आकाश- अच्छा? तो क्या करना चाहिए?

रिया- कुछ अलग जिससे लगे कि हम इनसे अलग हैं!

आकाश- मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि तुम क्या कह रही हो?

रिया- चलो ना डांस करते हैं।

आकाश- क्या डांस?

रिया- हाँ डांस।

आकाश- लेकिन मुझे नहीं आता।

रिया- मैं कह रही थी न कि हम भी इन्हीं के जैसे हैं?

आकाश- अच्छा ठीक है गुस्सा क्यों हो रही हो? लेकिन बिना गाना बिना म्यू..जीक के कैसे?

रिया- आप हो ना चलते फिरते डी.जे वाले।

आप गाना और साथ में डांस भी करना।

आकाश- अच्छा वो सब तो ठीक है पर डांस कैसे करूंगा? मुझे तो डांस आता ही नहीं है।

रिया- कोई बात नहीं। मैं जैसे-जैसे इशारे दूंगी तुम वैसे-वैसे उत्तर देना।

आकाश- अऽ ठीक है तुम कहती हो तो।

रिया- शुरुआत करो।

आकाश पेड के निचे से खुले में आ गया। पहले तो डरा हुआ था पर जैसे वो बारिश में भीगने लगा उसका मिजाज बनने लगा। रिया अभी भी पेड के नीचे ही छुपी हुई थी। आकाश ने अपना हाथ रिया के तरफ बढ़ाया। वो शर्म से अपने दोनो हाथों से अपने चेहरे को छुपा रही थी। आकाश को ऐसा करने के लिए उसी ने कहा था इसलिए वो अपने शर्म को भुलाकर आकाश के तरफ बढ़ने लगी। आकाश गुनगुनाने लगा और ठीक गुनगुनाने के साथ-साथ उसका हाथ पकड़कर, उसे अपने तरफ खींच कर, उसके कमर में हाथ डालकर उसे झुका कर उसके रूबरू होकर उसके साथ डांस करने लगा। सबकी नज़र इनके तरफ आकर्षित हो गई। माहौल गरम सा हो गया। लोग विडियो करने लगे, सीटी मारने लगे, चारों तरफ शोर होने लगा। ये तो नाचने में इतने लीन हो गए थे कि अब कोई देखे, कहे या सुने इसकी परवाह ही नहीं थी। जैसे आकाश ने अपना गाना बंद किया और रूका वैसे ही रिया उसके सीने से चीपक गयी। कुछ देर तक चिपकी रही। पता नहीं वो क्या कर रही थी? शायद उसे आज अच्छा लग रहा था? आकाश का भी यही मकसद था कि वो आज उसके जन्मदिन पर उसे खुश कर सके।

आकाश- तो अब चले?

वो जल्दी से आकाश से अलग हो गई। अपने हाथों से अपने आंखों को मसल रही थी, शायद रो रही थी? आकाश को समझ में नहीं आया कि वो रो क्यों रही थी? यह तो इसने उसे खुश होने के लिए किया था ना?

रिया- हां चलो चलते हैं।

2

प्यार की शुरुआत

दोनों घर के लिए लौट गए। घर आते-आते शाम के सात बज गये थे क्योंकि कड़ और भी जगह ये घुमते हुए आए। जब ये घर पहुंचे तब आकाश को एक बात याद आई। वो सहमे-सहमे से रिया के साथ उसके घर की ओर चलने लगा फिर खुद उसके द्वार पर खड़ा होकर रिया को अंदर भेज दिया।

जैसे रिया घर में गई वो एकदम से चौंक गई। अचानक घर में कई सारी मोमबत्तियां जलने लगीं और बहोत से लोग हैप्पी बर्थडे कहकर तालियाँ बजाने लगे। आकाश को यहां आने के बाद यही बात याद आई थी कि उसने बंटी से जो जन्मदिन की तैयारी करने के लिए कहा था वो उसने किया होगा कि नहीं? अब ये देखकर आकाश का मन हल्का हुआ कि उसने जो बंटी से कहा था वो उसने कर दिया। तभी दादी आईं।

दादी-(आकाश से) मैं तो सोच रही थी कि तुम रिया के साथ घूमने जा रहे हो तो यह सब कैसे करोगे पर तुम तो होशियार निकले। आखिर तुमने सब व्यवस्था कर ही दिया।

आकाश- तुमने दादी को बताया था कि हम बाहर जा रहे हैं? आकाश ने रिया के कान में फुसफुसाते हुए कहा।

रिया- नहीं तो क्या मैं बिना बताए इतने देर तक बाहर रह सकती थी क्या? और यही है ना वो सुबह वाली बात जो तुम कह रहे थे कि “हां हां दादी काम हो जाएगा”?

आकाश- आऽऽ हां।

यहाँ कोई एक दुसरे से कम नहीं था। आकाश ने रिया से बर्थडे पार्टी वाली बात छुपाई, तो रिया ने भी आकाश से यह बात छुपाई कि दादी को पता है कि हम एक साथ घूमने जा रहे हैं। सोचकर दोनों जन हलके से मुस्कुरा दीए। केक कटने की अभी तैयारी हो रही थी। आकाश, बंटी और बर्थडे में आए लोगों के साथ बातचीत कर रहा था। वो बात करने में इतना खोया हुआ था कि उसने रिया की तरफ ध्यान ही नहीं दिया। न जाने कितने देर से वो इसे बड़े ध्यान से देख रही थी? आकाश का ध्यान तो इन लोगों के तरफ था लेकिन उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि वो मुझे देख रही है, क्या पता कैसे पर कुछ हल्के हवा उसे महसूस हो रहे थे, उसमें एक अजीब सी खुशबू थी, उसे ऐसा आहट मिल रहा था। अपनी संकोच दूर करने के लिए आकाश ने जब मुड़कर देखा तो वो सच में इसे ही देख रही थी। जिस रिया को ये अब तक देख रहा था यह उससे अलग लग रही थी। आकाश उससे नजर नहीं हटा पा रहा था और उसकी नज़रें भी इससे हटने का नाम ही नहीं ले रही थीं।

इसने इशारे में पुछा क्या हुआ?

“कुछ नहीं ज़रा यहां आओ ना!” उसने भी इशारे में जवाब दिया।

आकाश उसके पास गया।

रिया- केक कटने जा रहा है और तुम वहां क्या कर रहे हो?

आकाश- अ कुछ नहीं बस ऐसे ही बातें कर रहे थे।

रिया- तब कल तो तुम झूटी जाओगे?

आकाश- हाँ कल तो झूटी जाना है।

इतना कहकर दोनों कुछ देर के लिए चुप हो गए। आकाश को अचानक कुछ ठंड जैसा लगने लगा और ये दोनो हाथ जेब में डालकर हल्का सा कांपने लगा।

आकाश- यार ये केक कब कटेगा?

रिया- क्या बात है घर जाने की इतनी जल्दी है?

आकाश- हाँ अभी तो खाना भी बनाना है और पता नहीं क्यों तबियत भी ठीक नहीं लग रहा है।

रिया आकाश के गले पर हाथ रखकर उसका बुखार मापने लगी।

रिया- तुम्हारा शरीर तो गर्म है। लगता है भिगने के वजह से तुम्हें बुखार लग रहा है। तुम एक काम करो आज यहीं खाना खा लो और दवा भी है ले लेना।

आकाश को भी मन नहीं था बनाने का इस लिए उसने हाँ कर दिया।

केक कटने का समय हो गया। रिया अपने छब्बीस वे वर्ष की मोमबत्ती को फूंक मारकर बुझा दी और केक काटकर पहला टुकड़ा आकाश को खिलाया। उसने भी एक केक का टुकड़ा काटकर उसे खिला दिया। बाकी का केक काटकर सभी लोगों में बांट दिया गया। बर्थडे का कार्यक्रम समाप्त हुआ। सब केक और कोल्ड ड्रिंक पीकर अपने-अपने घर चले गये।

बंटी- तब चलो भइया, कल मिलते हैं।

आकाश- सब बंदोबस्त करने के लिए शुक्रिया यार।

बंटी- क्या भइया आप भी? चलीये मैं चलता हूँ।

आकाश- हाँ ठीक है।

पता नहीं क्यों लेकिन अब आकाश का खाना खाने का जरा सा भी दिल नहीं कर रहा था।

पूरा शरीर गरम सा लग रहा था और सर दर्द भी करने लगा था। वो रिया के पास गया।

आकाश- अ रिया मैं भी चलता हूँ।

रिया- हाँ चले जाना लेकिन पहले खाना तो खा लो!

आकाश- नहीं मैं खाना नहीं खा पाउंगा पेट भरा लग रहा है। वैसे भी ये बुखार और सर दर्द से परेशान हूँ।

रिया- रूको मैं दवा लेकर आती हूँ।

आकाश- नहीं-नहीं रहने दो छोटा-मोटा बुखार है अपने आप सही हो जाएगा।

रिया- लेकिन?

आकाश- गुड नाइट ।

रिया- हाऽ गुड नाइट ।

आकाश अपने रुम में चला आया। अंदर से कुंडी लॉक करके जैसे ही उसने अपना

पहला कदम आगे बढ़ाया अचानक उसके पैर के नीचे से झनझनाहट शुरू हुई और तेजी से उपर की ओर बढ़ने लगी। जैसे झनझनाहट उसके सर तक पहुंची आकाश ने होश खो दिया और वहीं निचे गिर गया।

आकाश एक गहरी नींद में था। चारो तरफ अंधेरा ही अंधेरा दिखाई दे रहा था। वो अन्तरिक्ष में तैर रहा था। अचानक उस अंधेरे में उसके सामने कइ सारे दृश्य दिखाई देने लगे ठीक एक पन्ने की तरह। ये किसी भी दृश्य को सही से नहीं देख पा रहा था। कइ सारे चेहरे उसके सामने से गुजर रहे थे लेकिन आकाश किसी को पहचान नहीं पा रहा था क्योंकि सब परछाई की तरह दिखाई दे रहे थे। अचानक उसे उनमें एक चेहरा दिखाई दिया जो केवल एक मात्र वही साफ दिखाई दे रहा था, जो थोडा बहोत शायद रिया से मिल रहा था। उसने जैसे ही उसे ध्यान से देखने की कोशिश की वो अन्तरिक्ष से गायब हो गया और एक सुनसान सड़क पर आ गया। वो लडकी जो दिखने में रिया जैसी थी इसके सामने खड़ी थी। आकाश उसका चेहरा नहीं देख पा रहा था क्योंकि वो लडकी पीछे की तरफ घुमी हुई थी और इससे कुछ कह रही थी, “अर्जुन, मेरे लिए यह सब जरूरी नहीं है, अगर कुछ जरूरी है तो वो है तुम्हें चाहना।”

रिया बस इतना ही कहकर चली गयी। उसके जाने के बाद आकाश का ध्यान अपने आप पर आया। वो खुद को निहारने लगा, उसे यकीन नहीं हो रहा था कि ये वो ही है। वो बिल्कुल अलग दिख रहा था। यहां तक कि उसके बाल झारने का तरीका, उसका पहनावा। वो सोचने लगा कि ऐसा कैसे हो सकता है? कहीं मैं सपने में तो नहीं हूं? जब आकाश को ऐसा महसूस हुआ कि ये सपने जैसा लग रहा है तभी उसे एक जोर का झटका लगा जैसे मानो कि किसी ने उसके सर में बिजली का तार सटा दिया हो। झटका लगते ही वो होश में आया गया। सुबह हो चुकी थी। सुरज की रौशनी उसके आँखों को खुलने नहीं दे रही थी। उसके सर में जोर का दर्द हो रहा था इसलिए वो वैसे ही निचे लेटा हुआ था। थोड़ी देर बाद बहुत हिम्मत करके वो उठा। काम के लिए उसे पहले से ही देर हो चुका था। जल्दी से तैयार होकर वो गैरेज के लिए निकल गया। रास्ते भर वो इस अजीब से सपने के बारे में सोचते रहा। “ऐसा सपना तो मैंने आज तक नहीं देखा था लेकिन एक बात समझ में नहीं आ रहा है कि मुझे चक्कर क्यों आया? कल मेरी तबीयत भी खराब थी हो सकता है इसलिये चक्कर आया होगा?” खुद से सवाल जवाब करते-करते वो गैरेज पहुंचा। बंटी बाहर ही काम कर रहा था लेकिन आकाश ने उस पर ध्यान नहीं दिया और जाकर चुपचाप अपने काम पर लग गया। बंटी को आज आकाश का बर्ताव कुछ बदला हुआ लगा। वो सोच रहा था कि आकाश भईया जब भी उससे मिलते हैं तो हाल-चाल पुछ ही लेते हैं या सुबह का प्रणाम कर ही लेते हैं पर आज इन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया और किसी सोच में खोए हुए भी लग रहे हैं। क्या बात होगी? बंटी से रहा नहीं गया और वो आकाश से पुछ बैठा।
बंटी- और आकाश भईया! क्या बात है आज थोडे बदले से लग रहे हो? और ये आपके सर पर चोट कैसी है?

आकाश- चोट?

उसने अपने सर पर हाथ लगाकर देखा। रात चकराकर गिरने की वजह से उसके सर पर चोट लगी थी।

आकाश- कुछ नहीं यार थोड़ी तबीयत सही नहीं है।

बंटी- तबीयत सही नहीं है? दवा लिये कि नहीं?

आकाश- नहीं यार... थोड़ा सा तो बुखार है उतर जाएगा।

बंटी- पर ये सिर पर चोट कैसे लगा?

आकाश- वो कल शाम को जब मैं रिया के बर्थडे से लौटकर जब अपने घर गया तभी मुझे पता नहीं कैसे चक्कर आया और मैं गिर गया। मुझे हैरानी इस बात से हो रही है बंटी कि मुझे ऐसे सपने दिखाइ दे रहे थे जो पहले मैंने कभी नहीं देखे। अजीबोगरीब सपने।

बंटी- क्या?

आकाश- बहोत सारे चेहरे, मैं था और एक और लड़की थी जो रिया के जैसे दिख रही थी। मुझे अर्जुन कहकर बुला रही थी और मैं लग ही नहीं रहा था कि ये मैं हूँ। बिल्कुल अलग दिख रहा था मैं।

बंटी- वो तो तुम रोज अलग दिखते हो। इसमें अलग क्या है?

आकाश- लेकिन मैं जैसा हूँ वैसा नहीं दिख रहा था, मेरे अन्दाज अलग थे, मेरा पहनावा, मेरा सारा हुलिया अलग था।

बंटी- ऐसा होता है, तबीयत खराब होती है तो ऐसी अजीबोगरीब सपने दिखाई देते हैं।

आकाश- क्या तुझे भी दिखाई देते हैं ऐसे सपने जब तेरा तबीयत खराब होती है?

आकाश के सवाल से उसके मुँह पर कुछ देर के लिए ताला लग गया पर थोड़ा सा रूक कर फिर उसने जवाब दिया।

बंटी- नहीं, मुझे नहीं दिखाई देते ऐसे सपने

और आपको इस लिए दिखाइ दे रहे हैं क्योंकि आजकल आप कुछ ज्यादा ही रिया के बारे में सोच रहे हैं। अब ये सब छोड़ो और काम पर ध्यान दो तो हो सकता है थोड़ा आराम मिले? उसने अपना सर बाँधे से दाँएँ किया और फिर मुड़कर चला गया। उससे इस बारे में बात करके आकाश को लगा कि शायद वो सही ही कह रहा है। मैं आजकल कुछ ज्यादा ही रिया के बारे में सोच रहा हूँ। वो निश्चित हो गया और फिर अपने काम में लग गया। काम करते-करते कब लंच हो गया पता भी नहीं चला। आज सुबह आकाश टिफिन लेकर नहीं आया था। लाता भी कैसे इतनी देर से जो उठा। भुख तो उसे लगी ही थी। बंटी और गजेन्द्र पाजी लंच करने बैठ गए। आकाश जाकर वहीं किनारे लेट गया।

गजेन्द्र पाजी- अरे आकाश क्या हुआ टिफिन नहीं लाया क्या?

आकाश- नहीं पाजी। आज देर हो गया इसलिए नहीं बना पाया।

बंटी- आकाश भईया एक बात कहता हूँ बुरा मत मानना। आप ना अब शादी कर लो।

भाभी आ जाएंगी तो खाना नहीं बनाना पड़ेगा।

गजेन्द्र पाजी- अरे ये सब छोड़ो। आकाश, आ जाओ हम लोगों में खालो।

आकाश- अरे नहीं-नहीं गजेन्द्र पाजी आप खाइए वैसी भी आज भुख नहीं लगी है।

आकाश अपनी आँखें बंद करके वहीं लेट गया। लेटे ही लेट पता नहीं क्यों उसे एक अजीब सी आहट मिल रही थी। ठीक वैसे ही जैसे कल रात वो बंटी और बाकी लोगों से बात कर रहा था और इसे इस बात का आहट हो रही थी जैसे कि रिया इसे देख रही है। ठीक वैसी ही आहट इस समय आकाश हो रही थी। वो उठ गया और धीरे-धीरे गैरेज से बाहर आया।

बाहर आकार उसने देखा सामने से रिया आ रही थी हाथ में एक थैला झुलाते हुए। पहले तो उसे देखकर आकाश सोच में पड़ गया कि ये यहाँ कैसे? फिर वो ज़ोर से हंस पड़ा। रिया ने दूर से ही उसे हंसते हुए देख लिया। जब वो पास आ गई...

रिया- क्यों हंस रहे थे?

आकाश- तुम ऐसे आ रही थी जैसे मानो कोई बच्चा झूमते, गुनगुनाते आ रहा है। यही देख के मैं हंस पड़ा।

रिया- ओह तो इस लिए हंस रहे थे! ये... सर पर चोट कैसी?

आकाश- वो काम करते-करते लग गया।

रिया- काम करते-करते?

रिया कुछ देर तक आकाश को घूर कर देखती रही।

रिया- चलो ये लो टिफिन तुम्हारे लिए लाइ हूँ।

आकाश- मेरे लिए?

रिया- हाँ क्यों नहीं चाहिए? चलो कोई बात नहीं, नहीं चाहिए तो।

आकाश- मैंने तो ऐसा नहीं कहा कि नहीं चाहिए।

रिया- इसका मतलब चाहिए?

आकाश- हाँ चाहिए पर ये बताओ तुम्हें कैसे पता चला कि मैं टिफिन लेकर नहीं आया हूँ?

रिया- पता कैसे नहीं चलेगा? जितना ध्यान मेरा अपने ऊपर नहीं रहता उससे ज्यादा तुम पर रहता है। सुबह में जब झूटी के लिए घर से निकले थे तो खाली हाथ थे। इसलिए मैं सोची कि तुम्हें टीफिन दे आती हूँ।

आकाश- तुम्हें कैसे पता चला कि मैं यहाँ काम करता हूँ?

रिया- दादी ने बताया। यह लो खा लेना। मैं चलती हूँ।

आकाश- इतने गुस्से में क्यों हो?

रिया- हाँ तो क्या करूँ?

आकाश- रूको अपने भट्ट का चाय पिलाता हूँ।

रिया- नहीं नहीं मुझे नहीं पीना तुम्हारे भट्ट की चाय। तुम ही पियो। मैं चलती हूँ।

आकाश- सुनो! धन्यवाद!

रिया- उसकी कोई जरूरत नहीं। अच्छा ये बताओ शाम को कब तक आओगे?

आकाश- अऽ आठ बजे तक। क्यों कोई काम है?

रिया- नहीं बस ऐसे ही पुछ रही थी। ठीक है तब चलती हूँ।

आकाश- ठीक है।

वो पलट कर चली गयी। उसका बार-बार इसके करीब आना, उसके दिल में इसके लिए इतनी हमदर्दी जताना, न चाहते हुए भी आकाश को मजबूर कर रही थी उसके बारे में सोचने पर। आकाश उसके तरफ खींचा चला जा रहा था। जिस तरह वो इसे पलट कर देख रही थी वैसे ही ये भी उसे देखे जा रहा था। वो इसके लिए इतना लजीज़ हो गयी थी कि ये उससे नज़रें हटाने का हिम्मत भी नहीं जुटा पा रहा था। सड़क का मुड़ाव आया और वो चली गयी। आकाश वापस गैरेज के तरफ मुड़ा। सामने बंटी और गजेन्द्र पाजी दोनों हाथ बांध कर भौचक्के हुए खड़े थे। आकाश उनसे किनारे होकर टिफिन अंदर ले गया और खाने

बैठ गया। खाना बड़ा ही स्वादिष्ट था। ऐसा लगा जैसे जिंदगी में पहली बार इसने घर का खाना खाया है। लंच टाइम खत्म हुआ सब लोग काम पर लग गये, पर अब आकाश का मन काम में नहीं लग रहा था। बिल्कुल नहीं। उसके बस हाथ ही चल रहे थे दिमाग नहीं। कुछ देर बाद खन्ना अंकल आ गये। देर तक गैरेज में घुमकर उन्होंने काम का जायजा लिया और फिर आफिस में चले गए। तकरीबन दस मिनट तक वे यहाँ पर थे पर आकाश ने उनपर जरा सा भी ध्यान नहीं दिया। वो कहीं और खोया हुआ था। आफिस में जाने के कुछ देर बाद उन्होंने बंटी को बुलाया। बंटी ऑफिस में गया।

खन्ना अंकल- आओ बैठो।

बंटी सहमे हुए से कुर्सी पर बैठ गया।

खन्ना अंकल- तुमसे कुछ पूछना था।

बंटी- हाँ पुछिए।

खन्ना अंकल- क्या बात है आकाश आज इतना गुमसुम क्यों लग रहा है? तुमसे बात किया या नहीं?

बंटी- हाँ बात तो किया था। वो क्या है कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है इसलिए वो ऐसा लग रहा है।

खन्ना अंकल- क्या हुआ है?

बंटी- उसे बुखार है और....

इतना कहकर बंटी रुक गया और सोचने लगा कि आकाश के सपने के बारे में बता दूँ या नहीं?

खन्ना अंकल- और? और क्या?

बंटी- और उसे चक्कर भी आया था।

खन्ना अंकल- चक्कर? पर ऐसे कैसे?

बंटी- पता नहीं।

खन्ना अंकल- अभी कैसा है?

बंटी- सुबह में थोड़ा बुखार था पर अभी लगभग ठीक है।

खन्ना अंकल- दवा वगैरह लिया कि नहीं?

बंटी- नहीं कह रहा था कि थोड़ा सा बुखार है अपने आप ठीक हो जाएगा।

खन्ना अंकल- अच्छा।

बंटी- एक... और बात... कहना था।

खन्ना अंकल- हाँ बोलो।

बंटी- आज कल वो अजीबोगरीब बातें करता है। अजीब से सपने देखता है। कल जब उसे चक्कर आया था और वो बेहोश था तब उसने एक सपना देखा था जिसमें उसे एक लडकी अर्जुन कहकर बुला रही थी और वो दिखने में रिया के जैसी लग रही थी।

खन्ना अंकल- रिया? रिया कौन है?

बंटी- रिया उसके पडोस में रहती है।

खन्ना अंकल- हममम तब उसके बाद?

बंटी- आकाश भईया ने रिया को उन्हें अर्जुन नाम से बुलाते हुए देखा और कह रहे थे कि

उनका अंदाज, पहनावा सब कुछ अलग था ऐसा लग रहा था कि वो आकाश है ही नहीं। वो खुद मुझे कह रहे थे कि उन्होंने अपने आप को इस तरह कभी नहीं देखा। जब वो यह सब बातें मुझे बता रहे थे मुझे वो खुद वैसा ही दिख रहे थे जैसा उन्होंने अपने आप को सपने में देखा। उनके आंखों का रंग भी बदला हुआ था। ऐसा खुद मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। मैं डर गया था मुझे कुछ सुझ नहीं रहा था कि मैं क्या करूं। मैंने कहा बुरा सपना समझ कर भूल जाओ। तबसे उन्होंने उस बारे में कोई बात नहीं की।

खन्ना अंकल- क्या तुमने रिया को देखा है?

बंटी- हाँ कल उसका बर्थडे था तो मैं भी गया था। आज भी गैरेज आइ थी आकाश भईया के लिए टिफिन लेकर।

खन्ना अंकल- टिफिन लेकर?

बंटी- हाँ।

खन्ना अंकल- हा हा हा। लगता है दोनो एक दुसरे को पसंद करते हैं?

बंटी- अऽ लगता तो ऐसा ही है।

खन्ना अंकल- ठीक है तुम अब जा सकते हो।

बंटी- ठीक है।

खन्ना अंकल- और सुनो उससे इस बारे में कुछ मत कहना।

बंटी- हाँ ठीक है।

बंटी आफिस से निकल कर निचे चला आया। आकाश जानना चाहता था कि इन लोगों में क्या बातें हुई इस लिए उसने बंटी को अपने पास बुलाया।

आकाश- ए बंटी इधर आना!

बंटी- बोलो ना?

आकाश- क्या हुआ आफिस में क्यों बुलाये थे?

बंटी- नहीं बस ऐसे ही कुछ काम था।

आकाश- अच्छा।

बंटी- क्युं क्या हुआ?

आकाश- नहीं ऐसे ही पुछ लिया क्योंकि आते ही उन्होंने आफिस में बुला लिया ना इसलिए।

बंटी- नहीं बस ऐसे ही बुलाया था उन्होंने।

आकाश- ठीक है।

शाम का वक्त हो गया। आठ बजते ही सभी लोगों की छुट्टी हो गयी। आकाश आज जल्दी में था इसलिए वो सबसे पहले ही तैयार हो गया था।

बंटी- क्या बात है भाई लगता है जल्दी में हो?

आकाश- हाँ यार आज जरा जल्दी में हूँ क्योंकि कोइ मेरा इंतजार कर रहा है।

बंटी- चलो कोई तो मिला जो आपका इंतजार कर रहा है लेकिन देखना थोडा संभलकर क्योंकि आम का फुल निखरता है तो साथ में तुफान भी लाता है।

आकाश- हा हा हा लगता है तुझे जलन हो रही है?

बंटी- नहीं भाइ बस फीक्र है।

आकाश- क्या बात है आजकल बड़ा शायराना लाइन मार रहा है? चिंता मत कर ऐसे तुफानों में ही मैं अपनी जिंदगी की नाव खेवते आया हूँ इतनी आसानी से डूबने वाला नहीं।
बंटी- चलो ठीक है। पहले उपर जाओ सेठ ने आपको आफिस में बुलाया है।

आकाश- मुझे?

बंटी- हाँ!

आकाश- क्यों?

बंटी- अब वो तो उन्हें ही पता होगा।

आकाश- ठीक है मैं मिल के आता हूँ।

वो खन्ना अंकल के आफिस में गया।

आकाश- बुलाया आपने?

खन्ना अंकल- हाँ आओ बैठो। क्या बात है तबीयत ठीक नहीं है क्या?

आकाश- हाँ वो थोड़ा सा बुखार है। पर आपको किसने बताया?

खन्ना अंकल- बंटी ने बताया कि तुम्हारी तबीयत सही नहीं है। तुम कल छुट्टी क्यों नहीं ले लेते?

आकाश- कल ही तो लिया था छुट्टी।

खन्ना अंकल- कल भी ले लो और एक बार अपना चेकअप करवा लो।

आकाश- पर काम...

खन्ना अंकल- काम का छोड़ो वो हो जायेगा। मैंने डाक्टर सक्सेना से बात कर लिया है।

तुम्हें कल मेरे साथ चलना होगा ठीक है? घर पर बैठने से कुछ ठीक नहीं होगा। कल जब मैं फोन करूंगा तब आ जाना।

आकाश- ठीक है। अब जाऊँ?

खन्ना अंकल- हाँ जा सकते हो।

आकाश बाइक लेकर वहाँ से घर को निकल गया। रात हो गई थी सड़क सुनसान था, बर्फीले चांद के वजह से हवाएं ठंडी होकर बह रही थीं। ऐसे में बाइक चलाने में बहोत मजा आ रहा था, इस मजे में और चार चांद लग जाते अगर पिछे का सीट खाली नहीं रहता, अगर उसपर रिया बैठी होती। चलो मजबूरी का नाम रिया। फिलहाल तो इस कुदरत के ठंडे हवे से ही काम चला लेते हैं। आकाश ऐसे ख्यालों के सड़क बांधते हुए घर पहुंचा। देखा रिया गेट पर ही खड़ी थी, उसे देख कर आकाश को उसके आठ बजे घर आने की बात याद आई।

आकाश- अरे रिया क्या बात है तुम यहां?

रिया-(आंख तरेर कर) तुम्हारे आठ बज गये कि अभी नहीं?

आकाश- अभी कहां यार अभी तो साढ़े नौ हो रहे हैं आठ बजने में तो अभी साढ़े दस घंटे और बाकी है, है ना?

रिया- हो गया?

आकाश- अरे सॉरी यार देर हो गया लेकिन ये बताओ तुम यहाँ क्यों खड़ी हो?

रिया- बस ऐसे ही खड़ी हूँ तुम्हारा इंतजार कर रही थी। तुम रहते हो तो थोड़ा अच्छा लगता है।

आकाश- अच्छा! क्यों अच्छा लगता है?

रिया- क्योंकि जब मैं तुम्हारे साथ रहती हूँ तो अपने आप को महफूज महसूस करती हूँ इसलिए तुम्हारे साथ रहने में अच्छा लगता है।

आकाश- अच्छा ये सब छोड़ो। चलो ये बताओ इस समय अगर तुम मेरे साथ रहोगी, चाहे जहाँ, तब तुम कैसा महसूस करोगी?

रिया- अगर इस समय मैं तुम्हारे साथ रहूँगी चाहे जहाँ तो अपने आप को आजाद महसूस करूँगी और मुझमें किसी बात का डर नहीं होगा।

आकाश- तो ठीक है थोड़ी देर यही रूको मैं अभी आता हूँ।

रिया- पर कहा जा रहे हो?

आकाश- तैयार होने।

रिया- तैयार होने, पर क्यों?

आकाश- क्योंकि हम निडर हैं और अब हम आजाद परिंदों की तरह उड़ने जा रहे हैं।

आकाश की बात सुनकर वो मुस्कुरा दी और बोली, “तुम्हें समझना मुश्किल है कभी डरते हो तो कभी खुद इकरार करते हो”।

आकाश ने कपड़े बदल कर जीन्स और शर्ट पहन लिए। पहली बार आज आकाश ये कपड़े शौक से पहन रहा था ताकि वो रिया के सामने थोड़ा अलग दिख सके। जब इस नये अंदाज में नए पोशाक में आकाश बाहर आया तो रिया तो देख कर एकदम दंग रह गयी। जैसा आकाश चाहता था ठीक वैसा ही हुआ। रिया ने दूर से ही इशारा किया कि वाह क्या लग रहे हो। आकाश उसके इशारे को समझ नहीं पाया।

आकाश- क्या हुआ?

रिया- इस कपड़े में बहोत ही स्मार्ट लग रहे हो।

आकाश- पहली बार पहना हूँ, चलो बैठो।

रिया अपने दोनों पैर एक तरफ करके बाइक पर बैठ गई।

आकाश- मोहतरमा! हम दिन दहाड़े सब्जियां खरीदने बाजार में नहीं जा रहे हैं, बल्कि सुनसान रात में लाँग ड्राइव पर जा रहे हैं इसलिए पैर दोनों तरफ करके बैठीए वरना जरा भी कहीं बाइक डीसबैलेंस हुआ तो बाइक कहीं और होगी और हम कहीं और।

रिया- काफी समझदार हो गये हो!

आकाश- हाँ वो तो मैं पहले से ही हूँ हा हा हा। दोनों हंस पड़े।

दोनों परिंदे चल दीए शहर के सड़कों को रौंदने। दोनों एक साथ खुश थे निश्चित थे। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि ये दोनों एक दुसरे के इतने करीब आ गये थे कि अब इनमें से कोई भी एक दुसरे के बिना नहीं रह सकता था। आकाश की जिंदगी इतनी खूबसूरत कभी नहीं थी और ये जो खूबसूरती है वो रिया ही है। दोनों घंटों तक घुमते रहे। रिया उसके साथ वैसे ही बैठी थी जैसा कि उसने सोचा था। उसके पास वो चीपक कर बैठी थी और उसके कान के पास अपने होंठ करके उससे बातें कर रही थी। घुमते-घुमते आकाश को एक हॉटेल दिखा। इतनी रात गए सभी हॉटेल बंद हो चुके थे। एक यही खुला था तो आकाश वहीं रुक गया।

आकाश- तुमने खाना खाया है?

रिया- नहीं अभी नहीं।

आकाश- चलो फिर इसी होटल में खा लेते हैं।

रिया- हाँ चलो मेरा भी दिन का खाना वसूल हो जायेगा।

आकाश- अच्छा तो इसलिए खाना लायी थी मेरे लिए, ताकि तुम यहां आकर वसूल कर सको?

रिया- फिर क्या बिना किसी मतलब के तुम्हें खाना खिलाउंगी क्या? माँ की आंख।

आकाश- माँ की आंख? ये क्या है?

रिया- ये मुम्बई की मशहूर और अच्छी गाली है।

आकाश- अच्छा? मैंने तो कभी सुना नहीं?

रिया- वो इसलिए कि तुम ज्यादा टीवी नहीं देखते ना और ना ही कभी कहीं बाहर जाते हो इसलिए।

आकाश- हाँ ये बात तो सही है। चलो कुछ खाने के लिए मंगा लो।

रिया- अऽ भइया जरा सुनो ना!

वेटर- जी बोलिए क्या चाहिए?

रिया- एक मटर पनीर, एक मसूर फ्राई और पांच तंदूरी रोटी दो।

आकाश- अलग-अलग क्यों मंगा रही हो या तो दो मटर पनीर मंगा लो या तो दो मसूर फ्राई!

रिया- तुम नहीं समझोगे! भइया आप बस इतना ही ला दो।

वेटर ऑर्डर लेकर चला गया।

रिया- आधा मसूर फ्राई मैं ले लूंगी और आधा मटर पनीर तुम ले लेना हो गया ना टू इन वन?

आकाश उसके होशियारी पर हंसने लगा और खास तौर पर तब जब वो आंखें बना-बनाकर बता रही थी।

रिया- मुझे तो पनीर की सब्जी बहोत पसंद है। अगर मुझे एक किलो बनाकर दे दो तो मैं उसे भी खा जाउंगी। अऽ आपको क्या पसंद है?"

आकाश- अऽ मुझे? मुझे तो सब पसंद हैं।

रिया- और ऐसी कोई चीज़ जो नापसंद हो?

आकाश- ऐसी कोई चीज़ नहीं जो मुझे नापसंद हो।

रिया- वाह क्या बात है?

आकाश- बहोत जोर की भुख लगी है यार। खाना कब आएगा?

रिया- सब्र रखो, सब्र का फल मिठा होता है।

आकाश- पर सब्जी तो तीखा होगा ना हा हा हा।

रिया- हाँ सब्जी तो तीखा होगा पर अगर तुम मेरे हाथ से खाओ तो शायद मिठा लगे?

आंखों को मलकाते हुए रिया ने कहा।

आकाश- क्या... सच में?

रिया- हाँ चलो आज तुम्हें अपने हाथों से खिलाती हूं तुम भी क्या याद करोगे?

कुछ देर बाद खाना आया। अब खाने को आधा-आधा करने की जरूरत नहीं थी

क्योंकि दोनों एक ही थाली में खा रहे थे। कैसा लगता है जब हम पूरा खाना खा जायें और हमारे हाथ में एक दाना भी ना लगे? सोच कर देखो जो खुशी आपको होगी वही उस वक्त आकाश को हो रही थी।

पेट पूरी तरह से भर चुका था और हाथ बिलकुल साफ थे। हाथ धोने के लिए आकाश उठा भी नहीं। बिल चुकाने के बाद दोनों वहां से निकल गए। दोनों पूरी तरह थक चुके थे। आराम करने के लिए दोनों एक पुल पर बैठ गए। कुछ बातें नहीं थीं दोनों के बीच। दोनों ठंडी हवा से सांसे लेकर आहें भर रहे थे। कुछ देर तक दोनों यूं ही चुपचाप बैठे रहे। तभी रिया के मन में एक सवाल आया और वो आकाश से पुछने लगी।

रिया- एक बात पुछूं तुमसे?

आकाश- हाँ पूछो।

रिया- तुमने अब तक शादी क्यों नहीं की?

आकाश- अऽ ऐसे ही!

रिया- ऐसे ही मतलब? कुछ तो सोचकर शादी नहीं किए होगे तुम?

आकाश- हाँऽ।

रिया- क्या हां बताओ ना!

आकाश- बात ये है कि मैं सोचता था कि क्या पता मेरे अतीत में, मेरी बीती जिंदगी में कोई ऐसा हो जिसे मैं प्यार करता रहूंगा? क्या पता उसमें कोई ऐसा भी होगा जिससे मेरी शादी भी हुई होगी? सोचता था अगर इनमें से कोई भी होगा और मैं किसी और से शादी कर लेता हूँ, तो उनके साथ धोखा होगा। इसलिए मैंने अब तक शादी नहीं की।

रिया- तुम बहोत ही अलग किस्म के इंसान हो। तुम्हारे जैसे लोग करोड़ों में भी नहीं मिलते। तुम एक ऐसी चीज के लिए अपनी नई जिंदगी दाव पर लगा रहे हो जिसके बारे में तुम्हें ठीक से पता तक नहीं है कि कोई है भी या नहीं?

आकाश- अगर है तो मैं जीते जी किसी और को अपना बना नहीं सकता और अगर नहीं भी है तो भी मैं बिना जाने शादी नहीं कर सकता।

रिया- मुझे पता है। अच्छा मुझे तुमसे एक चीज चाहिए, मिलेगा?

आकाश- अरे क्यों नहीं मिलेगा? बताओ तो सही!

रिया- मुझे तुमसे एक वादा चाहिए कि अगर तुम्हें पता चल जाए कि तुम्हारे अतीत में ऐसा कोई था जो तुम्हें प्यार करता था और वो वापस तुम्हें मिल जाए तो तुम उसे फिर कभी अपने से जुदा नहीं करोगे, उसे हमेशा अपने पास रखोगे।

रिया भावुक हो चुकी थी। वो आकाश के तरफ ही देख रही थी, उसकी नम लाल आंखें उसकी हामी का इंतजार कर रहे थे।

आकाश- तुम ऐसा वादा क्यों करवा रही हो?

रिया- क्योंकि मैं जानती हूँ कि इस समय तुमसे सिर्फ एक फीट दूर होकर भी मैं तुम्हारे लिए इतना भावुक हो रही हूँ तो वो छह साल से तुमसे दूर होकर क्या कर रही होगी? बस इसलिए मैं तुम्हें उसे अपने करीब रखने के लिए कह रही थी।

” मैं कैसे वादा करूँ? एक तरफ मेरा अतीत, जो है कि नहीं पता नहीं और एक तरफ रिया जो मुझसे प्यार करती है। ये मैं किस उलझन में फस गया हूँ मेरे अतीत के लिए मैं अपने

भविष्य को दाव पर लगा रहा हूँ। मैं मजबूर हूँ। मैं उससे कह नहीं सकता हूँ कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ अगर मैंने ऐसा कहा तो वो मुझे गलत समझेगी।” आकाश के मन में ऐसी ही बातें चल रही थी।

आकाश- काश मेरे अतीत में तुम ही होती।

रिया जैसे इसी पल का इंतजार कर रही थी कि कब आकाश उसे अपना हमदर्द बताए और वो उसके गले लग जाए। रिया झट से आकाश के गले लग गयी। आकाश ने भी रिया को अपनी बांहों में जकड़ लिया। कुछ देर बाद दोनों अलग हो गए।

आकाश- क्या तुम रोज रात इतने देर तक जागती हो? निंद नहीं आती?

रिया- जिसके साथ तुम हो उसे निंद कैसे आ सकती है?

आकाश- सीधा-सीधा जवाब देने नहीं आता?

रिया- हा हा हा। हां मैं रोज इतने रात तक जागती हूँ।

आकाश- क्या करती हो?

रिया- गुजरते लम्हों की यादें जोड़ती हूँ।

आकाश- कैसे लम्हों की यादें?

रिया- तुम्हारे साथ गुजरते लम्हों की यादें।

आकाश- मेरे साथ गुजरते लम्हों की यादें? वो कैसे?

रिया- जाने दो बताऊंगी तो हंसने लगोगे।

आकाश- अरे नहीं हसूंगा बताओ ना!

रिया- शायरी से। मैं तुम्हारी हर बातों को, तुम्हारे जज्बातों को जो मेरे लिए है उसे इकट्ठा करके शायरी में तब्दील करती हूँ।

आकाश- अच्छा? जरा मुझे भी सुनाओ ना?

रिया- नहीं अब मैं ये नहीं कर सकती।

आकाश- अरे सनाओ ना!

रिया- नहीं।

आकाश- अरे तुम तो ऐसे भाव खा रही हो जैसे तुम बहोत बड़ी शायर हो और तुम्हारे जैसा कोई और है ही नहीं है।

रिया- हाँ नहीं है।

आकाश- ओ ओ यहाँ देखो यहाँ। ये भी कम नहीं है किसी से।

रिया- अच्छा? तो तुम्हें भी शायरी आती है?

आकाश- फिर क्या?

रिया- अच्छा! तो एक-एक हो जाए?

आकाश- हाँ चलो हो जाए।

रिया- पहले तुम बोलो।

आकाश- नहीं पहले तुम बोलो।

रिया- नहीं मानोगे?

आकाश- बिल्कुल नहीं।

रिया- तो ठीक है पहले मैं ही सुनाती हूँ।

अरसो गुजर गए तुम्हारे दिदार को पाए,
कहा चले गए अचानक बिन बताए,
कइ सावन गुजर गये तुम्हारे राह को ताके,
आंखें मुझाँ गयी पर क्यों ना आये,
जान तरस जाता है तुम्हारे बांहों में फना होने को,
अब तो चले आओ, कहीं देर ना हो जाए।
आकाश- क्या यह शायरी मेरे लिए था?

रिया- हाँ।

आकाश- नहीं ये मेरे लिए नहीं था। इसमें मेरा कोई जिक्र ही नहीं है। कब मैं तुमसे बताए
बगैर आ गया? और कहां तुम मुझसे अरसो से दूर हो कि तुम्हारी आंखें मुझाँ गयी मुझे देखे
बगैर?

रिया- (हसते हुए) नहीं ये तुम्हारे लिए नहीं था। ये तो उसके लिए था जो कहीं दूर जाकर
अपनी एक नयी दुनिया में खो गया और कभी लौटकर नहीं आया।

आकाश- ओह इसलिए यह शायरी इतनी आकर्षक थी। मैं भी कहूँ कि तुम मुझपर शायरी
बनाओ और शायरी इतनी दर्दनाक हो ऐसा हो ही नहीं सकता।

रिया- अब तुम्हारी बारी है।

इससे पहले आकाश ने कभी शायरी बाजी नहीं की। कहां से शुरू करे कहां से नहीं समझ में
नहीं आ रहा था।

रिया- क्या हुआ शांत क्यों हो गये?

आकाश- कुछ नहीं पहले कभी मैंने शायरी बाजी नहीं की है इसलिए समझ में नहीं आ रहा
है कि शुरू कैसे करूँ।

रिया- तो झुठ क्यों बोले कि तुम्हें शायरी आती है?

आकाश- तुम्हें उकसाने के लिए।

रिया- कोशिश करके देखो, मुझे यकीन है कि तुम कर लोगे।

आकाश- ठीक है.... चलो कोशिश करता हूँ।

आकाश ने एक गहरी साँस ली और अपनी हर उस कमी को याद करने लगा, अपनी हर
तकलीफ को याद करने लगा ताकि वो उसे रिया के जैसे बयान कर सके।

क्या बात है, कि आज की जो ये रात है बड़ी बेबाक है,

कहीं ये तेरा ख्वाब तो नहीं,

या कहीं मैं तेरे याद में तो नहीं,

कि कल तु मुझसे इतनी दूर थी,

और अब मेरे पास है,

क्या बात है कि आज की ये जो रात है इतनी बेबाक है...।

आकाश- कैसा था?

रिया- बहोत अच्छा था। ये मेरे लिए था, है ना?

आकाश- हाँ।

रिया- सच में?

आकाश- हाँ सच में। वो क्या है कि कल रात मैंने एक सपना देखा जिसमें तुम थी।

रिया- मैं? क्या बात है तो मैं अब तुम्हारे सपने में भी आने लगी हूँ?

आकाश- आगे तो सुनो! मैंने देखा काफी रात है और तुम कहीं जा रही हो। फिर तुम रुक जाती हो।

आकाश ने अभी रिया से सिर्फ इतनी ही कहा था कि रिया उसे एक टक देखने लगी। उसके चेहरे से ऐसा लग रहा था कि यह कोई सपना नहीं बल्कि एक सच था जो रिया जानती है और शायद इसलिए वो इसकी बात सुनकर चौंक गयी। आकाश उसे आगे की बातें बताते गया।

आकाश- तुम रुक जाती हो और फिर कहने लगती हो कि, “मेरे लिए यह सब जरूरी नहीं है, अगर मेरे लिए कुछ जरूरी है तो वो है तुम्हें चाहना।” उसके बाद तुम चली गयी।

रिया-(हकलाकर) क्या...क्या सच में तुमने ऐसा सपना देखा?

आकाश- और नहीं तो क्या मैं तुम्हें कहानी सुना रहा हूँ?

रिया- लगता है आज कल तुम्हारे मन में कुछ ना कुछ रोमांस वाली खिचड़ी पक रही है, तभी तुम्हें ऐसे सपने आ रहे हैं।

आकाश- नहीं ऐसी कोई बात नहीं। इसमें रोमांस जैसा कुछ हुआ ही नहीं।

रिया- ऐसी कोई बात अगर होगी भी तो तुम थोड़ी न बताओगे?

आकाश- तुम्हें शर्म नहीं आती क्या ऐसी बातें करते हुए?

रिया- नहीं।

आकाश- क्यों?

रिया- क्योंकि तुमने ही कहा था कि हम उड़ने जा रहे हैं परिंदो की तरह। उड़ते परिंदो को किस बात की शर्म और अगर तुम्हारे सामने ऐसी बात करना शर्म की बात है, तो तुम्हारे साथ इतनी रात को यहाँ घुमना उससे भी बड़ी शर्म की बात है।

उसके इस लाजवाब उत्तर का आकाश के पास कोई जवाब नहीं था। उसने बस सर हिलाकर उसकी बातों का मान रख दिया। उसके बाद आगे बात करने के लिए उन्हें कोई शब्द नहीं मिल रहे थे और ना कोई ऐसा विषय जिससे वे आगे बात कर सकें।

रिया- तो घर चलें?

आकाश- हाँ चलो चलते हैं। वैसे भी मुझे निंद आ रही है।

दोनों घर को चल दीए। वैसे तो रिया का चेहरा हमेशा खिला हुआ ही रहता है लेकिन इस समय उसके चेहरे पर रोज से ज्यादा रौनक नजर आ रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे आज सारे सितारे आकाश में नहीं बल्कि उसके चेहरे पर सज गए हों। वो आसमान में देखकर मुस्कुरा रही थी। आकाश बाइक के आइने में उसकी सारी खूबसूरत हरकतों को देख रहा था। जैसे बाग में से खिलते हुए उस खूबसूरत सी कली को तोड़ने का मन नहीं करता वैसे ही उसे उससे कुछ कहकर उसकी ये मुस्कराहट छिनने का जी नहीं कर रहा था। जो भी सवाल था वो आकाश खुद से ही पुछ कर समझने की कोशिश कर रहा था। उसका सवाल ये था कि उसके होठों पर आखिर यह मुस्कान क्यों है? वो तो मुझसे यह वादा ले चुकी है कि मैं उसे कभी नहीं छोड़ूंगा जिसे मैं अपने गुजरे कल में प्यार करता था। इस बात से तो उसे दुखी होना चाहिए था कि हम दोनों दूर हो जाएंगे फिर भी उसके चेहरे पर खुशी की झलक है।

क्यों?

आकाश इसी बात को सोचते-सोचते घर पहुंचा। दोनों सोसायटी के गेट के पास खड़े थे। हाथ को हवा में झुलाते हुए दोनों यहां वहां देख रहे थे। दोनों के बीच सन्नाटा था। दरअसल यहीं इन दोनों की सबसे बड़ी परेशानी है कि जब सन्नाटा होता है तो ये यहाँ-वहाँ की बात को बीच में घसीट ले आते हैं। वैसे भी आकाश के मन में बहोत देर से एक बात खनक रही थी मौका मिलते ही मैं

उसने बात छेड़ दिया।

आकाश- अच्छा एक बात पुछूं?

रिया- हाँ पुछो ना।

आकाश- क्या बात है? वहां पर बहोत भावुक हो रही थी और अब बहोत खुश लग रही हो?

रिया- अऽ हाँ खुश तो हूं। तुम्हारे साथ मेरे ये जो दिन-रात गुजर रहे हैं ये इतने खुशनुमा हैं कि जी करता है अपने सारे गमों को कहीं पिछे छोड़ बस इसी पल को सारी जिंदगी जीती रहूँ।

आकाश- जब मेरे साथ इतनी खुश हो तो मुझसे ऐसा वादा कराने की क्या जरूरत थी, जो तुम्हें मुझसे दूर कर देगी?

रिया- अरे दूर कैसे कर देगी जहां भी जाओगे मुझे ही पाओगे। इस जनम में इतनी आसानी से पीछा नहीं छोड़ने वाली हूँ तुम्हारा।

आकाश- अच्छा? चलो अच्छी बात है कम से कम इसी बहाने तुमसे दूर तो नहीं हो पाऊंगा? दोनों एक दुसरे के आंखों में ध्यान से देख रहे थे। आकाश को उसकी आंखों में देख कर न जाने क्यों ऐसा लगा कि शायद हमारे बीच कोई रोमांटिक सा माहौल बनने की आशंका है। अभी दोनों के बीच का माहौल बिगड़ ना जाए इसलिए आकाश ने अपना ध्यान उसकी आंखों से हटा लिया।

आकाश- तब चलें?

रिया-(वो चौक गयी) क्या? कहां?

आकाश- घर!

रिया- क्या?

आकाश को लगा कि लगता है रिया को कोई गलत फैमि हो रही है शायद इसलिए वो इतना चौंक रही है।

आकाश- मैंने कहा म म मेरा मतलब है अपने अपने घर।

रिया- ओह!

आकाश की पतलून ढीली हो चुकी थी और वो हंस रही थी। उसने सोचा यहां रुकना अब और सही नहीं है ये तो पागल है ही।

आकाश- अच्छा तब गुड नाइट!

वो कुछ नहीं बोली बस सर हीला दी। जगह से हील भी नहीं रही थी, वहीं पर खड़ी थी। ये पलट कर जा भी नहीं सकता था क्योंकि ये ऐसा करता तो उसे बुरा लगता।

रिया- क्या हुआ तुम जा रहे थे न?

आकाश- कैसे जा सकता हूँ तुम्हारी खामोशी ने मेरे पैरों में बेडीयां जो बांध रखी है।

वो मुस्कुराई और बोली, “अच्छा जाओ गुड नाइट।”

आकाश- सच में?

रिया- हाँ।

आकाश- पर अब मुझे जाने का मन नहीं कर रहा है।

रिया- हा हा हा तुम भी ना सच में किसी से कम नहीं हो। मेरी ही नकल कर रहे हो?

आकाश- नकल? और तुम्हारा? बिल्कुल नहीं।

रिया- अच्छा तो अब जाओ।

आकाश- नहीं जाऊंगा।

रिया- मुझे मजबूर मत करो।

आकाश- मैं तुम्हें किस बात के लिए मजबूर कर रहा हूँ?

रिया- तुम्हें घर भेजने के लिए।

आकाश- वो कैसे?

रिया झट से आकाश के तरफ बढ़ी और

बिना कुछ कहे वो उसके कंधे पर अपना हाथ टेकाकर उसके होठों पर अपना होंठ रखकर कीस् कर दी।

रिया- अब पता चला कि मैं क्यों नहीं जा रही थी?

इतना कहकर वो पलट गयी। वो तो मुस्कुरा कर चली गई पर आकाश उसे देखते रह गया।

उसके होठों की नरमी इसने महसूस किया और अपने होठो को दबाते हुए ये भी मुस्कराया।

वो फिर से पलटी और बाय कहकर चली गई। ये भी पिछे मुड़ा और जाकर बेड पर लेट

गया। उसके बाद कब निंद आ गई उसे पता नहीं चला जैसा कि सबको पता नहीं चलता है।

3

प्यार से दूरी

सुबह होते ही हमेशा की तरह घर के पीछे वाले बगीचे से चिड़ियों की शोर और हिलते पत्तों की खरखराहट से आकाश की नींद खुली। रात को खिडकी वगैरह बन्द करना भूल गया था। हवाओं से परदे उड़ रहे थे। आज का मौसम कुछ... अच्छा नहीं लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे इस हवा में आलस्य भरा हुआ है। अजीब सी उदासी लग रही थी इस मौसम में। हमेशा की तरह उठकर आकाश ने चाय बनाया। अपने लिए भी और रिया के लिए भी। सोचा क्या पता जैसे रोज टपक पड़ती है वैसे ही आज भी टपक पड़े?

चाय बनाकर उसने दोनों कप चाय बाहर टेबल पर रख दिए। उसे यकीन था कि रिया जरूर आएगी या जब दिखेगी तो मैं ही उसे बुला लूंगा।

ये उसका काफी देर तक इंतजार करता रहा। रिया अब तक ना आइ और ना ही बालकनी से कहीं नजर आइ। तब आकाश ने खुद से ही शर्त लगाया कि, “मेरा चाय खत्म होने से पहले वो जरूर आ जाएगी। अगर वो नहीं आएगी तो मैं खुद उसके घर चला जाऊंगा।”

चाय आधा हो गया लेकिन अभी तक उसकी कोई खबर नहीं। इसने सोचा चलो अभी तो आधा और है, हो सकता है यह खत्म होने पर आ जाय?

चाय का कप खाली हो चुका था। “क्या बात है आज आयी नहीं? तबीयत वगैरह तो सही है न उसका? चलो देख के आता हूँ।” आकाश ने मन ही मन सोचा।

वो उसके घर गया। दरवाजा खुला हुआ ही था। आकाश अन्दर गया। दादी अपनी कुर्सी पर बैठी थीं। इसे देखते ही उन्होंने कहा आओ बेटा बैठो! बैठो मैं नाश्ता लेकर आती हूँ।

आकाश- अरे दादी आप रहने दो मैं नाश्ता कर के आया हूँ।

दादी- अरे थोड़ा सा तो कर लो!

आकाश- नहीं-नहीं दादी सच में मैं नाश्ता करके ही आया हूँ।

दादी- तब बताओ सुबह-सुबह आज यहां कैसे?

आकाश यहां-वहां रिया को देखने की कोशिश कर रहा था पर वो कहीं दिखाई नहीं दे रही थी।

दादी- क्या हुआ?

आकाश- कुछ नहीं बस ऐसे ही। वैसे रिया कहां है दिखाई नहीं दे रही?

दादी न जाने क्या सोचने लगीं, उनके चेहरे के हाव-भाव उड़े हुए दिखाई दे रहे थे।

आकाश- दादी, क्या हुआ?

दादी- कुछ नहीं।

आकाश- दादी मैं पुछ रहा था कि रिया कहां है कहीं दिखाई नहीं दे रही है?

दादी कुछ बोलना चाह रहीं थीं पर बोल नहीं रही थीं, हकला रहीं थीं। आकाश समझ गया कि कुछ तो गडबड है। वो खडा हुआ और जरा ऊंचे आवाज में फिर से पुछा, “दादी मैंने पुछा रिया कहां है....?”

दादी बिलखकर रोने लगीं और बोलीं, “बेटा वो चली गयी।”

आकाश- चली गई? लेकिन कहाँ?

दादी- अपने गांव।

आकाश- लेकिन... ऐसे कैसे? क्यों चली गयी?

रिया- पता नहीं। मैंने उसे मनाने की बहोत कोशिश की पर वो नहीं मानी।

आकाश- कब गयी?

दादी- बस अभी एक डेढ घंटे पहले।

आकाश के पैरों तले से जमीन खिसक गयी। उसके आंख अपने आप बहने लगे। वो चीज आज उससे दूर जा रही है जिसके वजह से वो बदल रहा था, बिना कोइ नकाब पहने हंस रहा था, जिसके बिना उसका कोइ दुसरा मकसद नहीं था, वो इसकी जिंदगी जो आज इससे दूर जा रहा थी। आकाश को किसी बात का सुध-बुध नहीं रहा। आज पहली बार ये इतना डरा कि अपने आप को भागने से रोक नहीं पाया। वो वहाँ से बाहर आ गया और दौडने लगा नंगे पाँव। इस कडकते धुप में न जाने कहां से आज आसमान भी गर्जने लगे। चारों तरफ से बादल सूरज को घेरे जा रहे थे मानो जैसे इसे ही घेर रहे हों, पर आज ये रूक नहीं सकता था। इसके पैर हर सडक, हर चौराहे और गाड़ियों को पछाडे जा रहे थे। छः किलोमीटर का फासला तय करके आकाश स्टेशन पहुंचा। ट्रेन अपनी रफ्तार पकड़ चुकी थी। ये उसे नहीं रोक पाया, वो जा चुकी थी। आकाश ने वहीं अपने घुटने टेक दिए और जोर से चिल्लाने लगा। लोग पागलों की तरह इसे देख रहे थे। आज एक बार फिर आकाश की उम्मीद जिंदगी से टुट चुकी थी। तभी उसके आखों के सामने अंधेरा छाने लगा। कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। आकाश वहीं गिर गया और फिर से बेहोश हो गया। सब कुछ वैसे ही हो रहा था जैसे उसके साथ उस रात हुआ था। तभी एक आवाज़ आने लगी।

“आप कहां हो?”

आकाश उसके सवालों का बेझिझक होकर जवाब दे रहा था।

आकाश- मैं सितारों के बीच में हूं।

अच्छा? क्या दिखाई दे रहा है?

आकाश- बहोत सारे लोग हैं। कुछ हो रहा है यहाँ।

क्या हो रहा है वहाँ?

आकाश- कुछ.... कुछ लोग किसी से लड रहे हैं।

किससे लड रहे हैं? कौन हैं वो लोग?

आकाश- पता नहीं उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा है लेकिन वो बहोत तेज़ है। अकेले ही सबको चित्त कर दे रहा है।

थोड़ा कोशिश करो! आराम से ध्यान लगाओ। देखो की वो कौन है?

आकाश- ये... ये कुछ... मेरे जैसा है। ये तो मैं हूँ... हाँ ये मैं हूँ।

घबडाओ मत यह बताओ अब क्या हो रहा है वहाँ?

आकाश- मेरे सामने बहोत सारे लोग हैं सबके हाथों में तलवार हैं शायद हमें मारना चाहते हैं।

हमें मतलब किसे वहां तो सिर्फ तुम और वो लोग हैं ना?

आकाश- हाँ, नहीं-नहीं एक लडकी भी है। मेरे पीछे खडी है।

क्या आप उसे देख पा रहे हैं, कौन है वो?

आकाश- नहीं मैं उसे नहीं देख पा रहा हूँ क्योंकि मेरा ध्यान सामने है।

कोशिश करो उसे देखने की।

आकाश- नहीं ये लोग हमे मार देंगे।

तभी वो लडकी ने आकाश के कंधे से अपने हाथ हटा लिए और वो गिर गई। आकाश का ध्यान सामने था फिर भी उसे इस बात का अनुमान हो गया कि उस लडकी को कुछ हुआ है। जैसे ही वो पीछे मुडकर देखा तभी किसी ने पिछे से इसके कमर में भी खंजर फेंक मारा और वो वहीं चकरा कर गिर गया। वो उस लडकी को देखने की बहोत कोशिश कर रहा था पर उस लडकी का चेहरा साफ दिखाई नहीं दे रही था।

अब क्या हो रहा है वहां?

आकाश- मैं खडा हूँ। सामने एक गहरा दरिया है।

क्या अब उसका चेहरा दिखाइ दे रहा है?

आकाश- नहीं, अब मैं निचे गिर रहा हूँ।

आकाश ने खुद को दरिया में गिरते देखा। जैसे ही वो पानी में गिरा वो होश में आ गया। सामने डाक्टर सक्सेना और खन्ना अंकल बैठे थे। डाक्टर ने पुछा क्या तुम ठीक हो?

आकाश- मैं यहाँ कब आया?

डाक्टर ने कहा तुम बेहोश थे आठ घंटे से।

खन्ना अंकल- चिंता मत करो। सब ठीक है। वैसे तुम स्टेशन क्या करने गये थे?

जब खन्ना अंकल ने स्टेशन का नाम लिया तब आकाश को याद आया कि मैं तो स्टेशन गया था रिया को रोकने।

उसे पता था कि खन्ना अंकल को सब पता चल गया होगा फिर भी उनके सामने ये इस बात को बयान नहीं होने दे रहा था। इसने उनसे कुछ नहीं कहा बस चुपचाप बैठा रहा। कहने को अब कुछ बचा भी नहीं था, सब खत्म हो चुका था। जिंदगी फिर से अजनबी लग रही थी क्योंकि अब वो इसके पास नहीं थी सिर्फ उसकी अब यादें थीं। “काश कि एक बार फिर वो मुझे दिख जाती तो उससे यह ज़रूर पुछता कि मैं तो ना समझ हूँ मुझे कुछ नहीं पता पर तुम तो होशियार हो तो बता दो मेरी क्या गलती थी या क्या कमी थी कि तुम मुझे ऐसे छोड कर चली गयी? अगर कोई कमी थी तो तुम्हें मेरे साथ रहना अच्छा क्यों लगता था,

मैं क्यों अच्छा लगता था मेरी बातें क्यों अच्छी लगती थीं? उस दिन तुम मुझसे दूर होने के डर से रो क्यों रही थी?"

एकाएक आकाश के मन में सवाल के बोझ लदे जा रहे थे और ये इनके तले दबे जा रहा था। सर फट रहा था यह सब सोचकर।

डाक्टर ने कहा आकाश अपने दिमाग को आराम दो। ज्यादा सोचने से तुम्हारे दिमाग पर गहरा असर होगा और तुम जानते हो तुम्हारी दिमागी हालत सही नहीं है।

खन्ना अंकल- मैं जानता हूँ इस हालात से गुजरना बहुत मुश्किल होता है। अगर तुम इस मुश्किल से निपटना चाहते हो तो सिर्फ मेरी इतनी सी बात सुन लो, "अगर वो तुमसे प्यार करती तो तुमसे दूर कभी नहीं जाती।"

जब खन्ना अंकल ने यह बात आकाश से कही तो इसे पक्का यकीन हो गया कि इनको सब पता है। ये उनसे पुछना चाहता था कि आपको कैसे पता चला पर उन्होंने पहले सब बता दिया।

खन्ना अंकल- मुझे बंटी ने सारी बातें बताई तुम्हारे और रिया के बारे में। मैं जानता हूँ तुम उससे बहुत प्यार करते थे पर बेटा सिर्फ एक इन्सान के चाहने से सब कुछ ठीक होता तो शायद दुनिया में कोई बगैर प्यार के नहीं होता। प्यार दोनो तरफ से होना जरूरी है। मेरी बात पर ध्यान दो और खुद को समझाने की कोशिश करो। मैं डाक्टर से मिल कर आता हूँ।

डाक्टर सक्सेना और खन्ना अंकल पहले से ही गहरे मित्र रहे हैं। डाक्टर सक्सेना ने पहले भी आकाश का इलाज किया था जब खन्ना अंकल को आकाश नदी के किनारे मिला था। इसलिए उन्होंने आकाश को फिर से डाक्टर सक्सेना के पास लाया। खन्ना अंकल डाक्टर सक्सेना से मिलने उनके ऑफिस में गये।

डाक्टर सक्सेना- अरे आओ खन्ना बैठो।

खन्ना अंकल आकाश को लेकर काफी चिंतित थे। उनका चेहरा देखते ही डाक्टर सक्सेना उनकी चिंता भांप गए।

डाक्टर सक्सेना- अरे यार क्यों चिंता करते हो? बैठो ना आराम से!

खन्ना अंकल- चिंता नहीं करूँ तो क्या करूँ यार? पता नहीं कैसे यह सब..? इतने सालों से तो ठीक था आकाश, फिर ये चक्कर आना, न जाने कैसे-कैसे सपने दिखना? मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

डाक्टर सक्सेना- मैंने आपसे कहा था कि इसे सम्भालकर रखिएगा, कोशिश कीजिएगा कि ये अपने दिमाग पर ज्यादा जोर ना दे किसी भी चीज़ के बारे में ज्यादा सोचे नहीं। उस वक्त भी इसकी दिमागी हालत बड़ी नाजुक थी, बहुत ही मुश्किल से तो बचा पाए हैं हम उसे।

खन्ना अंकल- पर पिछले छह सालों में तो ऐसा एक भी बार नहीं हुआ। अच्छा खासा था लोगों के बीच घुल मिल गया था। चिंता नाम की तो कोई चीज़ ही नहीं थी।

डाक्टर सक्सेना- ऐसा आप कैसे कह सकते हैं कि चिंता नाम की कोई चीज़ ही नहीं थी? जरा आप ही सोचो कि आप एक ऐसे शख्स हो जिसके पास उसकी कोई अपनी अतीत की याद नहीं है, ना घर का पता है ना परिवार का, यहां तक कि तुम्हें अपना नाम भी नहीं पता है, जरा सोचकर कर देखो खन्ना क्या तुम यह सब जाने बिना एक भी पल चैन से सो

पाओगे? चिंता नहीं करोगे?

डाक्टर की बात सुनकर खन्ना अंकल चुप हो गए। वे अपने मुँह का पानी गले से निचे उतारने लगे। शायद उन्होंने खुद को आकाश के जगह पर रखकर उसकी बेचैनी को महसूस किया इसलिए वे खामोश थे।

डाक्टर सक्सेना- नहीं रह सकते न? तो आप कैसे कह सकते हैं कि आकाश ने अपने दिमाग पर जोर नहीं दिया होगा?

खन्ना अंकल- आप सही कह रहे हैं, ऐसा हो सकता है।

डाक्टर सक्सेना-(कुछ सोचते हुए) पर ऐसा नहीं हुआ है।

खन्ना अंकल- क्या? लेकिन अभी तो आप इसे बड़े यकीन से कह रहे थे?

डाक्टर सक्सेना- कह तो रहा था लेकिन फिर सोचा कि ऐसा होना था तो पहले भी हो सकता था इतने सालों बाद ही क्यों?

खन्ना अंकल- मैं भी तो तबसे यही कह रहा हूँ कि होना था तो पहले ही हो सकता था इतने सालों बाद तक तो घाव भर जाना चाहिए।

डाक्टर सक्सेना- अच्छा आपको याद है आपने जब मुझे फोन किया था और आकाश के सपने के बारे में बताया था?

खन्ना अंकल- हां मुझे याद है।

डाक्टर सक्सेना- आपने कहा था कि आकाश ने किसी लडकी का सपना देखा है जो कुछ दिन पहले उसके पडोस में आयी हुई थी?

खन्ना अंकल- हां, तो?

डाक्टर सक्सेना- क्या नाम बताया था आपने उस लडकी का?

खन्ना अंकल- रिया।

डाक्टर सक्सेना- रिया...

इतना कहकर डाक्टर सक्सेना अपने दाढ़ी खुजाकर कुछ सोचने लगे। उनके चेहरे पर गहरी सोच का भाव था, न जाने उन्हें ऐसी कौन सी बात याद आयी उनके चेहरे का भाव बदल गया। वे हल्के से मुस्कुराने लगे। खन्ना अंकल उनकी मुस्कुराहट देखकर समझ गये कि वो क्या कहना चाहते हैं।

खन्ना अंकल- एक मिनट... कहीं आप ये तो नहीं कहना चाहते कि... रिया आकाश को पहले से जानती है?

डाक्टर सक्सेना- बिल्कुल मैं यही कहना चाहता हूँ।

खन्ना अंकल- पर आप इतने यकीन से कैसे कह सकते हैं?

डाक्टर सक्सेना- जरा सोचिए आकाश को यह सब रिया से मिलने के बाद ही क्यों दिखाई देने लगा और चलो मान लिया कि उसने अपने दिमाग पर ज्यादा दबाव डाला है तो उसे अपने सपने में रिया ही क्यों दिखाई दी?

खन्ना अंकल- लेकिन रिया के आने और आकाश को यह सब दिखने में क्या सम्बन्ध?

डाक्टर सक्सेना- देखिए आकाश को जो बिमारी है उसे हिस्टेरीकल एमनेशिया कहते हैं। हिस्टेरीकल एमनेशिया मतलब किसी दुर्घटना में सर पर चोट लगने से भुलने की बिमारी। इसमें इंसान अपना घर-परिवार, रिश्ते-नाते सब कुछ भुल जाता है यहाँ तक कि अपना

नाम और पहचान भी। वो शीशे में अपने चेहरे तक को भी नहीं पहचान पाते हैं। लेकिन किसी दुर्घटना पूर्वक उस इंसान के सामने अचानक कोई ऐसी चीज सामने आ जाती जिसे वो पहले से जानता है। तब उसे उस चीज के बारे थोड़ा-थोड़ा खयाल आने लगता है। लेकिन ऐसा सिर्फ कुछ लोगों के साथ ही होता है।

खन्ना अंकल- इसका मतलब यह है कि रिया से मिलने के बाद ही आकाश को यह सब दिखाइ देने लगा इसलिए आप सोचते हैं कि रिया उसके अतीत से आयी है।

डाक्टर सक्सेना- हाँ बिल्कुल।

खन्ना अंकल ने सर हिलाकर ही डाक्टर सक्सेना की बातों को समर्थन दे दिया। कुछ देर के लिए दोनों के बीच कोई वार्तालाप नहीं हुआ। खन्ना अंकल को आगे कुछ समझ नहीं आ रहा था।

खन्ना अंकल- इसका मतलब हम इसके जरिए आकाश के बारे में पता लगा सकते हैं?

डाक्टर सक्सेना- जी बिल्कुल लेकिन खयाल रहे आकाश को इस बारे में जितना कम पता होगा उतना ही सही है क्योंकि वो इस बात को सिर्फ एक सपना ही समझता है। अगर उसे पता चला कि यह सब सच है तो पता नहीं वो इस बात को बर्दाश्त कर पाएगा कि नहीं और अगर बर्दाश्त नहीं कर पाया तो इसका नतीजा बुरा हो सकता है।

खन्ना अंकल- हाँ मैं खयाल रखूँगा। अऽ क्या अब हम जा सकते हैं?

डाक्टर सक्सेना- जी अभी नहीं। अभी आकाश का सीटी स्कैन करना बाकी है। हो जाने के बाद आप जा सकते हैं।

खन्ना अंकल- ठीक है।

कुछ देर बाद खन्ना अंकल और डाक्टर सक्सेना आकाश के पास वापस आए। आकाश का सीटी स्कैन किया गया। उसके बाद डाक्टर सक्सेना ने दोनों जन को जाने की इजाजत दे दिया। खन्ना अंकल और आकाश दोनों घर के लिए निकल गये। आकाश का बर्ताव इस समय बदला सा लग रहा था, वो हमेशा की तरह हंसता मुस्कुराता नहीं दिख रहा था। लगता है आज उसने उस नकली नकाब को निकाल फेंका था जिससे वो लोगों से अपना असली चेहरा छुपाए फिरता था। खन्ना अंकल आज उसके इस चेहरे को अच्छी तरह से देख पा रहे थे। उन्हें डाक्टर सक्सेना के बातों पर यकीन हो गया कि वे सही ही कह रहे थे कि, “कोई भी इंसान अपने के बिना एक पल भी खुश नहीं रह सकता।” वो आज आकाश के चेहरे पर साफ दिखाई दे रहा था। खन्ना अंकल इस बात से बहुत दुखी थे कि वे आकाश का खयाल नहीं रख सके, उसे खुश नहीं रख सके। एक बात की खुशी ये भी थी कि चलो कोई तो मिला जो आकाश को जानता है। खन्ना अंकल को यह बात समझ में नहीं आ रहा था कि अगर रिया आकाश को जानती है तो उसे सब सच क्यों नहीं बताइ? अचानक चली क्यों गयी? खैर इस समय उन्होंने इन सब बातों को भुलाकर आगे के बारे में सोचना ही ठीक समझा।

आकाश का घर नजदीक आ गया। खन्ना अंकल ने अपनी गाड़ी वहां नहीं रोकी और आगे निकल गये।

आकाश- अरे बस बस यहीं पर रुकना था!

खन्ना अंकल- यहाँ पर नहीं रुकना है।

आकाश- क्या? लेकिन क्यों?

खन्ना अंकल- क्योंकि तुम यहाँ रहकर पहले

से अपनी तबीयत ज्यादा खराब कर चुके हो और अब तुम मेरे घर जा रहे हो।

आकाश- क्या लेकिन मैंने ऐसा क्या किया?

खन्ना अंकल- क्या किया? इतना कुछ हो गया और पुछ रहे हो कि क्या किया? एक तो तुम यहाँ अकेले रहने आ गये इसकी वजह से तुम्हें वक्त मिला अपने बारे में सोचने का और अपने दिमाग पर दबाव देने का जिसके कारण आज तुम स्टेशन पर बेहोश पड़े थे और पुछते हो क्या किया? इसलिए तुम फिर से मेरे घर चल रहे हो। वहाँ पर सब साथ रहेंगे तो तुम्हें सोचने समझने के लिए थोड़ा कम वक्त मिलेगा। अब फिर वहाँ से कहीं जाने की जिद मत करना। अब तुम्हें वहीं रहना है। जब से यहाँ रहने लगे हो तबसे कभी घर पर आये ही नहीं। तुम्हें पिंकी और सौरव भी हमेशा पुछते रहते हैं तुम्हारे बारे में, उनसे मिलने के लिए भी सोचे कभी?

आकाश- अच्छा ठीक है लेकिन बाइक तो लेने दीए रहते।

खन्ना अंकल- वो सौरव आकर ले जाएगा।

उनका यह जवाब सुनने के बाद आकाश चुप लगाकर बैठ गया क्योंकि वो समझ चुका था कि अब खन्ना अंकल जिद पर अड ही गये हैं तो आगे क्या कर सकते हैं? कुछ देर बाद दोनों जन घर पहुँचे। आकाश बड़े गौर से उस घर को देख रहा था।

खन्ना अंकल- ऐसे क्या देख रहे हो?

आकाश- (नर्वस होकर) सोच रहा हूँ जहाँ से मैं चला था फिर वहीं आकर रुक गया।

खन्ना अंकल- दलदल में फंसने से अच्छा है कि वापस पीछे लौट जाओ और दूसरा रास्ता चुन लो। (गहरी साँस लेते हुए) हाऽऽ चलो... अन्दर चलते हैं।

आकाश, पूरे चार साल बाद खन्ना अंकल के घर वापस आया था। शुरू के दो साल उसने यहीं गुजारे थे। इन दो सालों में वो काफी कुछ सीख गया था, वो ये भी समझ चुका था कि उसका अपना सगा कोई नहीं है और अब यही उसकी दुनिया है इसलिए उसने अपनी एक नयी पहचान बनाने का फैसला किया था। खन्ना अंकल ने उसे बहोत समझाया कि अभी तुम्हारा अकेले रहना ठीक नहीं है लेकिन आकाश ने सुना नहीं। आज यहाँ वापस लौटकर उसे अपने गलती का एहसास हुआ।

आंटी- अरे आकाश? इतने सालों बाद हमारी याद आइ तुम्हें? आंटी ने प्यार से आकाश के सर पर हाथ फेरते हुए पुछा।

खन्ना अंकल- इसे कहाँ हमारी याद आइ वो तो मैं इसे जबरदस्ती यहाँ लेकर आया हूँ।

आंटी- बिल्कुल ठीक किये वरना मैं भी कहूँ इस बदमाश को हमारी याद कैसे आइ? आंटी ने आकाश सर हिला दिया।

खन्ना अंकल- तुमलोग बातें करो तब तक मैं फ्रेश होकर आता हूँ।

आंटी- जी।

तब तक न जाने कहां से पिंकी उछल कर आयी। आकाश को देखकर उसके आंख बड़े हो गये। वो मीनमीनाते हुए आइ और कहती है अरे आकाश भइया? आप आ गये? अच्छा हुआ भइया आप आ गए। देखो ना परसो मेरी एक सहेली का जन्मदिन है और समझ में नहीं आ

रहा है कि उसे क्या गिफ्ट दूं..? आप मेरी मदद करो ना प्लीज़!
तभी पीछे से आवाज़ आई अरे इसे छोड़ो भाई इसे तो हमेशा कोई न कोई दिक्कत लगा ही रहता है।

यह सौरव था, खन्ना अंकल का छोटा बेटा पिंकी इससे बड़ी थी।

पिंकी- क्यूं तुझे दिक्कत नहीं रहता है?

सौरव- रहता है पर तेरे इतना तो नहीं रहता है ना!

पिंकी- मेरे इतना नहीं? अरे तेरा प्रॉब्लम ही तो सबसे ज्यादा रहता है जब देखो तब किसी न किसी का जासूसी करता है और फंस जाता है।

सौरव- ये मेरा दिक्कत नहीं है शौक है।

आकाश- सौरव, तुम अभी भी जासूसी करते हो?

पिंकी- कुत्तों और भेड़ियों में बहोत फर्क होता है। पिंकी बिच में टपक पड़ी।

दोनों हमेशा की तरह आपस में झगड़ने लगे और बीच में खड़ा आकाश कभी इसको चुप कराता कभी उसको। कोई चुप होने का नाम नहीं ले रहा था। तब तक अंकल आ गये। दोनों को ऐसे झगड़ता देख वे डांटने लगे।

खन्ना अंकल- क्या कर रहे हो तुम लोग? क्यों परेशान कर रहे हो इसे?

दोनों के दोनों एक दम चुप हो गए।

पिंकी- पापा वो...।

खन्ना अंकल- एक दम चुप। एक तो इसकी तबीयत सही नहीं है उपर से तुम लोग इसे तंग कर रहे हो?

आकाश- जाने दीजिए ना अंकल इन्हे पता नहीं था।

खन्ना अंकल- पिंकी, आकाश को उसका रूम दिखा दो।

पिंकी- हाँ पापा।

खन्ना अंकल- सौरव!

सौरव- हाँ पापा?

खन्ना अंकल- बाद में आकाश के रूम जाकर उसका सामान लेकर आ जाना।

सौरव- ठीक है पापा।

खन्ना अंकल- आकाश तुम जाओ आराम करो।

आकाश- जी।

पिंकी आकाश को रूम दिखाने उप्पर लेकर आयी और साथ में सौरव भी आया।

पिंकी- भइया बताइए ना गिफ्ट पसंद करने में मेरी मदद करेंगे ना?

आकाश- हाँ बिल्कुल करूंगा। तेरी मदद नहीं करूंगा तो किसकी मदद करूंगा?

तब तक सौरव बोला, मेरी करोगे।

आकाश- मेरे भाइ मैं किसी एक का नहीं दोनों का मदद करूंगा। पिंकी, तुम्हे सिर्फ गिफ्ट खरीदना है ना?

पिंकी- हाँ, नहीं-नहीं।

आकाश- तो और क्या?

पिंकी- वो..क्या है कि...आप को भी चलना पड़ेगा मेरे साथ मेरी सहेली के जन्मदिन की

पार्टी में।

आकाश- क्या? पर मैं क्यों?

पिंकी- क्योंकि मैं अपनी सारी फ्रेंड्स से कह चुकी हूँ कि मैं आपको भी साथ लेकर आऊंगी।

आकाश- अच्छा? लेकिन क्यों?

पिंकी- क्योंकि मैंने उनके सामने आपकी बहोत तारिफ कर दी है, इतनी कर दी है कि वो सब आपसे मिलना चाहती हैं।

आकाश- हा हा हा हा ऐसा क्या तारिफ कर दिया तुमने?

पिंकी- मैंने कहा कि आप बहोत ही स्मार्ट हैं, लम्बे तम्बे हैं और बहोत अच्छे फाइटर भी हैं अकेले ही दस लोगों को मार गिरा देते हैं।

सौरव- हा हा हा हा।

आकाश- क्या? अकेले ही दस लोगों से लड़ लेता हूँ...? देखो तुमने जो भी कहा है उसमें से कुछ बातें मैं मानता हूँ कि सही हैं लेकिन दस लोगों को मार गिराना? ऐसा क्यों कहा तुमने?

पिंकी- क्योंकि वो लोग ब्रूस ली की बहोत बड़ी फैन हैं।

आकाश- तो उसके लिए तुने मुझे बली का बकरा बनाया?

पिंकी- मुझे वो सब नहीं पता, आप बस इतना बताओ कि साथ चलोगे कि नहीं? पिंकी ने मुंह बनाते हुए आकाश से कहा।

आकाश- अरे रूठती क्यों है? ठीक है भाइ चलुंगा तेरे साथ अब खुश? अरे अब तो हस।

पिंकी मुस्कुराने लगी।

आकाश- ये हुइ ना बात!

पिंकी- ठीक है अब मैं चलती हूँ मेरा काम तो हो गया। पिंकी ने सौरव के तरफ देखते हुए मुंह बनाया और चली गयी।

आकाश-(अपने पसीने पोछते हुए) यह क्या बोल रही है यार “अकेले ही दस लोगों को मार कर गिरा सकता हूँ”? अरे यार अभी पांच दिन नहीं हुए चार लोगों ने मिलकर मुझे अच्छे से धोया है और ये है कि न जाने क्या-क्या बता चुकी है अपने फ्रेंड्स को? आकाश ने सौरव से कहा।

सौरव- सब झुठ बोल रही है भाइ।

आकाश- झुठ बोल रही है?

सौरव- हाँ भाई, उसने जो भी कहा सब झुठ है।

आकाश- कैसे?

सौरव- आप ही सोचिए ना क्या चार साल में पहली बार उसके फ्रेंड का बर्थडे है? नहीं ना बर्थडे तो हर साल आता है।

आकाश- कहना क्या चाहता है तु साफ-साफ बोल।

सौरव- मैं यह कहना चाहता हूँ भाइ कि चार साल से आप यहां नहीं आए और यहां इसी बार पिंकी ने आपके बारे में अपने फ्रेंड्स को बताया और कहा कि आपको भी साथ में लेकर आएंगी, उसे कैसे पता कि आप आने वाले हो?

आकाश- हाँ यार बात तो सही है, लेकिन तु कहना क्या चाहता है मुझे अब तक समझ में

नहीं आया?

सौरव- समझाता हूँ भाइ। क्या आपने यहाँ आने से पहले किसी से बताया कि आप आने वाले हैं?

आकाश- नहीं तो, मैं तो बस अचानक में आ गया।

सौरव- इसका मतलब यही हुआ ना कि आपको यहां देखकर पिंकी के दिमाग में अचानक इस बात का ख्याल आया कि वो आपको भी अपने साथ लेकर जाएगी?

आकाश- हाँ लगता तो ऐसा ही है।

सौरव- ऐसा ही है क्योंकि वो आपको अपने साथ लेकर जाना चाहती है और उसने यह बात जान बुझकर कहा कि आप दस लोगों को अकेले सम्भाल सकते हैं ताकि आप अपने आप को पहले से ही तैयार कर लें।

आकाश- तैयार कर लूँ? लेकिन किस लिए?

सौरव- लडने के लिए।

आकाश- क... क... क्या लडने के लिए? लेकिन क्यों और किससे? सब ठीक तो है न?

सौरव-(थोड़ा कतराते हुए) भाइ... एक दिक्कत है।

आकाश- क्या?

सौरव- सात आठ दिन पहले की बात है। पिंकी दी के पास कोई बार-बार फोन कर रहा था। पिंकी दी परेशान थीं वो फोन नहीं उठा रही थीं। उन्होंने फोन को साइलेंट मोड में कर दिया और बेड के निचे रख कर निचे चली गयी। मैं उनका चेहरा देखते ही समझ गया कि वो किसी परेशानी में हैं। मुझसे रहा नहीं गया मैंने फोन निकाला और उठा लिया।

आकाश- आगे क्या हुआ?

रिया- पता नहीं कौन था उल्टी-सिधी बातें कर रहा था। कह रहा था कि जब तक तु हां नही कर देती तब तक मैं हार नहीं मानुंगा। मैंने फोन काट दिया।

आकाश- कौन था?

सौरव- यही जानने के लिए अगले दिन मैं पिंकी दी के पीछे-पीछे उनके कालेज गया। तभी सामने वो आ गया। उसके साथ और भी चार पांच लोग थे। हुलिया एकदम गुंडों जैसी थी। वो उनका रास्ता रोक रहा था उन्हें जाने नहीं दे रहा था। उसने पिंकी दी को परपोड़ा किया था लेकिन पिंकी ने मना कर दिया था इसलिए तबसे परेशान कर रहा है। मेरा जो काम है वो यही है। उसी को सबक सिखाना है।

आकाश- तो तु कौन सा कम है यह सब तो तु अकेले भी कर सकता था।

सौरव- भाई! मुझे बात को बाहर निकालने में और मार खाने में ज्यादा अनुभव है ना की मारने में।

आकाश- सौरव तु भी सब जानते हुए ऐसी बातें कर रहा है? देख मैंने आज तक कोई लडाइ नहीं की और ना ही मैं लड पाता हूँ।

सौरव- मुझे पता है लेकिन हम साथ मिलकर तो कर सकते हैं ना?

एक साथ की बात सुनकर आकाश हल्के से मुस्कुरा दिया।

आकाश- अच्छा तो ठीक है। कहां मिलेगा वो?

सौरव- परसो, पिंकी के फ्रेंड के बर्थडे में। इसलिए वो आपको भी साथ में चलने के लिए कह

रही थी।

आकाश- क्या बात है! सच में तुम कमाल के जासूस हो।

सौरव- अभी आपने मेरी जासूसी देखी कहां है।

मैं तो चेहरा देखकर दिमाग तक भी पढ़ लेता हूं।

आकाश- अच्छा?

सौरव- हाँ, मैं साइकोलॉजी किया हूं और बता सकता हूं कि आप के दिमाग में क्या चल रहा है।

आकाश- अच्छा तो बताओ!

कुछ देर तक सौरव आकाश को देखते रहा।

सौरव-आपकी यह मुस्कुराहट एक दिखावा लगती है।

आकाश- क्या? पर कैसे?

सौरव- वो ऐसे क्योंकि आपका चेहरा आपके होठों का साथ नहीं दे रहा है। आपके चेहरे के रोमटे खड़े हैं, आंख हलका सा लाल है और बार-बार डगमगा रहा है, होठ भी लाल हैं और एक आदमी का होठ तभी लाल होता है जब वो ज्यादा रो दिया हो। मतलब आप में किसी बात की निराशा है और आप इसे छुपाने के लिए झुठ मुठ के मुस्कुरा रहे हैं।

आकाश की तो बोलती ही बंद हो गयी। उसके गले से पानी उतरने लगे। यह किस तरह का अनुभव है जो किसी का चेहरा देखकर बता सकता है कि वो क्या सोच रहा है?

सौरव- क्या हुआ है भाइ क्या बात है?

आकाश- नहीं यार कुछ खास नहीं।

सौरव- मैंने आपसे कोई बात छुपाई है क्या? फिर आप क्यों छुपा रहे हो?

आकाश- नहीं मैं छुपा नहीं रहा हूं।

सौरव- फिर बताइए ना।

आकाश-(सांस भरते हुए) कुछ दिन पहले मैं किसी से मिला। उस दिन रात को मैं काम से घर जा रहा था। तभी मैंने देखा चार लोग मिलकर उसके साथ जबरदस्ती कर रहे थे। अंधेरे में किसी का चेहरा नहीं दिखाई दे रहा था बस इतना समझ में आ रहा था कि वो मुसीबत में है। जिंदगी में पहली बार मैं किसी से लड़ने के लिए आगे बढ़ा वो भी एक अंजान लड़की के लिए। मैंने उनसे लड़ने की कोशिश की लेकिन नहीं लड़ पिया उल्टा मार खा गया पर हां उस लड़की को मैंने खरोच तक नहीं आने दी। मैं नहीं जानता था कि वो लड़की मेरे ही पड़ोस में आई हुई है वो भी दादी के यहाँ। यह बात तो मुझे तब पता चला जब दादी ने मेरे लिए पकौड़े भेजे वो भी उसी के हाथों। तभी से मेरी और उसकी जान-पहचान हो गयी। वो मेरे घर आने-जाने लगी, टिफिन तक लाकर मुझे दे जाती थी। दोनो यहां-वहां कहीं भी घुमने निकल जाते थे बिना कुछ पुछे बिना कुछ कहे क्योंकि हम दोनों को एक दुसरे पर बहुत भरोसा था इतना कि दोनो आधी रात में भी घुमने निकल जाते थे। हम इतने करीब रहने लगे थे कि थोड़े देर के लिए भी दूर हो जाएं तो घुटन सी होने लगती थी।

सौरव- यह तो प्यार है!

आकाश- हाँ सही कहा साथ-साथ रहते-रहते कब उससे प्यार हो गया पता ही नहीं चला।

फिर एक दर्दनाक सुबह आया। आज सुबह जब मैं उठा तो मुझे लगा कि वो हमेशा की तरह

वो आज भी आयेगी इसलिए मैंने चाय थोड़ा ज्यादा बनाया। दो कप चाय बना कर मैंने उसे टेबल पर रख दिया। मेरा चाय खत्म हो गया पर वो नहीं आयी। मुझे हमेशा से उसके आने का और उसके होने का आहट मिल जाता था, पर आज कोई आहट नहीं मिल रही थी। जब मैं उससे मिलने उसके

घर गया तो पता चला कि वो जा चुकी है। मैंने उसे रोकने की कोशिश की पर उसे रोक नहीं पाया। मेरे पैर से तेज मेरे बदन सीबी दौड़ रही थी। ट्रेन निकल चुकी थी।

सौरव के आंख में आंसू आ गए थे। वो खिडकी से बाहर के तरफ कहीं देख रहा था। वो कहीं देख नहीं रहा था बल्कि कुछ सोच रहा था उस कहानी के बारे में जो अभी आकाश ने सुनाई।

आकाश- लो हो गया अब यह मत कहना कि मैं तूमसे कुछ छुपा रहा हूँ। चलो अब मुझे थोड़ा आराम करने दो।

आकाश की बातों से वो भावुक हो गया था। बिना कुछ बोले चुपचाप चला गया। निचे जाने के बाद सौरव से उसके पापा मिले।

खन्ना अंकल- कहां जा रहे हो?

सौरव- वो भाई के रूम पर जा रहा हूँ उनका कपडा वगैरा लाना है ना?

खन्ना अंकल- हाँ हाँ ठीक है लेकिन जल्दी चले आना वहां पर अपने जोड घटाने मत शुरू कर देना।

सौरव- जी।

सौरव घर से निकल गया। रास्ते भर उसके दिमाग में बस आकाश की सुनाई हुई कहानी ही चल रही थी। उसे यह कहानी बड़ी ही उलझी लग रही थी। उसे इसका कोई जवाब नहीं मिल रहा था कि आखिर उस लडकी ने ऐसा क्यों किया? पहले प्यार करना और फिर बिना बताए गायब हो जाना? जिंदगी में पहली बार उसे इस बात का एहसास हुआ कि वो एक प्रोफेशनल जासूस नहीं है और वो ना ही उनके जैसा इस उलझन को सुलझा सकता है। वो आकाश के रूम पर पहुंचा। दरवाजा वैसे के वैसे ही खुला हुआ था। सौरव ने सोचा कि सामान वगैरह बाद में ले लेंगे, पहले थोड़ा चक्कर लगा लेता हूँ।

यहां वहां टहलते-टहलते वो बालकनी में पहुंचा। बालकनी से आती ठंडी हवाएं एकदम मदमस्त कर देने वाली थीं। सौरव अपनी बांहें फैलाकर उन हवाओं का मजा लेने लगा।

“अब पता चला कि भाई अकेले यहां कैसे रहते हैं, यहां अकेले रहने में एक अलग ही मजा है।” सौरव मन ही मन सोच रहा था।

बालकनी से वो वापस पीछे की तरफ घुमा। उसे टेबल पर रखे चाय के दो कप दिखाई दिए। सौरव समझ गया कि भाई इसी दो कप चाय की बात कर रहे थे। वो उसे नजर अंदाज करके आगे बढ़ गया। कुछ कदम आगे जाने के बाद वो अचानक वहीं रुक गया। उसे कुछ ऐसा दिखाई दिया जो शायद रोंगटे खड़े कर देने वाले थे। वो फिर पीछे घुमा और टेबल की ओर बढ़ने लगा जिसपर चाय का दो कप रखा हुआ था। जैसे वो करीब पहुंचा उसने देखा... कि... चाय के दोनो कप खाली थे। उसके माथे से पसीना छुटने लगा। वो सोचने लगा कि रिया तो यहां आयी ही नहीं और भाई तो सिर्फ एक कप का चाय पिये थे तो दूसरे कप का चाय क्या हुआ? यह खाली क्यों है? रिया हो नहीं सकती क्योंकि वो तो

पहले ही जा चुकी थी, हो सकता है भाइ के जाने के बाद कोई आया होगा। सौरव ने सोचा कि यह सब बाद में करूंगा पहले भाइ का सामान घर पहुंचा देता हूं। सौरव ने आकाश के कपड़े वगैरह समेट लिया और बाहर चला आया। बाहर आया तो सामने वाली आंटी के घर पर उसने एक सीसीटीवी कैमरा देखा। उसे एक सुराग मिल गया ये पता लगाने का कि घर में कौन आया था? वो मुस्कराया और दरवाजा बंद करके जाने लगा। उसकी नजर एक काजग पर पड़ी जो बड़े अच्छे से वहाँ लगे फूलों में फंसाकर रखा हुआ था। सौरव ने जब उसे खोला तो पता चला कि यह... रिया ने लिखा है आकाश के लिए। उसने उस कागज़ को लपेट कर जेब में रख लिया और वहाँ से आकाश का बाइक लेकर निकल गया। सामान को घर पर छोड़ कर वो वापस वहीं जाने लगा जहाँ उसने आकाश के घर के बाहर कैमरा देखा था। इतने में उसकी मम्मी सामने आ गयी।

मम्मी- अरे बेटा कहां जा रहे हो?

सौरव- कहीं नहीं मम्मी बस अभी आता हूं थोड़ा काम है।

मम्मी- लेकिन इतनी जल्दी? अभी तो बाहर से आए ना?

सौरव- हां वो कुछ काम भुल गया था अभी आता हूं।

मम्मी- ठीक है लेकिन जल्दी आना।

सौरव- हां।

सौरव निकल गया। कुछ देर बाद वो वहाँ पर पहुंचा। बाहर से उसने आंटी का दरवाज़ा खटखटाया। आंटी बाहर आई।

आंटी- जी बोलिए!

सौरव- अ मुझे पुछना था कि ये जो बाहर कैमरा लगा है यह चालू है?

आंटी- जी हां चालू है।

सौरव- जी मुझे चेक करना था कि सुबह छः बजे से लेकर नौ बजे तक ये सामने वाले घर में कौन-कौन आया है?

आंटी- सामने वाले घर में? लेकिन आपको उससे क्या लेनादेना है?

सौरव- जी देखिए यहां से एक सामान चोरी हो गया इसलिए मुझे जानना है कि यहां कौन-कौन आया था?

आंटी- लेकिन आप हैं कौन और ये बात तो आकाश को पुछना चाहिए था ना?

सौरव- जी मैं उन्हीं का छोटा भाइ हूं। इस समय वो मेरे घर पर हैं और इसी बीच ये चोरी हुई है।

आंटी- हाँ ठीक है अंदर आओ।

सौरव- जी।

आंटी- (एक कैबिन खोलते हुए) ये लो ये रहा कम्प्यूटर। इसमें तुम सारी रिकार्डिंग्स देख सकते हो।

सौरव- जी थैंक्स आंटी।

आंटी- कोई बात नहीं।

सौरव ने सारी रिकार्डिंग्स अपने पैन ड्राइव में कॉपी कर ली और वहाँ से बाहर निकल आया। तभी उसे रिया की चिट्ठी की याद आई। उसने अपने जेब से चिट्ठी निकालकर उसे

पढ़ना शुरू किया।

“यह मैं हूँ, रिया। मैं जानती हूँ कि तुम यही सोच रहे होगे कि मैं ये चिट्ठी क्यों यहाँ रखी हूँ? बात यह है कि मैं वापस जा रही हूँ अपने गाँव क्योंकि मैं तुम्हें फिर किसी मुसीबत में नहीं डालना चाहती। अगर मैं यहाँ रुकी तो वो मेरे जरिए तुम तक पहुँच जाएंगे इसलिए मैं जा रही हूँ तुमसे दूर। मैं खुशनसीब हूँ कि मुझे तुम्हारा प्यार मिला और दीदार भी पर बहोत बदनसीब भी क्योंकि तुम्हारा साथ नहीं मिला। तुम्हारे साथ बिताए एक-एक लम्हे बहोत याद आएंगे। मेरा यहाँ आने का एक ही मकसद था तुम्हें तुम्हारे अतीत से रूबरू कराने। तुम्हें तुम्हारे परिवार के बारे में बताना। तुम नैनीताल के रहने वाले हो। तुम्हारे माता-पिता सब वहीं के रहने वाले हैं। पर यहाँ तुम आने की भूल मत करना। जितना तुम्हें यहाँ चाहने वाले नहीं हैं उतना तुम्हें मारने वाले हैं। जो भी करना सोच समझ के करना।”

सौरव हक्का-बक्का हुए बैठा था। इस चिट्ठी को पढ़ने के बाद उसके आँखों से आँसू तो आए पर उसे खुशी भी हुई कि “भाइ का अतीत लगभग सामने आया।

उनके पास भी परिवार है, अब वो अपने आप को कभी अकेला महसूस नहीं करेंगे। पर दिक्कत इस बात की है कि इस चिट्ठी में मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा है।” उसे इसमें छुपे कुछ और सुराग भी दिख रहे थे जो वो खुद समझ कर चुप-चाप बैठा रहा। फिलहाल वो इस बात को आकाश से नहीं बता सकता था क्योंकि उसे यकीन था कि जैसा यह सब दिखाई दे रहा है वैसा है नहीं। यहाँ रिया आकाश भईया को बचा कहां रही है? अगर बचाना होता तो चुपचाप यह कह देती कि मैं जा रही हूँ मुझे ढुंढने की कोशिश मत करना। बल्कि उल्टा ये उन्हें उनके अतीत के बारे में सब कुछ बताकर उन्हें वहीं जाने के लिए उकसा रही है जहाँ उनके दुश्मन भरे पड़े हैं।

बस यही यह बात है जो सौरव के दिमाग में एक निशाने की तरह बैठ गया। उसने यह बात किसी से भी नहीं बताया क्योंकि अगर वो ये बात बता देता तो आकाश एक पल बिताए बिना वहाँ चला जाता था जहाँ का पता नहीं कि दुश्मन कौन है?

वो वहाँ से घर चला आया। सौरव का चाल चलन बदला हुआ देख कर उसकी मम्मी पुछ बैठी।

मम्मी- क्या हुआ बेटा? गये थे आंधी की तरह और आ रहे हो कछुआ की तरह?

सौरव- मैं मजाक के मुड में नहीं हूँ मम्मी।

मम्मी- अच्छा इसका मतलब किसी लडकी ने फिर से मना कर दिया?

सौरव- नहीं मम्मी।

मम्मी- तो क्या हुआ?

सौरव- कुछ नहीं।

मम्मी- क्या बात है? रोज आते थे तो खुद ही सब बातें उगल देते थे आज पुछने पर भी नहीं बता रहे हो?

सौरव- कुछ नहीं बस ऐसे ही थोडा थक गया हूँ इसलिए ऐसा लग रहा हूँ। मैं सोने जा रहा हूँ।

मम्मी- पर खाना तो खा लो।

सौरव- बाद में खा लूंगा।

मम्मी- पता नहीं ये लडका क्या करेगा?

अगले दिन सुबह आकाश और सभी के लिए ये खुशियों का सवेरा था। सुबह-सुबह सब अपने-अपने कामों में व्यस्त थे तभी डाक्टर सक्सेना का फोन आया। सौरव ने फोन उठाया।

सौरव- हैलो!

डाक्टर सक्सेना- हाँ मैं डाक्टर सक्सेना बोल रहा हूँ।

सौरव- हाँ अंकल मैं सौरव बोल रहा हूँ।

डाक्टर सक्सेना- बेटा तुम्हारे पापा हैं क्या?

सौरव- जी हाँ अंकल बस एक मिनट रुकिये मैं अभी बुलाता हूँ, पापा..?पापा..?

खन्ना अंकल- हाँ?

सौरव- यह आपके लिए फोन है।

खन्ना अंकल- हाँ आता हूँ।

खन्ना अंकल आए और डाक्टर सक्सेना से बात करने लगे।

सौरव सोच रहा था कि ऐसी कौन सी बात है जिसके लिए डाक्टर सुबह-सुबह फोन किये हैं। वो उप्पर गया और दुसरा वाला टेलिफोन उठाकर उनकी बातें सुनने लगा।

खन्ना अंकल- जी सक्सेना साहब गुड मॉर्निंग।

डाक्टर सक्सेना- गुड मॉर्निंग गुड मॉर्निंग।

खन्ना अंकल- कहिये इतनी सुबह-सुबह कैसे?

डाक्टर सक्सेना- बस सोचा आपको सुबह-सुबह गुड न्यूज सुना दूं क्या पता थोडा टेंशन कम हो जाए?

खन्ना अंकल- गुड न्यूज? किसके आकाश के बारे में?

डाक्टर सक्सेना- जी हाँ। ठीक अभी-अभी आकाश के सीटी स्कैन का रिपोर्ट आया है।

खन्ना अंकल- सब ठीक-ठाक तो है न?

डाक्टर सक्सेना- अरे बिल्कुल! मैं तो ये रिपोर्ट देखकर बहोत हैरान हूँ। जिस तरह से आकाश का घाव था लगता नहीं था कि वो ठीक हो पाएगा लेकिन इन पिछले छह सालों में इसके दिमाग में काफी सुधार हुआ है। घाव भी लगभग भर चुके हैं।

खन्ना अंकल- जब घाव भर चुके हैं तो इसे चक्कर वगैरह क्यों आया था?

डाक्टर सक्सेना- इसमें ऐसा ही होता है। जब अचानक आपको किसी चीज की याद या कैसी भी यादें जो आपके अतीत से जुड़ी हैं जब आपको याद आने लगती हैं तो एक असहनीय दर्द होता है जो बर्दाश्त से बाहर होता है और दिमाग इसे सहन नहीं कर पाता इसलिए चक्कर आ जाता है। लेकिन अब कोई डर की बात नहीं। वो बिल्कुल ठीक है। जब भी उसके सामने कोई जाना पहचाना चेहरा सामने आएगा या फिर कोई चीज जो उसके साथ पहले कभी हुआ होगा और वो फिर से इसके साथ होगा तो उसे उस घटना के बारे में याद आ सकता है लेकिन हर एक चीज नहीं, हर एक चीज याद आने में काफ़ी वक्त लगेगा।

खन्ना अंकल- मतलब अब आकाश की याददाश्त वापस आ सकती हैं।

डाक्टर सक्सेना- हाँ बिल्कुल।

खन्ना अंकल- जी शुक्रिया डाक्टर। ऐसी खुशखबरी देकर आपने तो हमारा चिंता ही दूर कर दिया।

डाक्टर सक्सेना- ठीक है समय मिलेगा तो रीपोर्ट लेकर जाइयेगा।

खन्ना अंकल- अब हम क्या करेंगे उस कागज का, रिपोर्ट तो आपने ही हमें सुना दिया!

डाक्टर सक्सेना- हा हा। ठीक है जश्र मनाइए।

खन्ना अंकल- जी बिल्कुल।

फोन कट गया। खन्ना अंकल बहोत खुश हुए। उस तरफ सौरव ने भी फोन रख दिया। सौरव को इस बात का पता चल चुका था कि अब भाइ को धीरे-धीरे सब पता चल जाएगा कि वो कौन हैं और कहाँ से आए हैं? सौरव भी खुश था लेकिन उसे एक बात की और चिंता थी कि डाक्टर ने यह भी कहा कि सब कुछ नहीं याद आएगा उन्हें, सब कुछ याद आने में काफ़ी वक्त लगेगा। सौरव ये सोचने लगा कि अगर भाइ को कुछ भी याद आया और वे गांव के लिए निकल गए तो गडबड हो जाएगा क्योंकि हो सकता है उन्हें ये याद ना आया हो कि उनका दुश्मन कौन है? सौरव ने सोच लिया कि इससे पहले भाई को कुछ याद आए उसे इस कहानी के जड तक जाकर पता लगाना होगा कि वो दुश्मन कौन है?

खैर फिलहाल तो पूरा परिवार खुश था। सौरव निचे आया तो देखा कि सभी लोग खिलखिला रहे हैं पता नहीं कहाँ जाने की बातें कर रहे हैं।

सौरव- अरे पिंकी क्या बात है? सब लोग बडे खुश नजर आ रहे हैं और कहां जाने की बात हो रही है?

सौरव ने ऐसा बर्ताव किया जैसे उसे कुछ पता ही ना हो।

पिंकी- बात ही कुछ ऐसी है।

सौरव- अच्छा? जरा मुझे भी तो बताओ।

खन्ना अंकल- बात यह है कि डॉक्टर का फोन आया था और उन्होंने कहा कि आकाश बिल्कुल ठीक है।

सौरव- क्या सच में?

पिंकी- हाँ, तो इस खुशी के मौके पर हम सब कहीं घुमने जाने की बात कर रहे थे।

सौरव- कहां?

पिंकी- वहीं जहाँ हर साल पापा जाते हैं ट्रिप पर। इस बार हम लोग भी चल रहे हैं।

तब तक आकाश भी वहाँ आ गया।

आकाश- क्या हुआ कहां जाने की बात हो रही है?

पिंकी- ट्रिप पर।

आकाश- अच्छा। लेकिन तुम्हारे फ्रेंड का बर्थडे?

पिंकी- बर्थडे तो कल शाम को है तब तक हम सब वापस आ जाएंगे।

आकाश- अरे हां बर्थडे तो कल है ना?

पिंकी- क्या बात है भईया आपको बर्थडे में जाने की बडी जल्दी है?

आकाश- कुछ भी बोलते रहती है। ठीक है आप लोग प्लैन बनाइए। मै गैरेज जा रहा हूँ।

खन्ना अंकल- हमें अभी निकलना है।

आकाश- क्या अभी?

खन्ना अंकल- हाँ अभी। सब लोग जाकर तैयारी करो।

आकाश चला गया।

सौरव- अऽ पापा आकाश भईया आपको वहीं मिले थे ना जहाँ हम जा रहे हैं?

खन्ना अंकल- हां, वहीं मिला था।

सौरव- जरा बताइए ना आपने इनको कैसे देखा?

खन्ना अंकल- मैंने नहीं देखा। मैं और तुम्हारी मां दोनो फिशिंग कर रहे थे। एक लडकी थी वहीं पर, उसका घर भी शायद नजदीक ही था क्योंकि वो अक्सर वहीं पर आकर बैठती है। कई बार मैं उसे वहीं पर देखा हूँ। उसी ने आकाश को देखा और मुझे आवाज लगाई। एक किनारे में पड़ा हुआ था वो, सारे कपड़े फटे हुए थे, कमर में खंजर लगा हुआ था, सांसें रूक चुकी थीं, धडकन भी धीमी चल रही थी बड़ी ही नाजुक हालत थी। वो लडकी बहोत होशियार थी बिना वक्त जायर किये उसे पलटकर उसके पेट का पानी निकालने लगी और कुछ देर बाद आकाश सांस लेने लगा।

सौरव- क्या आपको उनके पास से कुछ नहीं मिला?

खन्ना अंकल- नहीं कुछ नहीं मिला।

सौरव- फिर क्या हुआ?

खन्ना अंकल- उसके बाद हम उसे हास्पिटल ले गये।

सौरव- क्या वो लडकी वहां पर अब भी होगी?

खन्ना अंकल- क्यों तुम्हें उससे क्या करना है?

सौरव- कुछ नहीं बस ऐसे ही पुछ रहा था।

खन्ना अंकल- वहां जाकर कुछ उल्टा सिधा कारामात मत करने लगना।

सौरव- जी।

कुछ देर बाद आकाश तैयार होकर आ गया।

आकाश- तब चलें?

पिंकी- हाँ हाँ बिल्कुल वैसे भी सौरव तो अब कुछ ज्यादा ही जल्दी में होगा।

सौरव- तु यहाँ क्यों बैठी है जा अपना मेक अप का पिटारा ले ले।

आकाश- अब तुम लोग फिर से झगडा मत करने लगा।

खन्ना अंकल- चलो अब जल्दी चलते हैं नहीं तो पहुंचते-पहुंचते ही शाम हो जाएगा।

सब लोग ट्रिप के लिए निकलने लगे। बाहर आते ही आकाश को अपनी बाइक याद आई और सामने देखा तो उसकी बाइक खड़ी थी। अब वह सौरव से पूछने ही वाला था कि तुम बाइक कब लेकर आये तब तक सौरव ने ही जवाब दे दिया।

सौरव- इसके बारे में सोचिये भी मत क्योंकि इसे मैं चलाने वाला हू। आप पापा का कार ही चला लो।

आकाश- हाँ लेकिन तुमने बाइक लाया कब?

सौरव- कल शाम को आपके घर गया था तभी लाया।

खन्ना अंकल- चलो तब चलें।

4

एक नए खोज की ओर

सौरव ने बाइक स्टार्ट किया और आकाश ने कार फिर सभी निकल गये। सच में जितना मजा मंजिल तक पहुंचने के बाद नहीं आता उससे ज्यादा मजा तो उस सफर में आता है। मंजिल तो सिर्फ एक लक्ष्य है जहाँ पहुंचने के बाद कोई मक्सद नहीं बचता लेकिन सफर एक शुरूआत है जहाँ से हमें बहुत कुछ देखने को मिलता है सोचने को मिलता है समझने को मिलता है। यह वो चीज है जिससे हमें हर एक चीज के बारे में अनुभव मिलता है। इसमें कुछ क्षण ऐसे भी आते हैं जो हमें मंजिल से भी ज्यादा अच्छे लगने लगते हैं।

सौरव और आकाश ऐसे ही उस सफर का मजा ले रहे थे। कभी सौरव आकाश से आगे निकल जाता तो कभी आकाश उससे आगे निकल जाता। दोनों के बीच जैसे बाजी लगी हो कि देखते हैं पहले कौन पहुंचता है? जोश में आकर सौरव ने चौथा गियर लगाया, क्लच छोड़ा और एक्सीचिट्टी को पूरा घुमा दिया। उसकी बाइक एक सौ बीस की रफ्तार से भागने लगी और कब वो सामने से गायब हो गया पता ही नहीं चला। कुछ देर तक वो कहीं दिखा ही नहीं, सब लोग परेशान हो रहे थे कि आखिर ये गया कहा? आकाश के दिमाग में भी ऐसे की कुछ उल्टे- सीधे खयाल आने लगे। वो भी सोच में पड़ गया कि सौरव कहाँ चला गया? इस तरह से सौरव का ना दिखाइ देना, आकाश का इस तरह से उसे ढुंढना उसे लग रहा था कि यह जो हो रहा है ऐसा पहले उसके साथ हो चुका है। आकाश को बारिकी से कुछ दिखाइ देने लगा। ऐसी ही कुछ जंगल झाड़ियां थीं, उसमें आकाश किसी को तलाश रहा है, कोई वहां था जो उससे यहाँ से वहाँ पेड़ों के पीछे-पीछे छिप रहा था। उसे उसका चेहरा नहीं दिख पा रहा था। बस जब वो यहाँ से वहाँ भागती तो उसके लम्बे बाल, लहराता हुआ दुपट्टा ही दिखाइ दे पा रहा था अगर कुछ सुनाइ दे रहा था तो वो थी उसकी हंसी। उसका दुपट्टा ऐसे लहरा रहा था मानों जैसे आसमान में पतंग सरसरा रहा हो, उसकी खिलखिलाहट से पूरे जंगल में शोर हो रहा था, बिल्कुल ख्वाब की तरह। वो इसे उसी नाम से उसे बुला रही थी, अर्जुन! मुझे पकड़ कर दिखाओ!

आकाश उसे पकड़ने की कोशिश नहीं कर रहा था क्योंकि वो उसे पकड़ना नहीं चाहता था सिर्फ उसे महसूस करना चाहता था, दूर से देखना चाहता था वो जहाँ-जहाँ जाती उसके पीछे-पीछे भागना चाहता था। वो यह ख्वाब खुली आंखों से देख रहा था इससे पहले कि

गाड़ी सड़क से निचे उतरती आकाश ने ब्रेक मारा और गाड़ी जगह पर ही खड़ी हो गई। सब लोग डर गए।

खन्ना अंकल- क्या हुआ तुम्हें? उन्होंने तेज सांसे लेते हुए पुछा।

आकाश- क्या पता कुछ... कुछ दिखाई दिया।

खन्ना अंकल- क्या दिखाई दिया?

आकाश- जैसे हम अभी सौरव को ढूँढ रहे थे वैसे ही मैं उस लड़की को ढूँढ रहा था, मुझसे छिप रही थी और कह रही थी दम है तो पकड़ कर दिखाओ।

खन्ना अंकल- तुमने पहचाना कि कौन था?

आकाश- नहीं मैं उसे देख नहीं पाया सिर्फ उसके झुमते बाल और उसका लहराता दुपट्टा ही दिखा।

मन कर रहा था कि उसे देखते रहूँ उसके पिछे-पिछे चलते रहूँ। क्या पता वो मुझे मेरी मंजिल तक ले जाए?

खन्ना अंकल- हऽ तुम वहाँ अपनी मंजिल के पिछे जा रहे थे और हम यहाँ जंगल के नीचे।

आकाश, खन्ना अंकल का जोक सुनकर हंस दिया।

खन्ना अंकल- ठीक है चलो पता नहीं यह सौरव कहां निकल गया?

कुछ दूर आगे जाने के बाद सौरव मिला। सड़क के किनारे बाइक लगाए खड़ा था। इन लोगों को देखते ही हाथ हिलाने लगा जैसे कि बता रहा हो कि देखो मैं तुमसे पहले यहाँ तक पहुँच गया हूँ। उनके पास आने के बाद भी शायद उनसे यही बात कहने वाला था लेकिन गाड़ी रूकती तब ना! गाड़ी नजदीक आयी और आगे भी निकल गयी। सब हंसने लगे “बेचारा सौरव अपना तारीफ नहीं कर पाया।” फिर सौरव ने भी बाइक स्टार्ट किया और सबके साथ चलने लगा। सफर का मजा लेते-लेते कब समय निकला पता ही नहीं चला। सभी उस अद्भुत जगह पर पहुँच चुके थे। बहोत ही उतावले थे सभी। ऐसे उतर रहे थे मानो इंकम टैक्स का छाप पड़ा हो। जगह भी तो ऐसी थी। हरे भरे पहाड़ों के बीच से आती नदी, नदी के उपर एक छोटा सा लकड़ी का बनाया हुआ पुल जिसपर बैठो तो आसानी से आधा पैर पानी में डूब जाए। ऐसे जगह पर घुमने के लिए भला कौन उतावला नहीं होगा?

मस्ती करने के लिए इतने विकल्प थे कि पहले क्या करें किसी को समझ में नहीं आ रहा था। खन्ना अंकल यहाँ पहले भी आ चुके थे इसलिए सब उनके इशारे का इंतजार कर रहे थे। सब ने पुछा कि पहले क्या करें?

खन्ना अंकल- अऽ हम यहाँ पर मौज-मस्ती के लिए आए हैं इसलिए जिसके मन में जो आए वो करो।

खन्ना अंकल और मिसेस खन्ना दोनो लोग फिशिंग करने लगे। आकाश, सौरव और पिंकी पुल पर खड़े होकर अभी भी सोच रहे थे कि क्या करें? तीनों साथ में खड़े ही थे और आपस में इसी बारे में बातचीत भी कर रहे थे। सामने से इन्हें कोई देख रहा था। सौरव की नज़र उस पर पड़ी और ये भी उसे देखने लगा। इसने सोचा कि पहली बार कोई लड़की मिली है जो मुझे इतने ध्यान से देख रही है। क्यों ना इन दोनो को भी दिखाऊँ? उसने दोनों को बताया।

सौरव- वो देखो वो लडकी मुझे कितना भाव दे रही है? काली सी आंखें, लम्बे से बाल, गोरा रंग, चेहरे का कट, ऐसा लगता है जैसे परी उतर आयी हो।

पिंकी- हाँ यार और वो हमारे तरफ ही आ रही है। कहीं वो तेरे लिए तो नहीं आ रही है?

सौरव- लगता है तु सही ही कह रह है। देख ना कैसे घूरते हुए आ रही है?

आकाश- डर मत कुछ नहीं होगा।

वह सौरव के तरफ देखते हुए आ रही थी। सौरव ने आकाश के पीछे धीरे-धीरे अपने आप को छुपा लिया। जैसे वह नजदीक आई अचानक आकाश के तरफ देखने लगी।

सौरव ने देखा कि अब वो उसे नहीं आकाश को देख रही है तो वो फिर से सामने आ गया।

वह आकाश को ऐसे देख रही थी जैसे वो उसे कभी देखी है। वह उससे पूछने लगी।

“शायद मैं आपको कहीं देखी हूँ”?

आकाश- जी नहीं मैं तो यहां पर पहली बार आया हूँ।

“जी नहीं मैं आपको यहीं पर देखी हूँ। आप खन्ना अंकल के साथ रहते हैं ना”? उस लडकी ने पुछा।

उसके बात से सभी चौंक गए।

आकाश- आपको कैसे पता कि मैं खन्ना अंकल के साथ रहता हूँ?

“शायद आपको खन्ना अंकल मेरे बारे में बताएं नहीं रहेंगे, मैं उर्वशी हूँ। मैंने और खन्ना अंकल ने ही आप को बचाया था।

आकाश नर्वस हो गया और उर्वशी को एकटक देखने लगा। सौरव और पिंकी को भी झटका लगा।

पिंकी- भाई! भाई?

आकाश- हमम?

पिंकी- क्या हुआ?

आकाश- कुछ नहीं। बस सोच रहा था कि इससे पूछ लुं कि मैं कौन हूँ? फिर सोचा कि जब खन्ना अंकल को भी नहीं पता कि मैं कौन हूँ तो इसे कैसे पता होगा?

आकाश उदास नजरों से उसे देख रहा था। सौरव अब समझा कि यह वही लडकी है जिसके बारे में पापा बता रहे थे।

उर्वशी- खैर बताइए कैसे हैं आप?

आकाश- ठीक हूँ पहले से तो बेहतर हूँ।

सौरव- और हम लोग भी ठीक हैं।

उर्वशी- अऽ आप कौन?

सौरव- मैं सौरव, खन्ना अंकल का बेटा।

उर्वशी- ओह! अच्छा अंकल कहा हैं?

सौरव को जैसे तैसे एक मौका मिला था बात बढाने का, ऐसा मौका वो छोडता कैसे?

सौरव- मैं उन्हीं के पास जा रहा था चलिए साथ में चलते हैं।

उर्वशी- चलो।

दोनों साथ में जाने लगे।

थोडा दूर आगे चलने के बाद...

उर्वशी- आपके पापा ने आपके बारे में बिल्कुल सही कहा था।

सौरव को चार सौ चालीस वोल्ट का झटका लगा। वो डर रहा था ये सोचकर कि कहीं मेरे सारे कारामात उन्होंने इससे तो नहीं कह दिये?

सौरव- अच्छा? क्या कहा था उन्होंने मेरे बारे में?

उर्वशी- यही कि आप एक नम्बर के फ्रॉड हो, खुबसूरत लडकी देखते ही उसके पिछे पड जाते हो।

सौरव को जिस बात का डर था आखिर वही हुआ।

सौरव- न न नहीं-नहीं मैं ऐसा नहीं हूँ य या तो अ आपके सुनने में कोइ ग ग गलती हुआ होगा य या या तो उनकी जुबान फिसल गयी होगी।

उसका यह भाषा सुनकर उर्वशी जोर जोर से हंसने लगी हा हा हा हा ओह।

सौरव परेशान नजरों से उसे देख रहा था।

सौरव- क क्या हुआ? क्यों हंस रही हो?

उर्वशी अपनी हंसी रोकते हुए...

उर्वशी- आपका भाषा हा हा हा इतना... इतना हकला रहे हो तो हंसी तो आनी ही है।

इतना क्यों डर रहे हो? डरने की जरूरत नहीं मैं मजाक कर रही थी।

सौरव ने चैन की साँस ली।

सौरव- तब और क्या कहा उन्होंने मेरे बारे में?

उर्वशी- सच बताऊं या झूठ?

सौरव- सच बताओ।

उर्वशी- उन्होंने आप के बारे में कुछ नहीं बताया।

सौरव- हां कुछ ढंग का काम करूंगा तब तो बताएंगे। वो देखो दोनो जन वहां पर हैं। जाओ, मिल लो।

उर्वशी- क्यों आप नहीं चल रहे हैं क्या?

सौरव- नहीं, क्योंकि अगर उन लोगों ने मुझे तुम्हारे साथ देखा तो तुम्हारे सामने मेरी बुराई करना चालू कर देंगे। इसलिए जाओ तुम मिल लो।

उर्वशी चली गई।

उर्वशी- और अंकल एक भी मिली कि नहीं?

अंकल- (पीछे मुड़कर) अरे उर्वशी बेटा आओ-आओ अभी तक तो नहीं मिली। वैसे सौरव तुम्हें कहाँ मिल गया?

उर्वशी- आप ने कब देख लिया? वो आकाश और सौरव वहीं एक साथ खड़े थे तो मैं आकाश का हाल चाल ले रही थी वहीं सौरव से भी मुलाकात हो गयी।

अंकल- बेटा थोड़ा सम्भल के रहना उससे बहुत ही बदमाश है!

उर्वशी- अच्छा? पर अंकल मुझे तो ऐसा नहीं लगता। बल्कि मुझे तो लगता है कि वो साफ दिल वाला इंसान है जो किसी के बारे में गलत नहीं सोचता।

खन्ना और मिसेज खन्ना दोनो एक दुसरे से इशारे में बात कर लिए कि यह तो गयी काम से।

उर्वशी- आप को पता है मुझे देख कर वो आकाश के पिछे खुद को छुपाने की कोशिश कर रहा था, आपका नाम लेकर जब मैं झूठ बोली तो वो हकलाने लगा। अब आप ही बताइए

जो लडका अपने पापा का नाम सुनकर डर से हकलाने लगे, किसी लडकी को देखकर अपने आपको छुपाने की कोशिश करे वो बदमाश कैसे हो सकता है।

खन्ना और मिसेस खन्ना के पास इसके लिए कोई जवाब ही नहीं था।

उर्वशी- ठीक है आप सोचिए समझीए मैं चलती हूँ।

अब खन्ना और मिसेस खन्ना आपस में वार्तालाप करने लगे कि अब तो इस लडकी कोई नहीं समझा सकता।

उर्वशी एक जगह खडी होकर चारो तरफ सौरव को तराश रही थी।

उर्वशी- कहां गया कहीं दिखाई नहीं दे रहा है अभी तो यहीं था?

यहाँ-वहाँ नजरें घुमाने के बाद आखिर उर्वशी की नजर सौरव पर पड गयीं। सौरव उसी पुल पर खडा था बडे ही ध्यान से पूर्व की तरफ से आए उस नदी को देख रहा था जिसके बीच में कयी सारे पहाड और घाटियां नज़र आ रही थीं।

उर्वशी- क्या बात है बडी ध्यान से इन घाटियों को देख रहे हो?

सौरव-(गहरी साँस भरते हुए) हां इनकी बात ही कुछ ऐसी है।

उर्वशी- अच्छा? क्या बात है इनकी जरा मुझे भी बताओ।

सौरव- न जाने कितनी सदियों पुरानी होगी यह घाटियां और इसके बीच बहती ये नदी, न जाने कितनी कहानियाँ छुपी होंगी इसमें।

उर्वशी- वो तो है, पर मुझे इसमें छुपी एक भी कहानी पता नहीं। तुम्हें पता है?

सौरव- इसके सामने न जाने कितने लोग अपनी जिंदगी बिताए होंगे उन लोगों की कहानी छुपी है इसमें, एक शख्स जो उस दूर घाटियों से बहकर आया है उसकी भी कहानी छुपी है इसमें।

उर्वशी- कौन से शख्स की कहानी? आकाश की बात तो नहीं कर रहे हो?

सौरव- हाँ मैं उन्हीं की बात कर रहा हूँ। वो इसी घाटियों के पिछे कहीं दूर से आए हैं।

इनकी भी कोई कहानी है जो हम सबसे छुपी हुई है लेकिन ज्यादा दिनों तक नहीं क्योंकि मैं इस कहानी को ढूँढ कर रहूंगा, इस कहानी को मैं इन घाटियों के बीच दफन नहीं होने दूंगा।

उर्वशी- अच्छा वो कैसे?

सौरव- देखूंगा। कोई ना कोई रास्ता तो मिल ही जाएगा।

उर्वशी- मैं कुछ मदद करूँ?

सौरव- तुम क्या मदद करोगी?

उर्वशी ने अपने जेब से एक कागज निकाली और सौरव को दे दी।

सौरव- ये क्या है?

उर्वशी- पढ के देखो।

सौरव उस कागज को खोलकर पढने लगा।

“मैं किसी की तलाश कर रही हूँ। आप सोच रहे होंगे कि इस तरह से कागज नदी में बहाकर मैं किस चीज़ की तलाश कर रही हूँ? मेरे पास इसके अलावा कोई दुसरा चारा नहीं है। मैं ये कागज इस लिए इस नदी में बहा रही हूँ ताकि ये कागज आप तक पहुंचे और आप उस इंसान के बारे में मुझे बता सकें जो कुछ महीने पहले मुझसे दूर हो चुका है। उसका नाम है अर्जुन। मैं और अर्जुन एक दुसरे से प्यार करते हैं। एक दुर्घटना के वजह से

हम एक दुसरे से अलग हो गए। वो इसी नदी में बह गया था। अगर आपको ऐसा कोई मिला है तो कृपया करके उसे बता दीजिए कि मैं उसका इंतजार कर रही हूँ।”

उर्वशी- ये लो एक और कागज है।

“मैं आज भी उससे बहोत प्यार करती हूँ और मुझे विश्वास है कि उसे कुछ नहीं हुआ होगा। होगा भी कैसे उसने मेरे साथ जीने मरने का वादा जो किया था और वो अपने वादे कभी नहीं भुलता। मैं जिंदा हूँ तो वह कैसे मुझसे जुदा हो सकता है? इसलिए मेरी आपसे गुजारिश है कि आप यह बात अर्जुन तक पहुंचा दें। मैं जानती हूँ वो जरूर आएगा। रिया..

सौरव- यह तो रिया है।

उर्वशी- क्या तुम इसे जानते हो?

सौरव- हाँ, लेकिन?

उर्वशी- क्या लेकिन?

सौरव- मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है।

उर्वशी- क्या बात है?

सौरव- रिया तो आकाश भईया के साथ में थी अभी कल ही तो गयी वो वापस, वो भला चिट्ठी क्यों लिखेगी?

उर्वशी- अरे बुद्धु यह चिट्ठी तीन साल पुरानी है और रिया आकाश से कब मिलीं?

सौरव- करीब चार-पांच दिन पहले।

उर्वशी- फिर।

सौरव- बात वो नहीं है बात यह है कि रिया को कैसे पता चला कि आकाश यहां पर हैं? मान लो पता चला भी और वो यहां आइ भी तो उसने आकाश भाइ को अपने बारे में बताया क्यों नहीं? बताया भी तो यहाँ से वापस जाने के बाद ताकि आकाश भईया उसके पिछे-पिछे वहां तक जाएं जहाँ वो लेकर जाना चाहती है। इस खत में देखो साफ-साफ लिखा हुआ है कि आकाश आकर मुझे यहां से ले जाए। जो लोग प्यार करते हैं वो हमेशा करीब आने की बात करते हैं। दोनों चिट्ठी में अलग-अलग मकसद दिख रहा है। एक मे करीब आने की और दुसरे में वहाँ ले जाने की जहां उन्हें खतरा है।

उर्वशी- क्या तुमने देखा है रिया को?

आकाश- हाँ।

उर्वशी- तो अब?

सौरव- इस कहानी को सुलझाने के लिए लगता है मुझे लम्बे सफर पर जाना होगा।

उर्वशी- लम्बे सफर पर? वैसे मैं भी तैयार हूँ लम्बे सफर पर जाने के लिए।

सौरव- लेकिन तुम क्यों जाओगी?

उर्वशी- क्योंकि मैंने तुम्हारी मदद की है इसलिए कहानी को सुलझाने के लिए हमें एक साथ इस सफर पर जाना होगा। पर एक बात समझ में नहीं आ रहा है कि हम करने क्या जाएंगे?

सौरव- यह पता लगाने के लिए कि यह खत कहां से आते हैं, इसे कौन भेजता है और वो कौन है? तुम सच में चलने वाली हो?

उर्वशी- हां बिल्कुल वैसे भी छः साल से इस कहानी ने मुझे तंग कर रखा है। वैसे हूँदेंगे कैसे?
सौरव- सबसे पहले इस नदी के आस-पास जितना भी गांव है हम वहाँ पूछताछ करेंगे कि ऐसी किसी लड़की को जानते हैं जो अक्सर नदी में कागज़ वगैरह बहाती है या यहां पर अजनबी है या फिर उसका नाम रिया है।

उर्वशी- और अगर वो नहीं मिली तो?

सौरव- तो हम इस रिया के गांव जाएंगे और वैसे भी रिया मुझे नहीं जानती है। उसे हमपर शक भी नहीं होगा।

उर्वशी- हुमममम यह आइडिया सही है। कब जाना है?

सौरव- दो-तीन दिन में।

उर्वशी- ओके। तो अब क्या करें?

सौरव- अब? सोच रहा हूँ पापा को मछली पकड़ने में थोड़ी मदद कर दूँ। तुम्हे पानी के अन्दर जाकर मछली पकड़ने आता है?

उर्वशी- मुझे, बिल्कुल नहीं। तुम पकड़ लेते हो?

सौरव- हाँ।

उर्वशी- लेकिन इतनी देर तक सांस कैसे रोकते हो?

सौरव- (मुस्कुराते हुए) साथ चलोगी तो खुद समझ जाओगी।

उर्वशी- कहीं मुझसे सांस लेने का इरादा तो नहीं?

सौरव- नहीं नहीं बिल्कुल नहीं वो तो एमरजेंसी के लिए कहीं बीच में ही सांस रूक गयी तो?

उर्वशी- ओह सेफटी! काफी स्मार्ट हो। तो चलें।

सौरव- अरे क्या तुम सच में तैयार हो गई मै तो मजाक कर रहा था। मैं अकेला ही काफी हूँ बस देखते जाओ मैं कैसे मछली पकड़ कर आता हूँ।

इतना कहकर सौरव ने अपना पैंट शर्ट निकालकर फेंक दिया और पानी में कूद गया।

उर्वशी- मुझे राजी कराकर खुद चला गया?

उर्वशी ने भी अपनी टी-शर्ट निकाल दी फिर बंडी और हाफ पैंट पर ही पानी में कूद गई। आकाश ने दोनों को पानी में कूदते हुए देख लिया।

आकाश- यह तो नाइनसाफी है हमें बिना बताए कहा चल दिए?

आकाश ने भी अपने कपड़े उतारे और छलांग लगा दी पानी में।

पिंकी- भईया मैं भी आइ!

सबका देखा देखी पिंकी में भी जोश उठा और वो भी कूद गई। सब पानी के अंदर थे। अब यहां कोई किसी से कुछ केह नहीं सकता था सिर्फ देख सकता था और इशारा समझ सकता था। सौरव यहां-वहां मछलियों का ठिकाना ढूंढ रहा था और उर्वशी उसके पीछे-पीछे जा रही थी। आकाश उन्हें देख रहा था सोच रहा था इन्हें क्या डिस्टर्ब करू कहीं और चलता हूँ। पिंकी पानी में ज्यादा देर तक अपनी सांस नहीं रोक पा रही थी इसलिए वो पानी के उपर ही तैर रही थी। सौरव को मछलियों का ठिकाना मिल गया। उसने उर्वशी को इशारा किया कि देखो यहां पर मछलियां हैं। सभी मछलियां एक पत्थर के निचे घुम रहीं थीं जिसपर हरे-हरे घास जमे हुए थे। सौरव पिछे से धिरे-धिरे उनके तरफ बढ़ रहा था। सौरव का हाथ

एक मछली के काफी करीब था जैसे सौरव ने उसे दबोचने की कोशिश की वो तुरंत उड़न छू हो गई। अब इससे पहले की सौरव दुसरी मछली को पकड़ता उसका सांस टूटने लगा और वो वापस उपर जाने लगा। उर्वशी ने इशारे में पुछा क्या हुआ? सौरव ने हाथ हिलाते हुए इशारा किया कि मेरा सांस टूट गया है। इससे पहले की सौरव और उपर जाता उर्वशी ने उसका हाथ पकड़कर उसे अपने तरफ खींचा और उसके होंठ में अपना होंठ लगाकर उसे सांस देने लगी। सौरव को सांस मिल गया। अब अगर फिर से सांस टूट भी जाता तो कोई बात ही नहीं था क्योंकि उर्वशी थी न वहां पर उसे सांस ट्रांसफर करने के लिए। अब तो यह दोनो घंटो तक पानी के अंदर रह सकते थे। सौरव और उर्वशी अपने में मस्त थे। जब भी सौरव का सांस टूटता उर्वशी उसे ट्रांसप्लांट कर देती। ऐसे कर-कर के करीब उन दोनो ने पांच छह मछलियां पकड़ लिये थे। अब दोनो बाहर निकल चुके थे।

सौरव- अऽ मदद करने के लिए शुक्रिया।

उर्वशी सिर्फ अपना सर हिलाकर कह दी कि ठीक है।

सौरव- चलो यह मछली पापा को देकर आते हैं।

उर्वशी- हां चलो।

दोनो खन्ना अंकल के पास पहुंचे।

सौरव- क्या हुआ पापा कितनी मछलियाँ पकड़े?

खन्ना अंकल- अब तक तो एक भी नहीं फंसी लेकिन जल्द ही फंसने वाली है।

सौरव- जाने दीजिए अब बाद में फंसाइयेगा यह लिजिए इसमें छह मछलियाँ हैं।

खन्ना अंकल- क्या? मछलियाँ?

उर्वशी- अंकल, सौरव ने पकड़ा अपने हाथों से वो भी पानी के अन्दर जाकर।

खन्ना अंकल- क्या सच में सौरव यह तुमने पकड़ा?

सौरव- हाँ मैं अ वो नहीं वो मैं नहा रहा था सोचा कि क्यों नहीं थोड़ी बहुत मछलियाँ मैं भी पकड़ लूँ? वैसे उर्वशी ने भी मदद किया।

खन्ना अंकल- उर्वशी ने भी मदद किया? वो कैसे?

सौरव- अ वो क्या है कि मैं मछली पकड़कर दे रहा था और वो झोले में लेकर मेरे साथ चल रही थी।

खन्ना अंकल- अच्छा।

सौरव- मैं चलता हूँ अभी सही से नहाया नहीं हूँ।

सौरव चला गया नहाने। उसके जाने के बाद उर्वशी ने खन्ना अंकल के तरफ इशारा किया कि मैं कह रही थी न कि आप इसे जानते नहीं हैं। इतना कहकर वो भी चली गयी। खन्ना अंकल मिसेस खन्ना से कहने लगे, “लगता है आज कल की जेनेरेशन कुछ ज्यादा ही फास्ट हो गई है कब क्या कर देती है समझ में ही नहीं आता। मिसेज खन्ना ने भी आज जवाब दे ही दिया, “समझने की कोशिश करेंगे तब तो समझ में आएगा”!

खन्ना अंकल भी समझ गये कि लगता है हमें ही सुधरने की जरूरत है।

यहाँ-वहाँ घुमते टहलते जैसे तैसे शाम हुई। सौरव की पकड़ी हुई मछलियाँ डिनर बन चुकी थीं। सब का एक अलग-अलग कैम्प था। रात के सन्नाटे में नदी के बहने की आवाज भी

बैकग्राउंड साउंड की तरह सुनाइ दे रही थी। उर्वशी, सौरव, खन्ना अंकल और मिसेज खन्ना और पिंकी आग सेक रहे थे। किसी एक की कमी थी यहां। पता नहीं आकाश कहां था। यहां पर बैठे सभी लोग अपने बातों में व्यस्त थे। बात करते-करते उर्वशी को ख्याल आया कि आकाश कहां है? सुबह में उर्वशी आकाश से सही से बात भी नहीं कर पायी थी। उर्वशी आकाश को ढुंढने लगी। वो कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। वो कैम्प से थोड़ा आगे गयी। आकाश नदी के किनारे चुपचाप बैठा हुआ था।

उर्वशी- (थोड़े दूर से ही) क्या बात है अजनबी, लोगों से दूर यहां छुप कर क्यों बैठे हो?

आकाश- (सिर हिलाते हुए) हाँ सही कहा तुमने। लोगों से दूर यहां छुप कर ही तो बैठा हूँ मैं।

उर्वशी समझ गयी कि आकाश कहां की बातें कर रहा है।

आकाश- तुम्हें पता है पहले तो मेरा एक ही रास्ता था एक ही लक्ष्य था मेरा अतीत, लेकिन अब दो हैं एक मेरा अतीत और दूसरी रिया।

उर्वशी- कौन रिया?

आकाश- रिया? एक हवा का झोंका! जो मेरे जिंदगी में प्यार बनके आइ थी, जिसने इस अन्धेरे के सन्नाटे को सवेरे की रौशनी दिखा दी। जब वो साथ थी तब हर रोज कुछ नया होता था, रोज कहीं ना कहीं घूमने जाते, बारिश में गाते और नाचते। मेरा बहोत ख्याल रखती थी, मैं कहाँ जा रहा हूँ क्या लेकर जा रहा हूँ क्या कर रहा हूँ हर चीज पर नजर रखती थी। बिना पुछे लंच में टिफिन लाकर देती थी, मेरे घर आने का इंतजार करती थी। मैंने उसके आंखों में कभी किसी बात का डर नहीं देखा हमेशा उसे हंसते, बोलते गुनगुनाते हुए ही देखा। शायद मुझे नजर नहीं आया होगा लेकिन उसके अन्दर किसी न किसी बात का डर था जो उसने मुझे बताने के लायक नहीं समझा और चली गयी मुझसे दूर, बिना कुछ बताये।

उर्वशी- क्या बिना कुछ बताए? पर वो तो पत्र छोड़ कर गयी थी न?

आकाश- क्या चिट्ठी? कौन सा चिट्ठी?

आकाश की बात से उर्वशी को समझ आ गया कि सौरव ने यह बात आकाश को नहीं बताई है।

उर्वशी- नहीं वो मेरा मतलब था कि कम से कम उसे चिट्ठी छोड़ कर जाना चाहिए था न?

आकाश उर्वशी के तरफ शक के नजरिए से देख रहा था।

उर्वशी- क्या हुआ?

आकाश- नहीं कुछ नहीं बस ऐसे ही।

उर्वशी- सबसे पहले कहां जाना चाहते हो? रिया के पास या अपने परिवार के पास?

आकाश- पता नहीं लेकिन चाहूंगा की दोनों एक साथ में ही मिलें।

उर्वशी- मैं भी तुम्हारे लिए दुआ करूंगी कि तुम्हें दोनों एक साथ में मिलें।

आकाश- शुक्रिया।

उर्वशी- चलो मैं चलती हूँ तुम भी जल्दी चले आओ क्योंकि पिकनिक पर लोग मस्ती करने आते हैं उदास बैठने नहीं।

उर्वशी चली गई। आकाश को उस पर अब भी शक था, उसे लग रहा था कि सौरव उससे

कुछ छुपा रहा है और उसने उर्वशी को इस बारे में बताया भी है तभी उर्वशी किसी चिट्ठी के बारे में बात कर रही थी। आकाश सोच रहा था कि वो सौरव से इस बारे में जाकर पूछे लेकिन फिर सोचा कि अगर उसे बताना होता तो पहले ही बता दिया होता। आकाश के जहन में इस वक्त सवाल ये था कि सौरव उससे कोई बात क्यों छुपाएगा? यह कहानी ऐसे मोड़ पर आ रुकी थी जहाँ पर सबको एक सच्चाई की तलाश थी। जैसे सौरव को रिया की झूठ की तलाश उर्वशी को इस कहानी के बारे में जानने की तलाश और आकाश को उर्वशी के झूठ की तलाश। बस अब पिंकी के फ्रेंड का बर्थडे गुजरने का इंतजार है।

5

एक पहलू अतीत की

रात गुजर गयी सुबह हुआ। सब अपने-अपने सामान पैक कर रहे थे। जैसे सुबह में कोई उठना नहीं चाहता फिर भी उठना पड़ता है ठीक वैसे ही यहाँ हो रहा था। कोई जाना नहीं चाहता था फिर भी जाना पड़ रहा है। किसी को घर जाने का मन नहीं था फिर भी सब तैयारी कर रहे थे। यहाँ पर दो ऐसे लोग थे जो एक-दूसरे से दूर जाना नहीं चाहते थे। उनके दिल का तार एक-दूसरे से बंध चुका था। इस बात से वे बेखबर थे क्योंकि ऐसा उनके साथ पहली बार हुआ था। सब जाने के लिए तैयार थे। उर्वशी उसे ढूँढ रही थी। वो अपने कार के इंजन में पानी डाल रहा था। उर्वशी की नज़र उस पर पड़ी।

उर्वशी- क्या बात है मिस्टर बड़ी जल्दी में हो?

सौरव- (बिना नज़रें मिलाए) नहीं कोई जल्दी नहीं है। तुम जा रही हो?

उर्वशी- मुझे कहाँ जाना है? मेरा घर तो यहीं नजदीक ही है। तो अब कब मिलेंगे?

सौरव- कल मिलेंगे न!

उर्वशी- अच्छा वो कैसे? न मुझसे मेरा पता पुछे और ना बताए, न पुछे कि कहाँ मिलेंगे न बताए, न फोन नंबर मांगे न बताए तो मिलोगे कैसे?

सौरव- ओह तेरी मैं तो यह सब सोचा ही नहीं। एक काम करो मुझे अपना नम्बर दे दो।

उर्वशी- मुझे पागल समझ रहे हो क्या? मेरा नम्बर ले लोगे और फिर फोन ही नहीं कीए तो? इसलिए मुझे अपना नम्बर दो।

सौरव- ओहो बहोत होशियार हो! ठीक है लिखो।

उर्वशी ने सौरव का नम्बर सेव कर लिया और सौरव ने उर्वशी का। अब जाने का वक्त था। दोनों एक दुसरे से गले-मिले। गले मिलने से उनकी हर एक उलझन गायब हो गई। दोनों ने हंसी खुशी एक दुसरे को अलविदा कह दिया। सब चले गए वापस अपने-अपने घर। खन्ना फैमिली भी अपने घर पहुंची। दिन भर सब ने आराम किया और फिर शाम हुआ। आकाश, पिंकी और सौरव तैयार होकर बर्थडे पार्टी में चले गए। तीनों पिंकी के फ्रेंड के घर पहुंचे। आकाश ने सोचा कि पिंकी को आगे भेज देते हैं ताकि हम उस आने वाले लडके पर अच्छे से नजर रख सकें।

आकाश- पिंकी तुम आगे जाओ हम लोग अभी आते हैं।

पिंकी- लेकिन मैंने अपने फ्रेंड से कहा है कि मैं आपको साथ में लेकर आऊंगी!

आकाश- हां तो हम लोग भी अभी आ रहे हैं।

पिंकी- ठीक है लेकिन जल्दी आ जाना।

आकाश- हां ठीक है।

पिंकी चली गई। अन्दर पार्टी चालू था और यहां आकाश और सौरव दोनों उस लड़के का इंतजार कर रहे थे जो पिंकी को परेशान कर रहा था। थोड़े समय बाद एक कार आई। उसमें से पांच लोग उतरे। आकाश ने जब उनमें से एक लड़के को देखा तो उसे लगा कि उसने इस लड़के को कहीं देखा है। वो उसे याद करने की कोशिश करने लगा लेकिन उसे कुछ याद नहीं आया।

आकाश- क्या यही वो लोग हैं?

सौरव- हां यही लोग हैं लेकिन लगता है कोई बहुत बड़े आदमी हैं। इसका नंबर प्लेट को तो देखो। नम्बर भी हाइ-फाइ है।

आकाश- इससे हमें कुछ लेना देना नहीं है। हमें बस इतना पता है कि यह लोग पिंकी को परेशान कर रहे हैं।

सौरव- लेकिन ये बताइए अभी क्या करना है?

आकाश-(आश्चर्यचकित होकर) मुझे क्या पता क्या करना है? यह सब तेरा ही प्लैन है तु ही बता क्या करना है?

सौरव- (थोड़ा सोचकर) बस इनका पिछा करते हैं, बाद में कोई न कोई मौका मिल ही जाएगा।

आकाश- हाँ ये सही रहेगा।

आकाश और सौरव दोनों उनके पीछे-पीछे अन्दर चले आए। पिंकी ने दोनों को देखकर स्माइल दे दी और अपने फ्रेंड्स को दिखाने लगी कि वो देखो वो दोनों मेरे भाई हैं, वह बड़े वाले आकाश भैया और वो मेरा छोटा भाई है सौरव। पिंकी के फ्रेंड्स आकाश और सौरव से बातें करने लगे। लेकिन दोनों का ध्यान सिर्फ उस लड़के पर ही था। उस लड़के ने काफी कोशिश की पिंकी से बात करने की लेकिन पिंकी हर वक्त इन दोनों पास ही रहती थी। काफी देर तक पार्टी चली इसके बावजूद न उस लड़के को पिंकी के पास आने का मौका मिला और ना ही आकाश और सौरव को उस लड़के से मिलने का। पार्टी भी खत्म हो चुकी थी। आकाश खाली हाथ नहीं जाना चाहता था और सौरव इस वी आइ पी के बारे में सब जानना चाहता था। दोनों ने पिंकी को घर छोड़ दिया और कहा, “कि तुम जाओ हमें आने में थोड़ा देर लगेगा।”

पिंकी- लेकिन कहाँ जा रहे हो?

आकाश- अपने रूम पर जा रहा हूँ कुछ काम है अभी थोड़े देर में आ जाऊंगा।

पिंकी- ठीक है।

आकाश ने गाड़ी यू टर्न लिया और उन लोगों पिछा करने लगा। पिछा करते-करते वो उसके घर तक पहुंचे

दोनों उस लड़के के घर से थोड़े दूरी पर खड़े थे। काफी बड़ा घर था या मान लो कि बंगला था।

सौरव- भाइ घर तो काफी बड़ा है, इनकी पहुंच काफी दूर तक होगी।

सौरव के बातों का आकाश ने कोई जवाब नहीं दिया। सौरव ने जब आकाश को पिछे

मुडकर देखा तो आकाश अपने दोनो हाथों से अपना सिर दबाए झुका हुआ था।

सौरव- भाइ क्या हुआ?

आकाश- कुछ नहीं।

सौरव- आप ठीक तो हैं?

आकाश- हाँ मैं ठीक हूँ। सीधे खड़े होते हुए आकाश ने जवाब दिया।

सौरव- क्या हो गया था आपको?

आकाश- पता नहीं कुछ सपनों जैसा दिखाइ दे रहा था।

सौरव तुरंत समझ गया कि आकाश भाइ को कुछ याद आया।

सौरव- क्या दिखाइ दे रहा था भाइ? सौरव ने उत्सुकता से पुछा।

आकाश- कुछ नहीं बस दिखा कि कुछ लोगों से मेरी... लडाइ हो रही है और मैं... सबसे पता नहीं कैसे पर... अकेले ही लड जा रहा हूँ और हरा भी दे रहा हूँ?

ये बात सुनकर तो सौरव सांस भरना भी भुल गया।

सौरव- भाइ मुझे लगता है ना कि ये आपकी पहले की यादें हैं जो आपको याद आ रही हैं।

मुझे लगता है कि ये बिल्कुल सही समय पर याद आइ हैं।

आकाश- सही समय पर? मतलब?

सौरव- मतलब ये कि आगे कुछ भी हो सकता है और हो सकता है कि आपको लडना भी पड़े!

आकाश- क्या पर मुझे इन सब के बारे में कुछ नहीं पता, यहाँ तक कि मैं कभी किसी से नहीं लडा।

सौरव- आपको कैसे पता? आपको छः साल पहले की कहानी पता है क्या, नहीं ना? हो सकता है आप बहुत बड़े सुरमा रहे हों? इसलिए तो आपको यह सब दिखाइ दे रहा है।

आकाश- (नजरें फेरते हुए) ऐसा कुछ नहीं है।

सौरव- क्या यार! लगता है अपने ही तरीके से काम करना पडेगा। ठीक है तो अब आप मेरी बात ध्यान से सुनिये। इसे सबक सिखाने से पहले हमें उसके बारे में जानना बहुत जरूरी है इसलिए आज आप मेरे तरीके से काम करेंगे।

आकाश-(थोड़ा सोचकर) ठीक है।

सौरव ने अपनी छानबीन शुरू कर दी। पास में ही एक पान का दुकान था।

सौरव- अब देखिए मैं क्या करता हूँ?

सौरव उस दुकानदार के पास गया।

सौरव- ओ भईया एक ठे बनारसी पान लागाइ दो तो और हां कच्चा सुपारी ही डालना।

दुकानदार- ठीक है भईया जी।

सौरव- (काउंटर पर टेका लगाकर) बहुत ही बडा घर है भईया केतना लोग रहते होंगे इसमें?

दुकानदार- अरे का बताए भईया बडे लोगों की बड़ी बात। किसी को रहने के लिए झोपडा भी नहीं तो किसी को अय्याशी करने के लिए इतना बडा घर।

सौरव- इसका का मतलब।

दुकानदार- मतलब ये कि मां-बाप कोई नहीं रहता बस उनका लडका और दो तीन लफंगे

दोस्त रहते हैं इहाँ पर। रोज कोइ ना कोइ नई लडकियां आती-जाती रहती हैं।
सौरव- ओह! अब का करोगे भईया ऐसे लोग तब तक ऐसे ही रहते हैं जब तक कि हम जैसे लोगों से नहीं मिलते। अगर हम से मिलते न तो कब के सुधर गये होते।

दुकानदार- इ लो भईया आपका पान।

सौरव- कितना रूपया?

दुकानदार- दस रूपिया भईया जी।

सौरव- दस रूपिया? सब जगह तो पन्द्रह रूपिया लेते हैं तुम दस रूपिया काहें?

दुकानदार- (दांत दिखाते हुए) अब गांव वाले से एतना कैसे ले सकते हैं भईया।

सौरव- चलो भईया शुक्रिया।

सौरव पान खाकर आकाश के पास गया।

सौरव- देख लिए भईया ये है मेरे काम करने का तरीका। किसी से भी प्यार से कुछ भी उगलवा लेना।

आकाश- क्या पता चला?

सौरव- इस घर में सिर्फ वही चारो रहते हैं। रोज एक नयी लड़की यहां आती-जाती रहती हैं।

आकाश- तो अब आगे बताओ क्या करना है।

सौरव- हम सामने के गेट से अन्दर नहीं जा सकते दुकानदार को शक हो जाएगा। हमें पिछे के दिवार से कूदकर जाना होगा।

आकाश- बकवास आइडिया है।

सौरव- अच्छा तो बढिया आइडिया है आपके पास?

आकाश- दुकानदार ने तुम्हें देखा है मुझे नहीं तुम पिछे से जाओ मैं गेट से ही जाऊंगा।

सौरव- अऽ ठीक है।

सौरव पिछले दिवार से घर में घुस गया और आकाश सामने के गेट से। दोनो जाकर दरवाजे पर खडे हो गये। सौरव ने जेब से एक पीन निकालकर दरवाजा खोला। दोनो अन्दर गये। कोइ नजर नहीं आ रहा था बडा सन्नाटा था। सौरव और आकाश दोनों यहां-वहां टहल रहे थे। इतने सारे कमरे थे कि किसमें किसको ढूंढें समझ में नहीं आ रहा था। सौरव टहलते-टहलते हाल में आया। हॉल के चारों दीवारों पर बहोत सारी तस्वीरें लगी थीं। सौरव सबको एक-एक करके देखने लगा। इतना बडा परिवार, इतने सारे लोग थे कि इसी से पता चल जाता है कि इसका बैकग्राउंड कैसा होगा। सौरव भी फोटो देखते-देखते बोर हो गया। उन सभी तस्वीरों को नजरअंदाज करके वो दुसरी ओर जाने लगा। दो कदम आगे बढने के बाद उसके कदम रुक गये। कुछ देर के लिए उसकी आंखे छोटी हो गयीं, उसे लगा कि उसने उन तस्वीरों में किसी को देखा जिसे वो जानता है। जैसे ही उसे याद आया कि उसने अभी किसे देखा उसकी आंखे बडी हो गयीं और वो फौरन पलट आकार उस तस्वीर के सामने खडा हो गया।

सौरव- यह तो रिया है!

अभी सौरव ने रिया को पहचाना ही था तब तक उसे आकाश के आने की आहट मिलने लगी। इस बात का आकाश को पता ना चले इसलिए सौरव वहां से फौरन हट गया। इससे

पहले कि आकाश सौरव के पास आ जाए सौरव ने कहा चलिए यहां पर भी कुछ नहीं है, वापस चलते हैं।

आकाश- क्यों क्या हुआ अब नहीं जानना है उसका बैकग्राउंड?

सौरव- नहीं रहने दो चलो चलते हैं।

आकाश- नहीं मैं ऐसे नहीं जा सकता।

सौरव- मेरी बात मानो भाइ चलो यहां से चलते...???

सौरव की बोलती बंद हो गयी। अचानक वो लडका सौरव के सामने आकर खड़ा हो गया।

“ऐ कौन हो तुम लोग? यहां क्या कर रहे हो?” उस लडके ने पुछा।

सौरव- यहां हम तेरी बैंड बजाने आए हैं। सौरव ने अपने आप को सम्भालने की कोशिश में ऐसा कहा।

आकाश को पता था कि उस लडके ने इन दोनों को देख लिया है फिर भी उसने मुड़कर देखा नहीं। वो अपना ध्यान वहां से भटकाने की कोशिश कर रहा था।

“ओह! तुमलोग मेरी बैंड बजाने आए हो? और वो कौन है जो अंधेरे में छुप कर खड़ा है?

ओ भाइ लोग जरा इधर आओ तो देखो हमारी बैंड बजाने के लिए कौन आया है?”

उसके बुलाते ही चार लोग अन्दर से दौड़ते हुए आए।

उनमें से एक- क्या हुआ भुवन भाइ?

भुवन- (सौरव से) ऐ उसको भी सामने बुला।

सौरव- (मुस्कुराते हुए) सोच ले अगर वो सामने आया तो तुम लोग कहीं के नहीं रहोगे।

भुवन-(चिल्लाते हुए) ऐ डरा किसको रहा है दम है तो उसको सामने बुला।

सौरव- भाइ लगता है इन लोगो को दर्शन देना ही पड़ेगा।

अंधेरे से आकाश बाहर आने लगा। जैसे-जैसे उसके कदम आगे बढ़ रहे थे वैसे-वैसे इन लोगो की धड़कन तेज़ हो रही थी। अंधेरे में आकाश का चेहरा तो नहीं दिखाई दे रहा था लेकिन छाया जरूर समझ में आ रहा था और इस छाया को देख भुवन को कुछ अजीब महसूस हो रहा था, उसे ऐसा ही कोई याद आ रहा था जिसके शरीर का ढांचा ठीक ऐसा ही था।

अंधेरे से निकलकर आकाश का चेहरा उजाले में आते देर नहीं लगी कि भुवन को न जाने कैसा दौरा उपट गया। वो जमीन पर गिर गया और कांपने लगा, उसके चारों दोस्त पुछने लगे अरे ये क्या हो गया तुम्हें भाइ? फिर एक ने कहा, हम छोड़ेंगे नहीं तुझे और फिर वो उनके तरफ दौड़ा। भुवन उन्हें मना करना चाहता था कि उसके पास मत जाओ लेकिन वो कुछ कह नहीं पा रहा था। आगे क्या था जो आकाश के तरफ उसे मारने के लिए सीधे पांव दौड़ा था वो वापस उल्टे पांव आकर उन लोगो के पास गीर गया। उसके मुंह से आता खून देखकर सभी बौखला गये और फिर उसे मारने के लिए दौड़े। पहले को सीधे पैर, दुसरे को सीने में एक मुक्का और तीसरे को दोनो कान पर तमाचा पड़ गया। सब ढेर हो गये। कोई जमीन से उठ नहीं पा रहा था। कोई सीना पकड़ कर बैठा है और कोई बेहोश है। सौरव पूरी तरह से हताश था।

सौरव- (मन ही मन) जिसने मार खाया वो गिरे हैं यह बात समझ में आ रही है लेकिन भुवन? आकाश भाई को देखकर अचानक इसे क्या हो गया? आखिर कौन है आकाश भाई? सौरव चाहता तो सारे सवालो के जवाब अभी इसी वक्त भुवन से पुछ लेता, लेकिन नहीं

पुछा क्योंकि उसके लिए जरूरी था आकाश भाई का रिया के तस्वीर से बेखबर रहना। एक बात साफ हो गया कि इस कहानी से भुवन का भी कोइ न कोइ नाता जरूर है। अजीब इत्तेफाक है, एक-एक करके परदे के पिछे से सभी शख्स बाहर आ रहे हैं। एक पर एक पहलू मिलते जा रहे हैं, देर सिर्फ तब तक है जब तक यह पहलू आकाश से रूबरू नहीं हो जाते, जिस दिन ये रूबरू होंगे उस दिन शुरू होगा आकाश के अतीत का खुलासा।

भुवन जमीन पर पड़े वैसे ही कांप रहा था। इसे कुछ हो न जाए यह सोचकर सौरव की भी हालत कुछ ऐसे ही होते जा रही थी।

सौरव- भाइ जल्दी चलो यहां से इसे कु.. कुछ हो गया तो हम फंस जाएंगे।

आकाश- कुछ होगा तब ना।

आकाश ने भुवन को उल्टा लेटाया और सीने के एक कोने में जोर का दबाया तब जाकर भुवन आराम से सांस लेने लगा।

आकाश-(भुवन के कान में) आइंदा से उससे दूर रहने की कोशिश करना वरना फिर से गलती सुधारने का मौका नहीं दूंगा।

इतना कहकर आकाश और सौरव वहां से निकल लिये।

सौरव- भाइ! एक बात पुछूं?

आकाश- हममम।

सौरव- भाइ आपने ये सब कैसे किया? मतलब आप तो इन सब चीजों से डरते थे और आप ने ही कहा था कि आप आज तक किसी से भी नहीं लडे हैं तो... ये सब आपने कैसे किया?

आकाश- तुम्हें याद है मैंने बताया था कि मुझे कुछ दिखाइ दिया? उसमें मैं सबसे लड रहा था?

सौरव- हाँ आपने बताया था।

आकाश- (मुस्कुराते हुए) उसमें मेरे लडने का तरीका जबरदस्त था। भुवन के घर में घुसने से लेकर उन लोगों से लडने तक मैं बस वही लडने का तरिका याद कर रहा था। उसके बाद मौका भी मिल गया तो मैंने अपना हाथ साफ कर लिया।

सौरव- हा हा हा हा।

उस तरफ भुवन अपना फोन निकालकर किसी को कॉल कर रहा था।

भुवन- हैलो.. हैलो पापा?

उस तरफ से- हाँ बेटे! बोलो।

भुवन- पापा, वो जिंदा है।

उस तरफ से- वो जिंदा है? कौन जिंदा है?

भुवन- वो यहाँ भी आया था।

उस तरफ से- अरे कौन आया था? कौन जिंदा है?

भुवन- अर्जुन।

उस तरफ से- क्या? तुमने शराब पिया होगा और तुम नशे में होगे इसलिए ऐसी बातें कर रहे हो।

भुवन- मेरी बात मानिये पापा, मैंने उसे बहोत करीब से देखा। वो यहां आया था। उसने मेरे दोस्तों को भी मारा।

उस तरफ से- ये असम्भव है। मरा हुआ इंसान जिंदा नहीं होता।

भुवन- लेकिन वो जिंदा है पापा।

उस तरफ से- तुम्हें कुछ हुआ तो नहीं?

भुवन- नहीं लेकिन मुझे बहुत डर लग रहा है पापा।

उस तरफ से- ठीक है तुम एक काम करो गांव आ जाओ।

भुवन- ठीक है।

फोन कट गया। उस तरफ भुवन का पिता संकोच में डुब गया। उसके सर से पसीना टपक रहा था।

भुवन का पिता- (मन ही मन) यह कैसे हो सकता है हमने उसे अपने हाथों से मारा था। इतने गहरे दरिया में गिर कर वह जिंदा कैसे बच सकता है? (आंखे बड़ी करके) सब सुन लो हमें तैयार रहना पड़ेगा क्योंकि वो जिंदा है और अगर वो जिंदा है तो वो अपना वादा जरूर पूरा करेगा, वो यहाँ आकर ही रहेगा।

एक आदमी- कौन जिंदा है?

भुवन का पिता- अर्जुन।

अर्जुन का नाम सुनकर वहां खड़े सैकड़ों आदमियों में दहशत फैल गयी। सभी को अर्जुन द्वारा उनके खिलाफ किया गया प्रदर्शन याद आने लगा।

भुवन का पिता- मेरी गाड़ी निकालो।

दो तीन गाड़ियों को साथ लेकर वो न जाने कहाँ निकल पड़ा। उसकी गाड़ियां गांव के बीच एक बड़े से बंगले के सामने सनसनाते हुए जा रूकीं।

भुवन का पिता- बलवंत सिंह? बलवंत सिंह? अरे कोई है?

घर से कोई बाहर आया। पोशाक धोती और कुर्ता, कंधे पर शाल, हाथ में छड़ी और पैर में चप्पल के जगह काठ था।

बलवंत सिंह- (धीमी आवाज़ में) क्यों भौंक रहा है उग्र ठाकुर?

उग्र ठाकुर- (मुस्कुराते हुए) कितना कुछ हो गया लेकिन तुझ में अभी भी वही अकड़ है, तेरे आवाज़ और तेरे बर्ताव में रस्ती भर भी फर्क नहीं नजर आ रहा है।

बलवंत सिंह चुपचाप खड़ा होकर उसकी बातें सुनने लगे।

उग्र ठाकुर- लगता है तेरे वनवास की सीमा समाप्त होने वाली है। मुझे पता नहीं कि ये तेरे अच्छे कर्मों का फल है या कुछ और लेकिन उप्पर वाला ने तुझपे बहुत बड़ा उपकार किया है। तेरे अर्जुन को बचाकर।

बलवंत सिंह- अर्जुन?

उग्र ठाकुर- फिलहाल तो मैं तुझे यहां सिर्फ यही बताने के लिए आया था कि आफवाह हो रहा है तेरा बेटा अभी जिंदा है।

बलवंत सिंह- (मुस्कुराते हुए) मुझे तो पहले से ही पता था लेकिन शक था कि ये बात सच है या नहीं? अब तेरे जबान से सुनने के बाद मुझे पुरा भरोसा हो गया है कि ये आफवाह नहीं है।

उग्र ठाकुर- हो सकता है वो बच भी गया हो लेकिन अगर उसने गलती से भी वापस आने की कोशिश की तो हम उसके टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।

बलवंत सिंह मजाकिया नजर से उन सबके तरफ देख रहे थे और फिर हंस पड़े।

बलवंत सिंह- उग्र ठाकुर! लगता है तेरी याददाश्त अब कमजोर हो गयी है। अरे शेर को पैदा किया है मैने। इतनी जल्दी भुल गये कि उसने अकेले ही तेरे लोगों को धूल चटा दिया था? क्या रे बबरी? तु भी भुल गया कि तेरे जैसे पहलवान को उसने चीटी की तरह मसल दिया था और तुम सबको भी?

सबके गले से पानी निचे उतरने लगा। सबका ध्यान अतीत में जाने लगा।

उग्र ठाकुर- कौन किसको मिट्टी में मिलाता है अब जल्द ही पता चल जाएगा। मेरा नाम भी उग्र ठाकुर है जिसके ऊपर मंडराता हूँ उसे बर्बाद कर देता हूँ।

बलवंत सिंह- यह धमकियों से कायरों को डराना उग्र ठाकुर हम राजवंशी हैं लडते-लडते धूल में मिल जाना पसंद करते हैं लेकिन पिठ नहीं दिखाते।

उग्र ठाकुर- हमें सिर्फ जितने आता है चाहे बल से चाहे पिठ में छूरा घुसेडकर।

इतना कहकर उग्र ठाकुर वापस चला गया। बलवंत सिंह अपने घुटनों के बल बैठ गये। उन्हें वो मनहूस घड़ी याद आने लगी जब अर्जुन को इन लोगों ने छल से मारा था। सिंह साहब की आंखें भर आयीं। तभी अन्दर से अर्जुन की माँ आयीं।

अर्जुन की माँ- क्या हुआ जी आप ऐसे क्यों बैठे हैं? आपके आंखों में आंसू क्यों हैं?

बलवंत सिंह- मैं कैसे बताऊँ पद्मिनी? मेरे गले से आवाज नहीं निकल रहा है। मैं आज इतना खुश हू कि मेरी सांसे फूल रही हैं, मैं अपने आंसू नहीं रोक पा रहा हूँ।

अर्जुन की माँ- क्या हुआ है बताएंगे?

बलवंत सिंह- हमारा अर्जुन जिंदा है पद्मिनी।

कड़ी गर्मी में बिन मौसम जैसे घटा बरस जाती है वैसे ही एक माँ के सुखे आंखों में आंसू भर आए। उत्साह से फुले नहीं समा रहीं थीं। मन में उत्तेजना जाग उठी। वो पुछने लगी कि क्या सच में हमारा बेटा जिंदा है?

बलवंत सिंह- हाँ हमारा बेटा जिंदा है।

अर्जुन की माँ- लेकिन आपसे किसने कहा?

बलवंत सिंह- उग्र ठाकुर।

पद्मिनी- वो झुठ भी तो कह सकता है? अपनी मुस्कान पर रोक लगाते हुए उन्होंने पुछा।

बलवंत सिंह- इस बात की खबर मुझे पहले से थी। मैने चार लोगों को भेजा भी था अर्जुन को ढुंढने के लिए लेकिन वो वहाँ नहीं मिला।

अर्जुन की माँ- कहां पर है अर्जुन?

बलवंत सिंह- मुम्बई में।

अर्जुन की माँ- मुंबई में? किसने बताया कि अर्जुन मुंबई में है?

बलवंत सिंह- उग्र ठाकुर की बेटी रिया ने। वो भी मुंबई में ही है।

अर्जुन की माँ- क्या वो भी वहीं है? कहीं वो फिर से किसी मुसीबत में ना फंस जाए।

बलवंत सिंह- अगर वो उसके बारे में बुरा चाहती तो वो हमसे उसके बारे में क्यों बताती?

अर्जुन की माँ- अऽ मैं मंदिर होकर आती हूँ।

बलवंत सिंह ने सिर हिलाकर मंदिर जाने की अनुमति दी।

अर्जुन की माँ लगभग छह सालों से इस मंदिर में महाकाल से रोज एक ही

मन्नत मांगा करती थीं कि उनके बेटे को कुछ नहीं हुआ हो और वो सही सलामत घर वापस आ जाए। आज उनकी मन्नत पूरी हो गई है, अर्जुन जिंदा है। अर्जुन की माँ मंदिर गयीं और पूजा की थाली पंडित जी को दे दीं।

अर्जुन की माँ- आपका लाख-लाख शुक्र है भगवान! आज आपने मुझे मेरी खोयी हुई ममता वापस कर दी। बस अब यही विनती है कि अर्जुन जहाँ भी है सही सलामत वापस आ जाए। अभी अर्जुन की माँ प्रार्थना कर ही रहीं थीं तभी पीछे से एक आवाज आयी, “सत्य कभी नहीं हारता.. बस उसे जितने के लिए थोड़ा वक्रत लगता है।”

अर्जुन की माँ जब पीछे घुमीं तो उन्होंने देखा कि वे बाबा थे।

अर्जुन की माँ- बाबा ?

इतना कहकर उन्होंने बाबा के चरण छुए।

बाबा- यशस्वी भवः।

अर्जुन की माँ- आप इतने दिनों से कहीं दिखाइ नहीं दे रहे थे और आज यहाँ अचानक?

बाबा- हाँ, मेरा क्या है? जब जहाँ संदेश पहुँचाना होता है चला जाता हूँ।

अर्जुन की माँ- तो क्या आप यहाँ कोई संदेश पहुँचाने आए हैं?

बाबा ठठाकर हंसे और सिर हिलाकर इशारे में हाँ कहा।

अर्जुन की माँ- वो संदेश क्या है बाबा?

बाबा- दशा बदल चुका है बेटे। काल चक्र फिर से उसी दिशा में आ रहा है। ये उस होनी का फिर से दोहराने का संकेत है, ये उसके वापस आने का संकेत है।

अर्जुन की माँ समझ गयीं कि बाबा किसके लौटने की बात कर रहे हैं।

बाबा- उसके आते ही ये सालों से सुखी धरती महक उठेगी, बादल बरस पड़ेगा, बिजली ऐसे तड़तड़ाएगी जैसे मानो महादेव तांडव कर रहे हों, उस दिन डर भी डर के मारे कांपेगा, उस दिन हर बुराई का विनाश होगा।

अर्जुन की माँ के चेहरे पर दुःख के भाव थे क्योंकि वे नहीं चाहती थीं कि वो घड़ी दोबारा आए, वो तो सिर्फ ये चाहती थीं कि अर्जुन वापस आ जाए।

अर्जुन की माँ- बाबा पर मैं नहीं चाहती कि वो अनहोनी दोबारा हो। मैं तो सिर्फ ये चाहती हूँ कि अर्जुन सही सलामत घर आ जाए बस।

बाबा- जो होनी है वो तो होकर रहेगा। ईश्वर ने उसे जो काम के लिए चुना है वो तो होकर रहेगा। मैं तुम्हारी परेशानी समझ सकता हूँ पर मैं क्या कर सकता हूँ? सबका करने-धरने वाला तो वो है।

अर्जुन की माँ- तो क्या फिर से सब वैसा ही होगा? क्या फिर अर्जुन हमसे...?

बाबा- आप ये ना भूलें कि आप एक माँ हैं। आपके सामने तो ईश्वर भी झुकता है तो ये अनहोनी क्या चीज़ है? आप ध्यान करें। महाकाल आपकी बात अवश्य सुनेंगे।

अर्जुन की माँ- जी बाबा।

6

अतीत के आमने-सामने

आकाश और सौरव दोनों घर पहुंचे। घर का दरवाज़ा

खुला हुआ था।

सौरव- क्या बात है भाई इतनी रात हो गयी है और सब अब तक जागे हुए हैं?

आकाश- क्या पता? अब अंदर जाकर ही पता चलेगा।

दोनों अंदर गये। सब डिनर टेबल पर चुपचाप बैठे थे।

आकाश- क्या बात है अंकल आप लोग अब तक जागे हैं?

खन्ना अंकल- हाँ जागे हैं। तुम दोनों का ही इंतजार कर रहे थे। आओ बैठो खाना खा लो।

सौरव- क्या बात है आज पापा बड़े प्यार से बात कर रहे हैं? सौरव ने मन ही मन सोचा।

दोनों जन बैठ गए। आंटी डिनर लगाने लगीं। सब लोग डिनर करने लगे।

खन्ना अंकल- सौरव, मुझे तुमसे एक बात करनी थी।

सौरव- जी पापा।

खन्ना अंकल- बेटा मैं कह रहा था कि मैं और तुम्हारी माँ हमेशा तुम्हारे बारे में गलत ही सोचते रहे हैं।

आंटी- सिर्फ आप मैं नहीं।

खन्ना अंकल- हाँ मतलब मैं। तो मैं कह रहा था कि मैं हमेशा तुम्हारे बारे में गलत सोचता रहा लेकिन ऐसा नहीं है कि तुम्हारी फिक्र नहीं करता था। मुझे लगता था कि मैं जो तुम्हारे बारे में सोचते था, जैसा तुम्हें देखना चाहता था वो ही सही है... लेकिन मैं गलत था। इस बात का मुझे एहसास हो गया है कि

अगर हमें एक जैसा बनना होता, तो भगवान् हमें अलग-अलग दिमाग नहीं देता। उसने हमें अलग-अलग दिमाग इस लिए दिया है ताकि हम वो सोच सकें जो हमें सही लगता है। मेरी सोच को उर्वशी ने एक झटके में बदल दिया।

उर्वशी का नाम सुनकर सौरव के होठों से मिठी सी मुस्कान छूट गयी। पिंकी भी सौरव को देखकर मुस्कुराने लगी।

खन्ना अंकल- अच्छा पिंकी ने बताया कि तुम दोनों ने पार्टी में इसे अंदर भेज दिया और खुद बाहर खड़े थे? फिर इसे घर पर छोड़ने के बाद भी कह दिए कि तुम आकाश के घर पर जा रहे हो? क्या बात है?

सौरव- कोई बात नहीं है पापा वो तो आकाश भईया कह रहे थे कि एक बार इनके रूम जाकर आ जाते हैं इसलिए हम लोग चले गये।

खन्ना अंकल- और पार्टी में?

सौरव- वो तो बस ऐसे ही आकाश भईया को वहां ठीक नहीं लग रहा था इसलिए हम लोग बाहर खड़े थे।

पिंकी और उसकी मम्मी दोनों मुह दबार खी खी खी हंसने लगे। खन्ना अंकल ने दोनों के तरफ देखकर कहा, “हमम” और दोनों जन चुप हो गए।

खन्ना अंकल- देखो मैं जानता हूं तुम झुठ बोल रहे हो। अब यह बचकानी हरकतें करना बंद कर दो। तुम्हें यह सब करने की जरूरत ही नहीं है क्योंकि लोग तो तुम्हें ऐसे भी पसंद करते हैं जैसे अ... उर्वशी? देखो अब तुम्हें ही सोचना है कि तुम्हें क्या करना है? अब तुम यह सब खुद सोच सकते हो। तुम्हें जो करना है करो अगर किसी चीज़ की जरूरत हो तो मुझे जरूर बता देना। मैं अब तुम्हें किसी चीज़ के लिए नहीं रोकूंगा।

सौरव- (मुस्कुराते हुए) जी पापा।

आज तो खन्ना अंकल ने सबको हैरान ही कर दिया। सौरव को शायद इसी प्यार की हमेशा से जरूरत थी। आज वो पूरी भी हुई तो उर्वशी की वजह से। आकाश सौरव को मुस्कुराता देख बेहद खुश हुआ, आज उसे इस बात का एहसास हुआ कि हमारे लिए परिवार का होना इतना जरूरी क्यों है?

सब कोइ सो चुका था। सौरव को निंद नहीं आ रही थी, फिर भी वो उर्वशी का ख्वाब देख रहा था। जब ख्वाब देखकर जी नहीं भरा तो सोचा कि चलो जरा बात ही कर लेता हूं।

सौरव ने उर्वशी को कॉल किया।

उर्वशी- हैलो?

सौरव- हैलो!

उर्वशी- क्या जनाब अब जाकर मेरी याद आयी?

सौरव- किसने कहा मुझे तुम्हारी याद आयी? वो तो मैंने सोचा कि क्या पता तुम्हें मेरी याद आ रही होगी तब भी तुम मुझे कॉल नहीं करोगी, इसलिए सोचा कि मैं ही तुम्हें कॉल कर लेता हूं।

उर्वशी- अच्छा-अच्छा अब सांस तो ले लो... एक सांस में ही सब बोल दोगे क्या?

सौरव- तो क्या! वैसे भी कम सांस थोड़ी है मुझमें।

उर्वशी- हां हां वो तो मैं देख चुकी हूं वो भी अपने आखों से कि कितना सांस है तुम में? अगर मैं सांस नहीं दी रहती तो एक भी मछली नहीं पकड़ पाए रहते।

सौरव- हां ये बात तो सही है। वैसे तुम्हारा मुझपर कइ एहसान चढ़ चुके हैं।

उर्वशी- तुम्हें चुकाने की जरूरत नहीं मैं खुद अपने एहसान के बदले कुछ न कुछ ले ही लूंगी।

सौरव- मैंने तो नहीं कहा कि मैं तुम्हारा एहसान चुकाना चाहता हूं।

उर्वशी- तो मैं कौन सा कुछ मांग रही हूं? मैंने तो कहा कुछ न कुछ ले लूंगी। मतलब समझे “छीन” लूंगी।

सौरव- फिर तो अच्छी बात है मुझे ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं।

उर्वशी- अच्छा एक बात पुछूं?

सौरव- नहीं।

उर्वशी- बक यार, सच बोलो पुछूं कि नहीं?

सौरव- पुछो ना।

उर्वशी- क्या तुम्हें मेरी याद आ रही थी?

सौरव- बहोत ज्यादा।

उर्वशी- सच में? मुझे तो लगा कि जाते ही भूल जाओगे।

सौरव- इतनी जल्दी कैसे? अभी तो बहुत दूर तक जाना है हमें।

उर्वशी- लेकिन कब तक जाना है?

सौरव- सुबह।

उर्वशी- क्या इतनी जल्दी?

सौरव- हाँ वैसे भी अब हमारे ज्यादा वक्त नहीं है?

उर्वशी- ठीक है कहां मिलेंगे?

सौरव- तुम अपना पता भेज दो, मैं सुबह वहां पहुंचते ही फोन कर दूंगा।

उर्वशी- ठीक है।

सौरव- तोह फिर अब चलूँ?

उर्वशी- क्यों हमेशा इतनी जल्दी में रहते हो? उस दिन भी इतने जल्दी में थे कि मुझसे नजर ही नहीं मिला रहे थे।

सौरव- अगर तुमसे नजरें मिलाता तो वापस नहीं आ पाता।

उर्वशी- क्यों नहीं आ पाते?

सौरव- बता नहीं सकता। अलग ही बात है तुम्हारी आंखों में। देखकर उसमे समा जाने का मन करता है।

उर्वशी- जाने दो अब आगे मत बोलो नहीं तो मैं रात भर सो नहीं पाऊंगी।

सौरव- हा हा हा। चलो तब तुम सो जाओ। गुड नाइट।

उर्वशी- गुड नाइट।

फोन कट गया। अब सौरव सोच रहा था कि, “यह बात पापा से कैसे बताऊँ कि मुझे बाहर जाना है? बाहर जाने के लिए मुझे कोई बहाना ढुंढना ही पड़ेगा नहीं तो पापा जाने नहीं देंगे।”

सौरव कोई बहाना ढुंढ रहा था जिससे उसे कुछ दिनों के लिए बाहर जाने की अनुमति मिल जाए। वो पापा से बात करने के लिए उनके कमरे में गया।

सौरव- पापा!

खन्ना अंकल- हुमम?

सौरव- पापा वो क्या है कि मेरे कालेज का कैम्प जा रहा है कल सुबह।

खन्ना अंकल- कल सुबह? पर तुमने पहले तो नहीं बताया?

सौरव- हाँ पापा वो क्या है कि मुझे भी अभी पता चला है।

खन्ना अंकल- ज्यादा जरूरी है क्या?

सौरव- नहीं कुछ उतना इम्पोर्टेन्ट नहीं है।

खन्ना अंकल- ऐसा तुम्हें लगे कि जाना जरूरी है तो तुम जा सकते हो।

सौरव- जी। तो मैं कल जाऊं?

खन्ना अंकल- हाँ हाँ बिल्कुल।

सौरव- ठीक है पापा।

फिर क्या होना था, सुबह हुआ। सौरव, उर्वशी के साथ उसी तरफ निकल पड़ा जहां से वो नदी बहते हुए आयी थी। यह जो रास्ता उन दोनों ने चुना था, बहुत ही कठिन था और हैरतअंगेज भी क्योंकि किसी को भी पता नहीं था कि हम जिसे ढुंढने निकले हैं वो कहाँ मिलेगी या फिर मिलेगी भी कि नहीं और आखिर में इन्हें वहां जाना है जहां इंसानियत है ही नहीं, जहाँ दुश्मन ही दुश्मन हैं।

सौरव चला गया। आकाश को इस बात का भनक तक नहीं था। सुबह में जब सौरव कहीं दिखा नहीं तो आकाश ने आंटी से पुछा, “आंटी, सौरव कहां है कहीं दिखाई नहीं दे रहा है?”

आंटी- वो तो कैम्प में गया है क्यों तुम्हें नहीं बताया?

आकाश- क्या कैम्प में लेकिन उसने तो मुझसे कुछ भी नहीं कहा।

आंटी- उसे भी रात को ही पता चला कि कॉलेज का कैम्प जा रहा है।

आकाश- अच्छा?

बात आकाश को खली नहीं। उसे तो पहले से ही लग रहा था कि सौरव ने उर्वशी से ऐसा कुछ बताया है जो वो इससे नहीं बता सकता था। माना कि सौरव को कैम्प के बारे में रात को ही पता चला है लेकिन मुझे बताने में उसे कितना वक्त लगता?

आकाश- अच्छा मेरी बाइक की चाभी उसके पास थी आपको देकर गया है क्या?

आंटी- बाइक की चाभी? वो तुम्हारा बाइक ही लेकर गया है।

आकाश- बाइक लेकर वो भी कैम्प में? लेकिन कॉलेज कैम्प में तो सब लोग बस से जाते हैं ना एक साथ?

आंटी- हाँ कैम्प में तो सब बस से ही जाते हैं।

आकाश-(बात को पलट कर) ठीक है मैं जाकर तैयार हो जाता हूँ गैरेज जाना है।

आंटी- ठीक है।

आकाश उपर गया तैयार होने के लिए। जब वो सौरव के कमरे के सामने से गुजरा तो इसे उर्वशी की वो चिट्ठी वाली बात याद आइ जो गलती से उर्वशी ने आकाश से बताया था। इससे रहा नहीं गया और आकाश, सौरव के कमरे में घूस गया। मेज से लेकर अलमारी तक सब छान मारा लेकिन कुछ नहीं मिला।

आकाश- कैसे पता करूँ? हर जगह तो ढूंढ लिया मैंने।

थक कर आकाश पलंग पर ही बैठ गया। जब वह बैठा तो उसे लगा कि कुछ इस गद्दे के अन्दर है जो कड़-कड़ जैसे आवाज कर रहा है। उसने गद्दे का कवर निकाला तो उसमें एक कागज और पैन ड्राइव था।

आकाश- यह तो रिया की चिट्ठी है। इसका मतलब मेरा शक सही था। उर्वशी इसी खत के बारे में बात कर रही थी। लेकिन इस पैन ड्राइव में क्या है?

आकाश ने वो पैन ड्राइव अपने मोबाइल में कनेक्ट किया। पैन ड्राइव में तीन विडियो क्लिप

थे जो सौरव ने आकाश के घर के सामने के सीसीटीवी कैमरे से निकाला था। उसने वो सारे क्लिप देख लिए। पहले रिया का वहां खत छोड़ना और चले जाना फिर इसका घर से बाहर आना और रिया के घर जाना, लेकिन अब तक इसे ये बात समझ में नहीं आइ कि वे चार लोग कौन थे जो इसके वहां से जाने के बाद आए थे? आकाश ने उस चिट्ठी को खोला और पढ़ना शुरू किया।

“यह मैं हूँ, रिया। मैं जानती हूँ कि तुम यही सोच रहे होगे कि मैं ये चिट्ठी क्यों यहाँ रखी हूँ? बात यह है कि मैं वापस जा रही हूँ अपने गाँव क्योंकि मैं तुम्हें फिर किसी मुसीबत में नहीं डालना चाहती। अगर मैं यहाँ रुकी तो वो मेरे जरिए तुम तक पहुंच जाएंगे इसलिए मैं जा रही हूँ तुमसे दूर। मैं खुशनसीब हूँ कि मुझे तुम्हारा प्यार मिला और दीदार भी पर बहोत बदनसीब भी क्योंकि तुम्हारा साथ नहीं मिला। तुम्हारे साथ बिताए एक-एक लम्हे बहोत याद आएंगे। मेरा यहाँ आने का एक ही मकसद था तुम्हें तुम्हारे अतीत से रूबरू कराने। तुम्हें तुम्हारे परिवार के बारे में बताना। तुम नैनीताल के रहने वाले हो। तुम्हारे माता-पिता सब वहीं के रहने वाले हैं। पर यहाँ तुम आने की भूल मत करना। जितना तुम्हें यहाँ चाहने वाले नहीं हैं उतना तुम्हें मारने वाले हैं। जो भी करना सोच समझ के करना।”

आकाश की आंखे आग की तरह लाल हो चुकी थीं।

आकाश- इतने सालों से मैं जिस खोये हुए यादों को ढूँढ रहा था वो सौरव ने मुझसे छुपाया? तब तक आंटी भी कमरे में आ गयीं। आकाश को इस तरह से देख वो घबड़ा गई।

आंटी- आकाश बेटा क्या हुआ? तुम... तुम रो क्यों रहे हो?

आकाश धीरे-धीरे अपने हाथों से अपना भीगा चेहरा पोछने लगा और फिर मुस्कुराते हुए उनके हाथों में वो चिट्ठी दे दिया।

आंटी- ये क्या है?

आकाश ने कुछ नहीं कहा बस मुस्कुराता रहा। आंटी खत पढ़ते रहीं थीं और बीच-बीच में आकाश के तरफ भी देख रहीं थीं। खत पढ़ने के बाद उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि ये कागज का टुकड़ा आकाश के जिंदगी का वो सच है जिसे वो छः साल पहले भुला चुका है।

आंटी- क्या ये सच है?

आकाश ने सिर हिलाकर इशारे में हां कहा।

आकाश- लेकिन यह सब सौरव ने मुझसे छुपाया क्यों?

आंटी- क्या? क्या यह सब सौरव के पास था?

आकाश- हां आंटी लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि सौरव ने यह बात छुपाया है तो इसके पीछे कोई न कोई कारण जरूर होगा।

आंटी- सौरव ऐसा क्यों करेगा? क्या कारण हो सकता है?

आकाश सोच रहा था कि इसके पीछे क्या कारण हो सकता है? कुछ देर सोचने के बाद अचानक उसके दिमाग में एक खयाल आया।

आकाश- अगर सौरव ने मुझसे ये बात छुपाई है तो इसके पीछे कोई गहरा ही राज होगा इसलिए उसने मुझे नहीं बताया। पर मैं भी इस राज को जाने बगैर शांत नहीं बैठूंगा। इस राज का जवाब कौन देगा यह मुझे अच्छी तरह से पता है।

इतना कहकर आकाश कहीं जाने लगा। आंटी ने उसे रोकते हुए पुछा कि कहाँ जा रहे हो? आकाश- इतने सालों से मैं जीन सवालो को लेकर दर-दर घुमता रहा, उसका जवाब मेरे सामने ही था और मैं पहचान नहीं पाया। मैं वहीं जा रहा हूँ।

आकाश घर से निकला। यह वो शख्स है जो एक मात्र जरिया हैं आकाश और रिया के मिलने का। उनके वजह से ही आकाश और रिया यहां मिले थे। यह शख्स कोइ और नहीं बल्कि रिया की दादी थीं। आकाश को यकीन था कि उन्हें सब पता है। आज से पहले आकाश इतना खुश कभी नहीं था। आज भी बादल और बिजली दोनों बरस रहे थे लेकिन आकाश को आज इनमें मगरूरी नजर आ रही थी।

दादी अपने कुर्सी पर बैठीं हुई थीं। हवा के मारे सभी खिड़कियाँ आपस में टकरा रही थीं और दरवाजा खुला था। बिजली जब-जब कड़कती उसकी तेज से उजाला हो जाता और फिर अंधेरा। जब एक बार फिर बिजली कड़की और उजाला हुआ तो दादी को दरवाजे के बाहर परछाईं जैसे कुछ नजर आया। ऐसा लगा कि कोइ दरवाजे के बाहर खड़ा है। अंधेरा तो फिर से हो चुका था उन्हें कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था फिर भी... न जाने कैसे उन्हें पता था कि वो कौन है? दादी के चेहरे पर जरा सा भी संकोच नहीं था बल्कि दृढ़ विश्वास दिखाई दे रहा था।

दादी- अर्जुन?

इनकी आवाज़ सुनकर आकाश बाहर अन्धेरे से अन्दर आ गया।

आकाश- हाँ, मैं हूँ अर्जुन।

दादी- अर्जुन! हाऽ आखिर तुम आ ही गए।

आकाश- मैं कौन हूँ दादी? मेरा अतीत क्या है? मेरा परिवार कहां है? मैं यहां क्यों हूँ? रिया कौन है? आपने मुझसे यह राज क्यों छुपाकर रखा? बताओ दादी। आकाश ने दादी की ओर बढ़ते हुए पुछा।

दादी- मुझे लगता था कि मैं तुम्हें तुम्हारे असली रूप में फिर कभी नहीं देख पाऊंगी क्योंकि तुम सबकुछ भुल चुके थे। मैंने तुमसे तुम्हारा राज इसलिए छुपाया क्योंकि तुम्हारी दिमागी हालत ठीक नहीं थी। अगर तुम्हारे दिमाग पर जरा सा भी जोर पड़ता तो तुम कोमा में जा सकते थे और हम तुम्हें फिर से खोना नहीं चाहते थे।

आकाश- क्या हुआ था दादी जिसके वजह से आज मैं यहां हूँ?

दादी- वही जो हर प्यार करने वालों के साथ होता है। उन्हें कभी एक नहीं होने दिया जाता, भले उनकी जान ही क्यों न चली जाए। वही तुम्हारे साथ भी हुआ लेकिन तुम बच गये और यहाँ आ पहुंचे।

आकाश- रिया कौन है?

दादी- रिया? तुम्हारी जान थी रिया और तुम उसके। पूरे नैनीताल में मशहूर थे तुम दोनों।

आकाश- नैनीताल?

दादी- हाँ तुम्हारा गांव, नैनीताल।

आकाश- मैं सब शुरू से जानना चाहता हूँ, बारीकी से।

दादी- मुझे कुछ ज्यादा पता नहीं है। मैंने भी ये बातें रिया से सुनी है। अगर तुम्हें सब बारीकी से जानना है तो तुम्हें अपने गाँव जाना होगा, जो आसान नहीं है।

आकाश- आसान नहीं है? क्यों?

दादी- क्योंकि उन लोगों को पता चल चुका है कि तुम जिंदा हो और ये उनके लिए बहोत बूरी बात है, इसलिए वो पूरी तरह से तैयार होंगे तुम्हें फिर से मारने के लिए।

आकाश- वैसे भी दादी इन छह सालो में मैं रोज मर-मर के जीते आया हूँ वो भी सिर्फ अपने अतीत को पाने के लिए। अब तो मैं अपना अतीत पा चुका हूँ, अब मैं मर भी जाऊं तो भी मुझे किसी बात की झिझक नहीं होगी।

दादी- एक बात याद रखना अर्जुन! तुम वो शूरवीर हो जिसके आगे आज तक अच्छे-अच्छे लडाकू भी नहीं टीक पाए। इस बात को कभी मत भुलना इसे याद रखना क्योंकि तुम जहां जा रहे हो वहाँ तुम्हें इसकी जरूरत पड़ेगी।

आकाश- जानता हूँ दादी। मैंने इस बात को कल ही महसूस किया है।

7

अपने घर के तरफ

अगले दिन अर्जुन अपने गाँव जाने के लिए तैयार था। खन्ना अंकल, आंटी और पिंकी सभी लोग निचे हाल में बैठकर आकाश के तैयार होकर निचे आने का इंतजार कर रहे थे। आज इन लोगों के दिल में ये खयाल आया कि इन्होंने आकाश के लिए दुआ तो मांगा लेकिन कभी सोचा नहीं कि इसका मतलब होगा आकाश का हमसे दूर चले जाना। पिंकी पहले से ही अपनी आंखों को मसल रही थी। आकाश तभी तैयार होकर अपने बैग के साथ निचे आया। सबको इस तरह से बैठा देखकर वो धीरे हो गया और अपना बैग निचे रख दिया।

आकाश- क्या हुआ सब उदास लग रहे हैं?

खन्ना अंकल- जाना जरूरी है क्या बेटे?

आकाश- इसी के लिए तो मैंने छह साल इंतजार किया है। अब जब मेरा कल मेरे सामने है तो मैं पीछे कैसे हट सकता हूँ अंकल?

खन्ना अंकल- अगर वहां जाकर तुम्हें कुछ हो गया तो?

आकाश- कुछ नहीं होगा अंकल।

खन्ना अंकल- पता नहीं मैं कैसे कहूँ? मैं कहने लायक हूँ कि नहीं ये भी नहीं जानता, लेकिन बेटा तुम वापस यहाँ हमारे पास जरूर आना। मानता हूँ कि हमारे बीच ऐसा खून का कोई रिश्ता नहीं है फिर भी हम तुम्हें अपने बड़े बेटे जैसा प्यार करते हैं।

अर्जुन- ऐसा क्यों कह रहे हैं अंकल माना आपसे मेरा कोई खून का रिश्ता नहीं है लेकिन आप मेरे पिता से कम भी नहीं हैं और आंटी ना ही आप मेरे मां से भी कम हैं। शायद ही मेरे जैसा कोई खुश नसीब होगा जिसके पास ऐसा परिवार होगा। मैं वादा करता हूँ आप सब से कि मैं सही सलामत वापस यहाँ आऊंगा वो भी एक दुल्हन के साथ!

सब लोग हंसने लगे। आकाश ने खन्ना अंकल और आंटी के पैर छुए।

आकाश- अरे इसे क्या हुआ? ऐसे चुपचाप मुंह बनाके क्यों खड़ी है? आकाश ने पिंकी को कहा।

इसके जरा सा टोचन देते ही पिंकी ने जो आंसू बहुत देर से रोक कर रखे थे उसे बहा दी।

आकाश- अरे क्या हुआ रो क्यों रही है?

पिंकी- आप क्यों जा रहे हो? आप चले जाओगे तो मैं अपने फ्रेंड्स के बर्थडे में किसके साथ जाऊंगी?

आकाश- अरे पगली अब क्यों डरती है? जिससे तुझे डर था उसे हमने ठीक कर दिया है। अब तुझे कोई परेशान नहीं करेगा।

पिंकी- लेकिन आपको कैसे पता चला कि मुझे कोई परेशान कर रहा है?

आकाश- अपने घर में जासूस है ना? तो मुझे कैसे नहीं पता चलेगा? उसी ने मुझे बताया था। चल अब मैं जा रहा हूँ अपना ख्याल रखना। आकाश ने आखिरी विदाई ली और चला गया।

आकाश के जाने के बाद सौरव का फोन आया। उसकी मम्मी ने फोन उठाया।

सौरव- हाए मम्मी!

मम्मी- कहां हो तुम?

सौरव- अरे बताया तो था कि कैम्प पर जा रहा हूँ।

मम्मी- बताया तो था लेकिन गए नहीं?

सौरव के तरफ से कोई जवाब नहीं आया।

मम्मी- क्या हुआ? चुप क्यों हो गये?

सौरव- आपको कैसे पता चला?

मम्मी- सिर्फ मुझे नहीं सबको पता चल गया है, आकाश को भी।

सौरव- क्या आकाश भईया को भी?

मम्मी- हां वो भी सब कुछ। तुमने जो कुछ भी छुपाने की कोशिश की थी वो सब उसे मिल गया।

सौरव- क्या? कहां हैं वो?

मम्मी- वहां जहां उसे बहुत पहले होना चाहिए था, अपनों के पास। तुमने ये बात हम सब से क्यों छुपाई?

सौरव- मम्मी आपने उन्हें जाने क्यों दिया वहाँ पर वो महफूज़ नहीं हैं।

मम्मी- क्या इसलिए तुमने हम सब से यह बात छुपाई? थोड़ा आकाश के बारे में तो सोच लिए होते इतने सालों से क्या वो यहाँ पर महफूज़ था?

सौरव- मुझे भी तो पांच दिन पहले ही पता चला है। देखिये मम्मी मैंने जो भी किया है सोच समझ कर किया है।

मम्मी- अब मैं कुछ नहीं जानती तुम जहाँ भी हो फौरन घर आ जाओ।

सौरव- अब मैं नहीं आ सकता। अब मैं अपना काम पूरा कर के ही आऊंगा।

फोन कट गया।

खन्ना अंकल- क्या कहा उसने?

आंटी- वो कह रहा है कि उसने जो भी किया है सोच समझ कर किया है और वो अपना काम कर के ही घर लौटेगा।

खन्ना अंकल- वो जो भी करता मुझे नहीं पता कि गलत करता है या सही करता है बस इतना पता है कि भले के लिए ही करता है। मुझे उस पर भरोसा है।

आंटी- भरोसा तो मुझे भी है लेकिन आज दोनों हमसे दूर हैं तो डर सा लग रहा है।

खन्ना अंकल- तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है मैं जानता हूँ कि दोनों एक तोप हैं हमेशा समझदारी से काम लेते हैं। एक के पास ताकत है और एक के पास दिमाग। तुम्हें पता है उस

दिन पार्टी के

बाद वो दोनों पिंकी को घर छोड़कर कहां गये थे?

आंटी- कहां?

खन्ना अंकल- उस लड़के के घर गये थे जो पिंकी को काफी दिनों से परेशान कर रहा था और बड़े ही समझदारी से दोनों ने उसे अच्छे तरीके से समझा दिया। ये बात मुझे बंटी ने बताया। उसने उन लोगों को उस लड़के का पीछा करते हुए देखा था।

आंटी- लेकिन पिंकी ने यह बात हमें बताई क्यों नहीं?

खन्ना अंकल- उसने तो उन दोनों को भी नहीं बताया था लेकिन सौरव ने फिर भी इस बात का पता लगा लिया। मुझे लगता है कि सौरव कुछ ऐसा ढूंढ रहा है जो शायद आकाश नहीं जानता।

आंटी- हाँ बस उपर वाले से मनाती हूँ कि दोनों सही सलामत रहें।

आकाश को यहां से गये दो दिन हो गये थे। उसकी ट्रेन स्टेशन पहुंच चुकी थी। कोई दिखाई नहीं दे रहा था, चारों तरफ सन्नाटा था। आकाश ट्रेन के दरवाजे पर खड़ा होकर यहां-वहां देख रहा था। बिना किसी हिचकिचाहट के वो नीचे उतरा। रूका हुआ हवा अचानक बहने लगा। इस सन्नाटे में हलकी सी हरकत होने लगी। पानी के आस में खेत में बैठे किसान का ध्यान भंग हो गया। जब वो उठा और आसमान की ओर नजर फिराया तो देखा कि उत्तर के तरफ से काला बादल सूरज को ढकते हुए आ रहा था। उसे इस बात से बेहद खुशी हुई पर उससे ज्यादा वो संकोच में डूब गया कि छः सालों से कभी ऐसा नहीं हुआ की हमारे गाँव में बारिश हो और आज दूर से ही भिगी मिट्टी की खुशबू आ रही है? इसका मतलब?

न जाने उसने ऐसा क्या अनुमान लगाया कि उसकी आंखें बड़ी हो गयीं। वो उठकर दौड़ा और दौड़ते हुए गांव में चिल्लाने लगा बारिश होने वाली है देखो उत्तर के तरफ से बादलों का झुंड आ रहा है। सभी लोग घर से निकलकर सड़क पर आ गये। वे लोग पुछने लगे, “अरे क्या हुआ काका आप चिल्ला क्यों रहे हो?”

सब इंतजार कर रहे थे कि वो कुछ कहे।

बुढ़े किसान ने अपना हाथ उठाकर उनके पिछे आसमान में इशारा किया।

सभी लोग आसमान की तरफ देख रहे थे लेकिन उस बुढ़े आदमी का चेहरा देखकर ऐसा नहीं लग रहा था कि वो यही दिखाना चाहता था। आखिर में वही हुआ। उन लोगों में से एक आदमी आगे आया और बोला, “आप झूठ बोल रहे हैं काका, आप बादलों को नहीं दिखाना चाहते थे। आपके चेहरे पर साफ नजर आ रहा है कि आप कुछ और कहना चाहते थे।

उस बुढ़े ने अपने आप को बड़ी मुश्किल से रोका था, सोचा कि कहीं मेरा अंदाजा झूठा हुआ तो लोग मेरा मजाक उड़ाने लगेंगे। कुछ लोग उस बुढ़े से पुछने लगे कि बोलो काका आप चुप क्यों हो गये? और क्या बताना चाहते थे आप?

काका- कुछ नहीं, बस मुझे लगा कि..

“क्या लगा बाबा? यही ना कि ये काला बादल, ये कड़कती बिजलियाँ, ये तूफान और ये बारिश अर्जुन के आने का संकेत दे रही हैं?” उस पहले आदमी ने पुछा।

बुढ़े किसान ने सिर हिलाते हुए कहा, “हाँ”।

“लेकिन बाबा ऐसा होना नामुमकिन है हम सब जानते हैं कि उसे उन लोगों ने मार दिया और...” आगे वो आदमी कुछ कहता उस बुढ़े ने उसके तरफ देखकर अपनी आंखें बड़ी कर लीं और वो आदमी चुप हो गया।

बुढ़ा किसान- तुम चाहे जो भी समझो पर मुझे ऐसा लगता है कि यह घने बादल उसके उपर छाया दे रहे हैं, इस तडतडाती हुई बिजली को देखो ऐसा लग रहा है कि उसके आने की खुशी में तांडव कर रहे हैं, यह बारिश इस बात का प्रमाण दे रही है कि इस गांव में फिर वही हरियाली लौटने वाली है।

वहां खड़े बाकी लोगों की भी यही दुआ थी कि यह जो कह रहे हैं काश वो सच हो जाए लेकिन ये हकीकत जानते थे कि मरा हुआ इंसान वापस नहीं आता। लेकिन जो नहीं मरा वो तो आ सकता है ना?

अभी वहाँ पर इस बात की चर्चा चल ही रहा था तभी वहाँ एक जीप से कुछ लोग आ गए। ये उग्र ठाकुर के लोग थे।

“क्या गांव वालो क्या चल रहा है यहाँ पर? ओह कहीं यह बारिश आने की खुशी तो नहीं? हा हा हा।” उनमें से एक ने ऐसा कहा।

बुढ़ा किसान- सुखा पडने के बाद हम जहाँ से भी अपने खेतों लिए पानी की सिंचाई करते थे तुम लोगों ने उस हर जगह पर कब्जा कर लिया। तुम लोग अपने आप को भगवान समझने लगे। लेकिन आज उसने फैसला कर दिया।

“ऐ बुढ़े यह बारिश सिर्फ कुछ देर के लिए ही आयी है इसके जाने के बाद फिर से तुम लोग हमारे सामने लाचार और भिखारियों की तरह थोड़े से पानी के लिए भीख मांगोगे।”

बुढ़ा- यह तुम्हारी गलत फैमि है इस बार ये हमेशा के लिए लौट आया है वापस लौट कर नहीं जाने वाला। बुढ़े किसान ने बात को थोड़ा बनाकर कहा।

बुढ़े की यह बात सुनकर उन लोगों को थोड़ा संकोच हुआ कि यह किसकी बात कर रहा है? इस बार यह हमेशा के लिए लौट आया है वापस लौट कर नहीं जाने वाला? सब एक दुसरे के तरफ देखने लगे कि इसके कहने का क्या मतलब था? उनमें से एक गाड़ी से निचे उतरा और बुढ़े की तरफ बढ़ा।

ओ बुढ़े तु क्या कहना चाहता है? किसके बारे में बात कर रहा है तु? उग्र ठाकुर का आदमी बुढ़े के तरफ बढ़ते हुए पुछा।

बुढ़ा-(मुस्कुराते हुए) क्यों डर लग रहा है?

उग्र ठाकुर का आदमी- कहीं तु उसके बारे में तो नहीं बात रहा था? तेरे कहने का मतलब कहीं ये तो नहीं कि वो जिंदा...? हा हा हा ये देखो इसका कहना है वो जिंदा होकर फिर से आया है। अरे सब अफवाह है। चल मानता हूँ वो जिंदा है, तो आया क्यों नहीं? पता है क्यों नहीं आया? क्योंकि वो डर गया है। उसने यमराज को देख लिया है इसलिए वो वापस उसके पास नहीं आया समझा बुढ़े...? जैसे ही वो उस बुढ़े आदमी को मारने के लिए हाथ उठाया उसका हाथ टुटकर लटक गया इससे पहले कि वो पिछे घुम कर देख पाता कि कौन है उसका गरदन भी पकड़ कर तोड़ दिया गया। वो हिल भी नहीं पाया और वहीं गिर गया। उसके पिछे कौन था किसी को भारी बारिश की वजह से दिखाई नहीं दे रहा था। बाकी सभी लोग भी गाड़ी से निचे उतरे। एक पल में ये क्या हुआ कैसे हुआ सोच कर गांव वाले

भी असमंजस में पड़ गए। वहां पर मौजूद सभी लोगों की धड़कन तेज हो गयी। सबकी नजर सिर्फ वहीं पर खड़े उस शख्स पर गड़ी थी जिसने अभी एक को जमीन पर लेटा दिया था। जब वो करीब आया तो उसे देख लोग अर्जुन... अर्जुन... कहने लगे। अर्जुन का नाम सुनते ही बिना वक्त गवाए सब उल्टे पैर गाड़ी में बैठ गए और वहां से भाग गए।

गांव वालों को तो ये एक चमत्कार लग रहा था। किसी को विश्वास नहीं हो रहा था कि ये अर्जुन है।

बुढ़ा किसान- मुझे पूरा विश्वास था अर्जुन कि तुम जरूर आओगे।

अर्जुन- आता कैसे नहीं काका अपना वचन जो पूरा करना था।

अर्जुन के इस बात से साफ पता चलता है कि यहां आने के बाद अर्जुन को कुछ चीजें याद आई हैं इसलिए अर्जुन अपने किसी वचन के बारे में बात कर रहा है।

बुढ़ा किसान- बेटा पहले अपने घर जाओ। सिंह साहब और तुम्हारी माँ का इंतजार खत्म करो।

अर्जुन- जी काका। क्या आप मुझे उन तक ले चलेंगे क्योंकि मुझे घर याद नहीं आ रहा है?

बुढ़ा किसान- जी क्यों नहीं? मैं क्या पूरा गाँव आपको ले चलेगा।

पूरा गांव अर्जुन को अपने साथ उसके घर लेकर जा रहा था। कुछ देर बाद एकाएक करके बलवंत सिंह के घर के सामने बड़ी तादाद में भीड़ जमा हो गयी। अर्जुन की माँ छत पर आई और भीड़ देखकर घबड़ा गई। वो दौड़ते हुए वापस घर में गई और बलवंत सिंह से बताने लगीं।

अर्जुन की माँ- सुनिए! देखिये ना पता नहीं क्या हुआ है? पूरा गांव एक साथ यहाँ आया हुआ है।

बलवंत सिंह- क्या पूरा गांव एक साथ ? जरूर उग्र ठाकुर ने कुछ किया होगा।

अर्जुन की माँ- हाँ लेकिन फिर भी ऐसे कभी पूरा गाँव इकट्ठा होकर नहीं आया। जरा देखिये ना क्या हुआ है?

बाहर से गांव वालों की आवाज आने लगी मुखिया जी... मुखिया जी...

आवाज सुनकर बलवंत सिंह ने अपना चादर कंधे पर रखे और मुँहों को ताव देते बाहर आए।

बलवंत सिंह- बोलिए अब क्या किया उग्र ठाकुर ने?

बुढ़ा किसान- उसकी क्या औकात सिंह साहब कि वो कुछ कर सके? उसके कुछ करने से पहले उसके हाथ नहीं कट जायेंगे?

बलवंत सिंह- फिर आज आप सब एक साथ यहाँ कैसे?

सिंह साहब के सवाल का किसी ने भी जवाब नहीं दिया। सब चुपचाप खड़े थे।

बलवंत सिंह- क्या हुआ कोई कुछ कह क्यों नहीं रहा है?

बुढ़ा किसान- बात बहोत बड़ी है और शब्द बहोत छोटे हैं। उस छोटे शब्द से कहीं उस बड़ी बात का अपमान ना हो जाए इसलिए हम कुछ कह नहीं रहे हैं।

बलवंत सिंह- तो हमें कैसे पता चलेगा कि बात क्या है?

बुढ़ा किसान- आप खुद ही देख लीजिए कि बात क्या है?

सभी गांव वाले बिच में से एक-एक करके हटने लगे। उनके हटते ही अर्जुन सामने आया। अर्जुन को देखते ही बलवंत सिंह ने अपनी छड़ी छोड़ दी। इससे पहले कि वो डगमगाते अर्जुन ने उन्हें सम्भाल लिया और गले लग गया। बलवंत सिंह अर्जुन... अर्जुन... कहकर रो रहे थे। अर्जुन की माँ को जैसे ये आवाज सुनाई दी, वे दौड़ी-दौड़ी बाहर आईं। अर्जुन को देखते ही वो उसके गले आकर लग गईं।

सालों बाद एक मां अपने बेटे से मिलकर कैसे रोती है इस बात का एहसास तो केवल एक मां को ही पता होगा। हम सिर्फ सोच सकते हैं महसूस नहीं कर सकते। अर्जुन भी अपने मां से गले लगकर उतना ही रोया जितना की उसकी माँ।

बलवंत सिंह- अच्छा हुआ तु आ गया बेटे नहीं तो अब हमारा धैर्य टूटने ही वाला था।

अर्जुन- आता कैसे नहीं पिताजी कोई अपनों से दूर भला कब तक रहता है?

अर्जुन- मत रोवो मां आपको जितना रोना था आपने रो लिया अब रोने की बारी किसी और की है।

अर्जुन की माँ- हमें छोड़कर कहां चला गया था तु? तुझे पता है तेरे लिए हर रोज मैं खीर बनाती थी कि तू आएगा और तुझे अपने हाथों से खिलाऊंगी लेकिन तु नहीं आता था।

अर्जुन- माफी चाहता हूँ माँ लेकिन अब तो आ गया हूँ ना? अब जितना चाहे उतना खिला देना।

अर्जुन की माँ- मेरा बेटा भुखा होगा। देखो तो कितना पतला हो गया है? आओ घर में चलो मैं तुम्हें अपने हाथों से खाना खिलाती हूँ।

अर्जुन अपने मां के साथ घर में चला गया।

बुढ़ा किसान- मुखिया जी आपसे एक बात कहनी थी।

बलवंत सिंह- हाँ कहिये!

बुढ़ा किसान- जी हम गांव वालों ने मन्नत मांगा था कि जब अर्जुन वापस लौट आएंगे तब हम महाकाल का जलाभिषेक करेंगे हर साल की तरह। पिछले छह सालों से महाकाल का अभिषेक नहीं किया गया।

बलवंत सिंह- जी बिल्कुल ठीक कहा आपने। हम कल के दिन ही पूजा करवा लेते। कल वैसे भी सोमवार है, महाकाल का दिन है। आपलोग आज से ही तैयारी शुरू कर दीजिए।

गांव वाले- जी ठीक है।

उस तरफ वो पांचो लोग उग्र ठाकुर के सामने सर झुकाकर खड़े थे।

उग्र ठाकुर- क्या हुआ ये क्या भेष बना रखी है? कहां से आ रहे हो तुम लोग?

सभी सिर झुकाए खड़े हैं।

उग्र ठाकुर- अरे कोई कुछ बोलता क्यों नहीं?

एक आदमी- अगर बोलेंगे तो आप विश्वास नहीं करेंगे ठाकुर साहब।

उग्र ठाकुर- अगर तू अभी नहीं बोला ना तो तुझे मैं कभी बोलने लायक नहीं छोड़ुंगा।

दूसरा आदमी- अर्जुन आ गया है ठाकुर साहब।

उग्र ठाकुर- तो वो आ गया? और हमने कुछ नहीं किया?

दूसरा आदमी- आप बस आज्ञा दो ठाकुर साहब। अभी सारे आदमियों को ले जाकर खत्म कर देता हूँ उसको।

उग्र ठाकुर- सारे आदमियों को ले जाकर? कितने आदमियों को ले जाएगा? गिनती बता कि तु कितनों को ले जाएगा?

दूसरा आदमी खामोश हो गया। उसे लगा कि यह बात बोलके उसने कुछ गलती कर दी। उसे लगा कि उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।

उग्र ठाकुर- अरे बोल कितनों को ले जाएगा?

दूसरा आदमी- सबको।

उग्र ठाकुर-(कान पकड़ कर) बस तेरी यही बात मुझे इस बात का एहसास दिला रही है कि वो कितना ताकतवर है और तुझमें उसके लिए कितना डर है? याद है तुझे तुने पिछले बार भी ऐसा ही कहा था और लेकर भी गया लेकिन सब खाली हाथ लौटे क्योंकि तुम्हारे हाथ काम लायक नहीं बचे थे याद है?

उस आदमी का पसीना छूटने लगा। शायद यही बात उसे उस समय याद आ गई थी इसलिए वो सोच रहा था कि ये बात उसे नहीं कहना चाहिए था।

उग्र ठाकुर- अब आ ही गया है तो थोड़ा आराम कर लेने दो। सही समय देखकर फिर मार देंगे और इस बार दरिया में नहीं फेंकेंगे बल्कि गला काटकर सूली पर टांग देंगे।

अचानक उग्र ठाकुर का ध्यान रिया पर गया। रिया वहीं खड़ी होकर उनकी सारी बातें सुन रही थी।

उग्र ठाकुर- तुम लोग जाओ। उग्र ठाकुर ने अपने आदमियों से कहा।

उग्र ठाकुर- मैं जानता हूँ कि तुम यह बात सुनकर बहुत खुश हो रही होगी कि अर्जुन आ गया है। यही चाहती थी ना तुम? लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि इस बार उसकी मौत आसान नहीं होगी।

रिया- सही कहा आपने “उसकी मौत इतनी आसान नहीं होगी” और हाँ मैं यही चाहती थी कि अर्जुन आ जाए।

उग्र ठाकुर- अब? अब क्या? तुम्हें क्या लगता है कौन जीतेगा मैं या वो?

रिया- ना आप जीतेंगे और ना वो। जीतेगा... तो सिर्फ सच्चाई क्योंकि बुराई इंसान को मारती है और सच्चाई सिर्फ उस इंसान के अन्दर की बुराई को।

उग्र ठाकुर- तुम भी उसी की भाषा बोल रही हो। उसके सारे रंग-ढंग मुझे अब तुममें दिखाइ दे रहे हैं।

रिया- थोड़ी बहुत उसके रंग-ढंग तो मुझमें दिखेंगे ही ना उससे प्यार जो किया है मैंने?

उग्र ठाकुर- जैसे छह साल तड़पती रही तुम उसके लिए वैसे ही आगे भी तड़पोगी।

इतना कहकर उग्र ठाकुर चला गया। उसके शब्दों से रिया के जज्बात छीन-बीन हो गये। किसी के दिल में क्या चल रहा होता है ये हमें नहीं पता होता है। हमारे कुछ कहने से सामने खड़े उस इंसान के दिल पर क्या बितेगा हमें ये पता होता है लेकिन ये नहीं पता होता है उसके वजह से वो कैसे-कैसे फैसले ले सकता है? रिया ने कुछ ऐसा फैसला कर लिया था जो उसके हित में नहीं था और ना ही अर्जुन के हित में।

दिन बित चुका था शाम का वक्त था। बलवंत सिंह, अर्जुन की माँ, उसके चाचा-चाची सब कोई बरामदे में बैठकर अर्जुन के बारे में बातचीत कर रहे थे। अर्जुन बाहर लड़कियाँ फाड़ रहा था।

रणधीर चाचा- भईया? मुझे आपसे एक बात कहनी थी।

बलवंत सिंह- हाँ कहो!

रणधीर चाचा- भईया जब से अर्जुन आया है तबसे मैं बहोत परेशान हूँ।

बलवंत सिंह- ऐसा क्यों?

रणधीर चाचा- भईया क्योंकि ऐसा लग ही नहीं रहा है कि ये हमारा अर्जुन है।

बलवंत सिंह- क्या बकवास कर रहे हो रणधीर? तुम कह रहे हो कि ये अर्जुन नहीं है?

रणधीर चाचा- नहीं भईया मेरे कहने का मतलब वो नहीं है। भाभी जरा आप ही देखिए उसे। उसे देखकर ऐसा लगता है कि हमारा अर्जुन है? अरे हमारा अर्जुन इतना खामोश थोड़ी ना रहता ता?

बलवंत सिंह- रणधीर, जिस इंसान के पास उसका प्यार नहीं होता है उसके पास कहने के लिए कोई शब्द भी नहीं होते। शायद इसीलिए वो शांत है।

रणधीर चाचा- भईया, लेकिन प्यार के वजह से छह साल तक अपने परिवार से दूर रहना, खबर भी ना देना ये कोई बात है?

बलवंत सिंह- ये तो उसकी पुरानी आदत है। तुम्हें तो याद ही होगा जब वो शहर में पढ़ने गया था तो एक बार वो दो सालों तक घर नहीं आया था।

रणधीर चाचा- हाँ ये बात तो मैं मानता हूँ।

अर्जुन की माँ- पता नहीं क्यों पर मुझे अर्जुन कुछ परेशान सा लग रहा है।

बलवंत सिंह- परेशान तो मुझे भी लग रहा है लेकिन क्या करूँ जहाँ तक मुझे पता है वो अपनी परेशानी किसी को भी नहीं बताएगा। उसकी ये पुरानी आदत है।

रणधीर चाचा- लेकिन भईया एक बार पुछ लेते तो अच्छा होता क्या पता वो बता ही दे।

बलवंत सिंह- अच्छा अभी पुछता हूँ।

अभी सिंह साहब सोच ही रहे थे कि अर्जुन से कैसे उसकी परेशानी जानी जाए तभी अन्दर से अर्जुन की चाची चाय लेकर आ गई।

अर्जुन की माँ- अरे अर्जुन बेटा?

अर्जुन- (कुल्हाड़ी को हवे में रोकते हुए) हा माँ?

अर्जुन की माँ- बेटा चाय पी लो कितनी लडकियां फाड़ोगे?

अर्जुन- फाड़ लेने दो मां इतने दिनों से इन्होंने चाचा जी को बहोत परेशान किया है।

रणधीर चाचा- बेटा उससे ज्यादा तेरी कमी ने हमें परेशान किया है। अब आ जाओ चाय पी लो बाद में चीर लेना लडकियां।

अर्जुन ने कुल्हाड़ी को वहीं पटक दिया और आकर उनके साथ बैठ गया। चाची ने एक कप चाय अर्जुन को भी दे दिया।

अर्जुन-(चाय चखते हुए) हुमम चाय तो बहोत अच्छा बना है।

रणधीर चाचा- लेकिन तुम तो शाम के समय चाय नहीं पीते ना?

अर्जुन- नहीं चाचा चाय के बिना तो मेरा शाम ही नहीं होता? ऐसा आपसे किसने कह दिया कि मुझे चाय पसंद नहीं है?

रणधीर चाचा- किसी और ने नहीं बल्कि तुमने ही कहा था।

अर्जुन- क्या मैने?

सभी लोग हैरान रह गए। हैरानी इस बात से थी कि जो इंसान सपने में भी अपने कहीं बातों को नहीं भूलता था आज वो अपनी बात से मुकर कैसे गया?

बलवंत सिंह- बेटे क्या बात है? तुम हमें कुछ परेशान से लग रहे हो? देखो हम जानते हैं कि तुम अपनी कोई भी बात हमसे नहीं बताते लेकिन एक बार कोशिश करके जरूर देखो तुम्हारे दुख तकलीफ सब अपने आप आधे हो जाएंगे।

अर्जुन- आप लोगों से नहीं बताऊंगा तो और किससे बताऊंगा पिताजी? वास्तव में मैं यही तो चाहता था कि आप लोग मेरे सामने हों और मैं आपसे दिल खोलकर सारी बातें कहूँ, अपनी तकलीफ बताऊँ, इतने सालों तक आपसे दूर अकेले कैसे रहा वो बताऊँ।

रणधीर चाचा- इतने साल हमसे दूर कैसे रहे अर्जुन?

अर्जुन-(गहरी सांस भरकर) मैं...सबकुछ भुल चुका था चाचाजी! मुझे कुछ भी याद नहीं था। यहाँ तक कि मुझे अब भी बहोत सी चीजें याद नहीं हैं।

बलवंत सिंह- यह सब कैसे हुआ?

अर्जुन- मुझे कुछ ठीक से याद नहीं कि ये कैसे हुआ? जब मुझे होश आया तो मैं अस्पताल में था। डाक्टरों का कहना था कि मेरे कमर में खंजर लगा था। मेरे सर पर भी गहरा चोट लगा था जिसकी वजह से मैंने अपनी याददाश्त खो दी थी। मैं सब कुछ भुल चुका था यहाँ तक कि अपना नाम भी। खन्ना अंकल ने मुझे नया नाम दिया “आकाश”। उन्होंने ये नाम इसलिए रखा क्योंकि उनका मानना था कि मैं आसमान से आया हूँ और वो ऐसा मुझसे इसलिए कहते ताकि मुझे लगे कि मैं आसमान के फरिश्तों में से एक हूँ और एक दिन वो बाकी फरिश्ते मुझे लेने आएंगे। मैं जानता था कि वो बस मेरा दिल बहलाने के लिए यह सब कह रहे हैं। छह सालों बीत गए थे लेकिन मुझे मेरे बारे में कुछ पता नहीं चला। बस कुछ परछाइयाँ दिखाई देती थीं और जब मैं उन्हें देखने की कोशिश करता तब मेरी निंद खुल जाती थीं। मैं आस छोड़ चुका था। मुझे लगा कि अब मैं आप लोगों से कभी नहीं मिल पाऊंगा। कुछ दिनों बाद फिर मैं रिया से मिला। उससे मिलने के बाद मुझे कुछ-कुछ बातें याद आने लगीं। आखिर में उसी ने मुझे आप लोगों के बारे में बताया जिसके वजह से मैं वापस लौट पाया।

रणधीर चाचा- तो तुम्हें याद नहीं कि तुम्हारे साथ क्या हुआ था?

अर्जुन- नहीं।

रणधीर चाचा- हम याद हैं कि नहीं तुम्हें?

अर्जुन- जब मैं यहाँ आया तब तक आप लोग भी मुझे याद नहीं थे लेकिन जब मैंने आप लोगों को देखा तभी मुझे आपकी बातें आपके साथ में बिताए वक्त याद आने लगे।

रणधीर चाचा- चलो बेटा कोई बात नहीं हम तो तुम्हें याद हैं ना?

अर्जुन- हाँ चाचा। आप लोगों से ये बात कैसे कहूँ बस यही सोचकर जरा सा परेशान था।

अर्जुन की माँ- परेशान मत हो बेटे। जैसे हम तुम्हें याद आ गए वैसे तुम्हें बाकि सारी चीजें भी याद आ जाएंगी।

अर्जुन- जी माँ।

रणधीर चाचा- वैसे कितना लकड़ी फाड़ चुके हो अब तक?

अर्जुन- अऽ चार टहनियां तो फाड़ ही चुका हूँ।

रणधीर- बस? मैं तो इतने समय तक दस-दस टहनियां फाड़ देता हूँ।

अर्जुन- सच में?

रणधीर चाचा- और नहीं तो क्या? ताकत में तो तुम पहले भी मुझसे पीछड़ जाते थे।

अर्जुन- हा हा हा। पीछड़ तो जाऊंगा ही चाचा। आप कहां हट्टे-कट्टे पहलवान और मैं कहाँ दुबला-पतला?

रणधीर चाचा- आओ मैं तुम्हें दिखाता हूँ लकड़ी कैसे चीरते हैं?

अर्जुन- चलिए।

अर्जुन से हारा बाजी करना रणधीर चाचा कि पुरानी आदत थी। लकड़ी चीरना तो उनका एक बहाना था असल में वे अर्जुन के सामने अपने ताकत का प्रदर्शन करना चाहते थे। वे लकड़ी चीरते जा रहे थे और कुछ ही देर में उन्होंने चार टहनियों को चीर भी दिया लेकिन ज्यादा ताकत लगाने के वजह से वे जल्द ही थक भी गए। वे बैठकर आराम करने लगे।

बलवंत सिंह और अर्जुन की माँ उन्हें देखकर उनका मजाक मजाक बना रहे थे। पता नहीं अर्जुन के दिमाग में क्या चल रहा था कि उसका ध्यान वहां पर नहीं था।

रणधीर चाचा- अरे क्या हुआ क्या सोच रहे हो?

अर्जुन-(उनके पास बैठते हुए) चाचा मुझे अभी एक बात याद आइ। एक बार मैं अपने आप बेहोश हो गया था। मुझे सपने की तरह बहोत सारी चीजें दिखाई दे रहीं थीं। उसी में मैंने अपने आप को भी देखा था। क्या पता वो सपना था या हकीकत ?

रणधीर चाचा- क्या देखा था तुमने?

अर्जुन- मैंने देखा था कि बहोत सारे लोग हैं। सभी हाथ में तलवार लेकर खड़े हैं। मैं उनसे लड़ रहा हूँ... अकेला। मेरे साथ में एक लड़की भी थी। मुझे उसका चेहरा नहीं दिख रहा था। वो उन लोगों से डरकर मेरे पीछे छुप रही थी।

रणधीर चाचा- आगे?

अर्जुन- फिर अचानक पता नहीं क्या हुआ कि मैं उसे गोद में लेकर खड़ा था। सामने एक बहोत बड़ा दरिया था। वो इतना गहरा कि मुझे उसका अन्त भी नहीं दिखाई दे रहा था और फिर मैं उस दरिया में गिर गया। यही बात समझ में नहीं आता है चाचा कि वो सपना है था मेरा अतीत?

रणधीर चाचा- वो सपना नहीं बल्कि तुम्हारे अतीत का सबसे बुरा वक्त था। वो लड़की कोई और नहीं बल्कि रिया थी। वो लोग जिनसे तुम लड़ रहे थे वो उग्र ठाकुर के लोग थे। तुम्हें मारकर वो तुम दोनों को अलग करना चाहते थे पर नहीं कर पाए। जिस दरिया की तुम बात कर रहे हो वो उत्तर ओर हमारे गांव के सिवान के पास है।

अर्जुन- मुझे वहाँ जाना है।

रणधीर- नहीं तुम वहाँ नहीं जाओगे।

अर्जुन- लेकिन क्यों?

रणधीर चाचा- क्योंकि वहाँ पर तुम्हारी समाधी है।

अर्जुन- (कुछ देर तक चाचा को घूरने के बाद) हा हा हा। मेरी समाधी? चाचा फिर तो मैं पक्का जाऊंगा। वैसे भी जीते जी अपनी समाधी देखना कहां किसी को नसीब होता है?

रणधीर चाचा- देखो शाम हो चुकी है। तुम्हारा वहाँ इस समय जाना खतरे से खाली नहीं

है।

अर्जुन- जिसने मौत को मारा है आप उसे खतरे की बात बता रहे हैं चाचा?

रणधीर चाचा- नहीं अर्जुन। मैं तुम्हें ये बताने की कोशिश कर रहा हूँ कि तुम इस वक्त वो अर्जुन नहीं हो। अभी तुम्हें कुछ याद नहीं है।

अर्जुन- पता है चाचा कि मुझे कुछ याद नहीं लेकिन इतना याद है कि मैं कौन हूँ। अच्छा चाचा मैं जा रहा हूँ।

रणधीर चाचा- ठीक है जाओ लेकिन जल्द ही आ जाना।

अर्जुन- जी चाचा।

रणधीर चाचा- और सुनो, (चाभी फेंकते हुए) मेरा बाइक लेकर जाओ।

अर्जुन- धन्यवाद!

अर्जुन बाइक लेकर उत्तर की ओर निकल गया जहाँ गाँव का सिवान(आखिरी सीमा) है। जैसा की रणधीर चाचा ने बताया था कि दरिया वहीं पर है। कुछ देर बाद अर्जुन वहाँ पर पहुंच गया। वैसे तो गाँव हरे-भरे पहाड़, नदी और खेत की हरियाली से परिपूर्ण था लेकिन यहाँ का नजारा और भी रोमांचक था। गजब का दृश्य था। शाम होने के वजह से चारों तरफ ओस पड़ रहे थे। सूरज का रौशनी जमीन पर अब भी हल्का सा दिखाई पड़ रहा था। अर्जुन काफ़ी देर तक उन नजारों के बीच ही खोया रहा फिर वो अपने बाइक से उतरकर दरिया के करीब आया। सड़क से कुछ ही दूरी पर था। ओस गिरने के वजह से दरिया निचे तक नजर नहीं आ रहा था। वो वहाँ खड़े होकर अपने उस याद को याद करने की कोशिश कर रहा था जिसका ताल्लुक इस दरिया से था। वो याद जो अब तक साफ नहीं हो पाया है। अर्जुन अपना आंख बंद करके बहोत कोशिश कर रहा था उस याद को साफ-साफ देखने के लिए लेकिन नहीं देख पाया। उसे केवल परछाई और परछाई ही दिखाई दीं। रिया भी साफ नहीं दिखाई दे रही थी। अर्जुन ने हार नहीं माना। वो लगातार कोशिश किये जा रहा था। हर कोशिश नाकाम हुई। अर्जुन को केवल घटना याद रहा था उसे अंजाम देने वाला शख्स नहीं। थक हारकर वो वहीं एक पेड़ के पास जाकर बैठ गया। उस उंचाई पर केवल वही एक पेड़ था जोकि सुख चुका था। उसकी बनाई गई समाधि भी वहीं पर थी। इन सब चीजों को देखकर वो अपना आपा खो बैठा। उस पेड़ के डाल को तोड़कर वो अपने समाधि को तोड़ने लगा। अपने समाधि को तोड़ने के बाद उसका गुस्सा शांत हुआ।

इस बात से ये तो हमें साफ हो जाता है कि उसके साथ जो भी हुआ कुछ ठीक नहीं हुआ और इस बात से अर्जुन के अन्दर बदले की भावना है। हो सकता है कि हमें ऐसा लग रहा हो कि रिया जब जिंदा है तो अर्जुन ने क्या खोया कि उसके अन्दर बदले की भावना जग रही है? अगर ये सवाल है तो जवाब ये है कि अर्जुन ने अपना वक्त खोया है, परिवार का प्यार खोया है, रिया का प्यार खोया है और सबसे महत्वपूर्ण चीज ये है कि ऐसा इंसान जो प्यार करने वाले को अलग करने के लिए इस मोकाम तक पहुंच जाए कि जान लेना भी उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं, ऐसा इंसान अर्जुन के लिए दुराचारी है जिसे ये कभी बख्श नहीं सकता। बस यही वो कुछ कारण है जिससे अर्जुन के मन में बदले की भावना है।

दिन बीत गया। आज का दिन सभी गाँव वालों के लिए उत्सव का दिन

है। आज महाकाल का जलाभिषेक होने वाला है। हर साल की तरह इस साल भी जलाभिषेक अर्जुन के हाथों से होने वाला है। अर्जुन और उसका पूरा परिवार यज्ञ स्थल पर बैठे हुए हैं। पंडित जी यज्ञ के मंत्र जाप कर रहे थे।

पंडित जी- आप घी को हवन कुंड में विसर्जित करें।

इस तरह महायज्ञ का शुरुआत करते हुए पंडित जी ने शंख बजाया।

शंख के आवाज़ से पूरा गांव गुंज उठा। उग्र ठाकुर के कानों तक भी ये आवाज़ पहुंची। आवाज़ सुनकर वो आश्चर्य में पड़ गया।

उग्र ठाकुर-(अपने आदमी से) सुनो! ये शंख बजने की आवाज़ कहां से आ रही है?

उसका आदमी- ठाकुर साहब अर्जुन के लोटने की खुशी में महाकाल का जलाभिषेक किया जा रहा है।

उग्र ठाकुर- जलाभिषेक?

उसका आदमी- जी।

उग्र ठाकुर- हमें आमंत्रित नहीं किया?

उसका आदमी- साहब ये तो भगवान का दरबार है। यहाँ किसी को आमंत्रित नहीं किया जाता। यहाँ जिसका मन करे वो आ सकता है।

उग्र ठाकुर- (थप्पड़ मार कर) मुझे शिक्षा दे रहा है? क्या मुझे नहीं पता? सुनो अपने आदमियों को लेकर जा पुजा रोकवा दे और हाँ उस खंजर बाज़ को भी अपने साथ लेकर जाना। बोल जब तक मुझे आमंत्रण नहीं भेजेंगे तब तक पुजा आगे नहीं बढ़ेगा।

उसका आदमी- ऐसा मत कीजिए ठाकुर साहब। वहाँ पर अर्जुन पहले से मौजूद है। वैसे भी भगवान् के कार्य में दखलंदाजी करना अच्छी बात नहीं।

उग्र ठाकुर- और मेरे बिना कोई आयोजन करना भी कोई अच्छी बात नहीं।

उग्र ठाकुर के लोग पुजा रोकने के लिए निकल गए और कुछ देर बार मंदिर पहुंचे। इनलोगों के वहाँ पहुंचते ही सबका ध्यान भंग हो गया। सभी अपना-अपना काम छोड़कर इनके हरकतों पर ध्यान देने लगे।

पुजा स्थल पर पहुंच कर ये पुजा बंद कराने लगे। बंद करो ये पुजा। ये पुजा आगे नहीं बढ़ सकता।

इन्हें देखकर अर्जुन का मिजाज पहले से ही खराब हो गया था ऊपर से अब ये पुजा बंद करवा रहे हैं ऐसे में न जाने अर्जुन क्यों अपने आप को अब तक रोक कर रखा था।

रणधीर चाचा- क्यों रोकें हम ये पुजा?

“क्योंकि तुमने ठाकुर साहब को आमंत्रित नहीं किया है। इसलिए उन्होंने कहा है ये पुजा बंद कराने के लिए। अब जब तक तुम उन्हें आमंत्रित नहीं करोगे तब तक पुजा नहीं होगा।” उनमें से एक ने जवाब दिया।

उसकी बात सुनकर अर्जुन का गुस्सा उसके बर्दाश्त करने की सीमा को लांघ गया। वो यज्ञ से उठ पड़ा।

बलवंत सिंह- नहीं अर्जुन अभी नहीं। अभी अपने गुस्से को शांत रखो। अर्जुन के पिता ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

अर्जुन को खड़ा होते देख कुछ पल के लिए उग्र ठाकुर के लोग डर गए फिर उसे बैठता देख

उनके सांस मे सांस आया।

रणधीर चाचा- जाकर उनसे कह दो कि ईश्वर सबके लिए होते हैं। उनके अभिषेक में उपस्थित होने के लिए किसी के आमंत्रण की जरूरत नहीं होती। यहाँ जो कोई भी आया है अपने श्रद्धा और भक्ति से आया है। कह दो कि हम आमंत्रित नहीं करेंगे।

अच्छा? फिर तो ये पुजा भी नहीं होगा। उनमें से एक ने जवाब दिया।

अर्जुन- चाचाजी बहोत कर लिए बात। अब आप पुजा में बैठ जाइए। पंडित जी आप पुजा शुरू कीजिए मैं भी देखता हूँ कि मेरे रहते हुए कौन ये पुजा बंद करवाता है?

पंडित जी ने पुजा शुरू कर दी। अर्जुन पुजा स्थल से उठकर सीढ़ियों पर आ बैठा। अब कोई भी अपने जगह से हिल नहीं रहा था मानो जैसे उनके पैर वहीं पर जकड़ गये हों। जब तक पुजा खत्म नहीं हुआ तब तक अर्जुन वैसे ही बैठा रहा।

पंडित जी- (बलवंत सिंह से) अब शिव जी को जल अभिषेक करें।

बलवंत सिंह- बेटे जल अभिषेक करो।

अर्जुन वहाँ से उठकर शिव जी के प्रतिमा के तरफ बढ़ा। उन लोगों के तरफ से मुड़कर जाते ही अर्जुन को ऐसा लगा कि वो लोग कोई हरकत करने वाले हैं इसलिए अर्जुन का कान उनकी हल्की सी भी हरकत की आहट सुनने के तैयार था। वो जैसे ही पीछे घुमा, उग्र ठाकुर का आदमी अपने खंजर बाज़ को आंखों से इशारा करने लगा। वो आदमी खंजर चलाने में माहिर माना जाता है। उसके इशारा करते ही उसने अपने कमर से खंजर निकाला और फिर से एक बार उसने धोखे से अर्जुन पर खंजर चला दिया। खंजर की आहट मिलते ही अर्जुन झुक गया और शिव जी के हाथों से त्रिशूल निकाल कर उसके उपर चला मारा। त्रिशूल उसके सीने से आर-पार हो गया और वो वहीं बैठ गया। इस दृश्य को देखकर सभी लोग अपने-अपने जगह से उठ खड़े हुए। बलवंत सिंह और बाकी परिवार के लोग भी खड़े हो गये।

पंडित जी- आप लोग ना उठें। अगर आप लोग भी उठ जाएंगे तो पुजा पूरा नहीं हो पाएगा।

अर्जुन- पिताजी आप पुजा करवाइए, मैं इन्हें मुक्ति दिलाता हूँ।

रणधीर चाचा- भईया मैं भी थोड़ा मदद कर देता हूँ।

बलवंत सिंह- जरूरत नहीं है। तुम यहीं रुको वैसे भी ज्यादा लोग नहीं हैं।

रणधीर चाचा- फिर भी भइया मुझे उसका मदद करना चाहिए ना?

बलवंत सिंह- चुपचाप बैठ जाओ।

अर्जुन के डर से उसके आदमी वापस भागने लगे। दरअसल यह इनके चाल का एक हिस्सा था। पहले उसपर हमला करना और अगर बाजी उल्टी पड़ी तो डर कर भागना ताकि वो इनके पीछे आए और ये उसे फिर से उसी जगह लेकर जा पाएं। जैसा इन्होंने सोचा था वैसा ही हुआ। अर्जुन इनके पीछे पड़ गया। ये लोग भाग रहे थे। उसी दौरान उसके आदमी ने उग्र ठाकुर को फोन किया।

हैलो! वो हमारे पीछे आ रहा है क्या करें?

उग्र ठाकुर- उसे दरिया के पास लेकर आ और अपने खंजर बाज को तैयार कर दे ठीक पिछले बार की तरह।

वो नहीं बचा। उसने उसे मार दिया है। उसके आदमी ने जवाब दिया।

उग्र ठाकुर- क्या? छी! पूरा खेल बिगड गया। ठीक है एक काम कर तू वहां पर आ, मैं आता हूँ।

“ठीक है।” उसके आदमी ने जवाब दिया।

उग्र ठाकुर- हमारे पास जितने भी आदमी है सबको इकट्ठा करो हमे अभी जाना है।

उसके आदमी- कहां जाना है ठाकुर साहब?

उग्र ठाकुर- जितना कहा उतना करो।

उसके आदमियों ने एक-एक करके अपने सभी लोगों को बुलाना शुरू कर दिया। देखते ही देखते वहां सैकड़ों लोग जूट गये। ऐसा लग रहा था कि लव वॉर होने वाला है। इस लव वॉर का नियम था एक के विरुद्ध सैकड़ों लोग। सभी गाड़ियों में भरकर निकल गये। किसी को भी पता नहीं था कि वे लोग कहाँ जा रहे हैं खास करके उन्हें जिन्हें बुलाया गया था। अर्जुन एक पत्थर पर आराम से बैठकर उनके आने का इंतजार कर रहा था और उसके पिछे गांव वाले और उसका परिवार खडा था। उग्र ठाकुर अपने लोगों के साथ वहां पहुंचा। उसे देखकर गांव वाले घबडने लगे। अर्जुन अपने गुस्से में डुबा हुआ था, उसकी आंखे प्रतिशोध के आग में लाल थीं। गाड़ी से उतरकर उग्र ठाकुर अर्जुन को गौर से देखने लगा। उसके आगे उसके आदमी जमीन पर लेटे हुए थे।

उग्र ठाकुर- तो आखिर मैं तु आ ही गया। मैंने सुना कि तु आया है लेकिन मुझे लगा कि कोई उसका हमशकल होगा, लेकिन इन लोगों को ऐसे जमीन पर लेटा हुआ देख मुझे विश्वास हो गया कि ये तु ही है अर्जुन। यह गांव वाले कहते रहते थे कि हमारा कुमार जरूर आएगा लेकिन मैं पागल सोचता था कि मरा हुआ इंसान कैसे लौट कर आ सकता है? बहोत बड़ी गलती कर दी मैंने। तुझे दरिये में गिरने पहले ही जान से मार देना चाहिए था। खैर कोई बात नहीं इस बार मैं वो अधूरा काम पुरा कर लूंगा।

अर्जुन- तु क्या अपना अधूरा काम पूरा करेगा? अधूरा काम तो मुझे पूरा करना था इसलिए मैं आज जिंदा हूँ। आज यहां जो भी होगा उसे तेरी आने वाली पीढ़ी कभी नहीं भूलेगी और ना कभी ऐसी गलती दोहराने की कोशिश करेगी।

उग्र ठाकुर- सुनो! आज चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन यह बचना नहीं चाहिए।

काफी देर बाद तक भी उसके आदमी हिले तक नहीं बस उग्र ठाकुर का चेहरा ही देखते रहे।

उग्र ठाकुर- क्या हुआ यहां मेरा मुंह क्या देख रहे हो जाओ।

सभी आदमियों ने अपने हथियार निचे फेंक दिया और कहा, “ हम यह गलती दोबारा नहीं कर सकते। जरा उसके तरफ देखीए। वो अकेले ही हम दो सौ कुत्तों के सामने खडा है।

जानते हैं क्यों? क्योंकि वो सही है और हम गलत। हमें इस झुंड में रहकर गलत नहीं बन्ना है। अब दुश्मनी तुमने किया है तो तुम ही लडो हम नहीं लड सकते। पिछले छह सालों से हम देखते आ रहे हैं उसके ना होने के बावजूद तुमने किसी के साथ सही बर्ताव नहीं किया, लोगों को पानी के लिए भी रूलाया तब हमें अर्जुन की कमी महसूस हुई। हम तब मजबूर थे इसलिए तुम्हारे हां में हां मिला रहे थे पर अब नही अब तुमने जो किया है उसका हिसाब चुकता करो। सभी लोग पिछे हट गये।

उग्र ठाकुर अकेले ही आगे खडा था।

उग्र ठाकुर- धोखेबाज़! तुम। को तो मैं बाद में देखूंगा पहले इससे तो निपट लूं। इतना

कहकर उग्र ठाकुर जोर से चिल्लाया “भुवन”...।

उसके चिल्लाते ही गांव वालों के भीड़ में से भुवन ने एक लम्बा छलांग मारा और हवे में आ गया। उसके हाथ में खंजर था। अर्जुन उसे देख नहीं पाया क्योंकि भुवन उसके पीछे था। तभी अचानक रिया उसके पीछे आ खड़ी हो गई ताकि भुवन जो खंजर लेकर हवा में छलांग लगाकर अर्जुन को मारने जा रहा वो खंजर रिया को लग जाए। शायद यही वो फैसला था जो रिया ने किया था। वो जानती कि वो और अर्जुन कभी एक नहीं हो पाएंगे इसलिए उसने फना हो जाने का फैसला किया था। रिया के पीछे आते ही अर्जुन ने भांप लिया कि खतरा कहां है? वो पीछे घुमा और रिया लेकर दुसरी तरफ घुम गया। खंजर अर्जुन के पीठ में लग चुका था। रिया उसकी बांहों में थी। जिस वारदात की अंजाम वो खुद बनना चाहती थी वो अर्जुन बन गया। ये एक ऐसा दृश्य था जो पहले भी अर्जुन और रिया के साथ हो चुका था।

अचानक अर्जुन कांपने लगा। उसे इस घटना को देखकर पहले की याद आने लगी। कुछ चेहरे जो अब तक अर्जुन को सिर्फ साए की तरह दिखाई दे रहे थे वो इसे साफ दिखाई देने लगे। वो लडकी भी जो बगीचे में अर्जुन के साथ खेल रही थी, जिसे अर्जुन अपने गोद में लेकर दरिया के पास खड़ा था। वही लडकी इससे बात कर रही थी, “एक बात बताऊँ? तुम ना इतना गुस्सा, लडाई-झगडे मत किया करो।

अर्जुन- अच्छा? और वो क्यों?

लडकी- क्योंकि गुस्सा करने से लडाई-झगडे करने से सिर्फ मुसीबतें बढती हैं उनका हल नहीं होता।

अर्जुन- अच्छा है! यही तो मैं चाहता हूं कि मुसीबतें बढे और मुझे मरने का मौका मिले।

लडकी- हमेशा उल्टा ही जवाब देते हो? और कभी यह मुसीबत मुझपर आ गयी और मुझे कुछ हो गया तो?

अर्जुन- इसलिए तो मैं कह रहा हूं कि प्यार का डंका मत बजाया फिरो तुम भी इसकी आदत डाल लो!

लडकी- नहीं! ना मैं लडना सीखुंगी और ना ही तुम्हें लडने दूंगी, हम प्यार करते हैं हम तो प्यार से ही सबको हरा सकते हैं फिर लडने की जरूरत ही क्या?

अर्जुन- प्यार से कोई नहीं हारता रिया अगर किसी को हराना है तो लडना पडेगा और देखना एक दिन खुद तुम मुझसे जरूर कहोगी कि तुम सही थे। वैसे भी ये लडाई मैं शौक से नहीं लडता बल्कि लोगों के भलाई और हक के लिए लडता हूँ। अगर इसके वजह से मुझे कुछ हो भी जाता है तो भी मुझे कोई गम नहीं।

रिया- मान लो कि तुम्हें कुछ नहीं हुआ बल्कि मुझे कुछ हो गया तो?

अर्जुन- ऐसा क्यों कह रही हो? हम एक ही तो हैं! है न?

रिया- हाँ हम एक ही हैं लेकिन मेरे कहने का मतलब वो नहीं था। अर्जुन समझने की कोशिश करो अगर इस वजह से मुझे हम में से किसी एक को भी या फिर मुझे कुछ हो गया तो? क्या तब हम एक रह जाएंगे?

अर्जुन- नहीं, नहीं रह पाएंगे पर मुझे इतना पता है कि मेरी वजह से या मेरी दुश्मनी की वजह से कुछ हुआ तो मैं एक छण भी बिना वक्त गंवाए खुद को मौत के हवाले कर दूंगा।

रिया- अच्छा! मेरे लिए जान दे सकते हो लेकिन हमारे लिए ये लड़ाई-झगड़ा नहीं छोड़ सकते?

अर्जुन- हमारे लिए मतलब? अब तक तो तुम अपने बारे में सोच रही थी कि मुझे हो गया तो और अब हमारे लिए?

रिया- तो फिर हमारे लिए नहीं सोचूं तो किसके लिए सोचूं? तुम ही सोचो ना अभी तो हमें शादी करना है उसके बाद सुहागरात मनाना है और फिर बच्चे पैदा करना है, उनके साथ खेलना है।

अर्जुन- वैसे अभी तुमने जितना कुछ भी कहा उसमें से मैंने सिर्फ दो बातें ही नोटिस की सुहागरात और बच्चा। अऽ अगर तुम मंजूरी दो तो ये काम मैं शादी के पहले भी कर सकता हूँ।

रिया- बक! जब देखो तब बस तुम्हें मजाक ही सुझता है।

अर्जुन- हा हा हा।

अर्जुन ने जो चेहरा देखा वो रिया से अलग था और जो आवाज सुना वो भी। ना तो वो चेहरा रिया से मिल रहा था, ना वो आवाज़ और ना ही उसकी बातें। अर्जुन सन्नाटे में से घिरा हुआ था। जहन में कोई शक नहीं था बल्कि यकीन था कि बेशक ये जो मेरे सामने खड़ी है वो रिया नहीं है। यह वो हो ही नहीं सकती। लोगों को समझ में नहीं आ रहा था कि ये क्या हो रहा? उन्हें जवाब भी जल्द ही मिलने वाला था।

अर्जुन- तुम कौन हो?

रिया- मैं रिया हूँ।

अर्जुन- मैं नहीं जानता जो मैंने अभी-अभी देखा वो क्या था पर मैंने किसी को देखा रिया जिसका रंग-रूप तुमसे नहीं मिल रहा था। उसे भी मैं रिया कहकर बुला रहा था। तुम मुझसे क्या छुपा रही हो रिया?

अर्जुन अभी बात कर ही रहा था कि भुवन फिर से उसकी तरफ उसे मारने के लिए दौड़ा।

अर्जुन ने रिया को अपनी बांहों में से खड़ा कर दिया। भुवन ने जैसे ही तलवार से उसके ऊपर वार किया अर्जुन ने उसका हाथ पकड़कर तोड़ दिया। इससे पहले कि भुवन सम्भल पाता अर्जुन ने पैर से उसके ठेगुने पर मारकर उसके पैर भी तोड़ दिए। अर्जुन उसी गुस्से में पीछे घुमा और रिया से चिल्लाकर पुछा कि कौन है वो?

अर्जुन के भड़कते ही रिया डर गयी और बैठ कर रोने लगी। अर्जुन सब्र नहीं कर पा रहा था वो सब सच-सच जानना चाहता था। रिया को रोते देखकर उसने अपने गुस्से पर काबू किया। वो भी रिया के पास आकर बैठ गया।

अर्जुन- पूरे छः साल रिया मैं अपना अस्तित्व जानने के लिए तड़पता रहा। सोचता था कि क्या पता वो होंगे भी या नहीं, फिर मुझे तुम मिली। एक ही झटके में तुमने मुझे बदल दिया। मैं अपने गमों को भुला चुका था मुझे किसी की जरूरत ही नहीं रही थी। मैंने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था कि तुम मुझे कभी अकेला छोड़ जाओगी। फिर एक दिन आया जब तुमने भी मुझे अकेला छोड़ दिया। मुझे तुम्हारी चिट्ठी मिली। मैं कभी इतना खुश नहीं हुआ था जितना कि उस दिन हुआ था। मेरी एक ख्वाहिश थी कि काश मेरे अस्तित्व में तुम्हारा ही प्यार हो और उस दिन यह जानकर मेरी ख्वाहिश पूरी हो गयी थी कि तुम मेरे

अतीत में हो। लेकिन रिया, पता नहीं यह मुझे आज क्या दिखाई दे रहा है, ऐसा लग रहा है कि अब तक मेरे साथ जो कुछ भी हुआ वो सब झुठ था।

क्या... यह.. क्या यह सब झुठ था? क्या हम एक दुसरे से प्यार नहीं करते? या कोई और है हमारे बीच?

रिया सर झुकाकर के बस रोए जा रही थी। अर्जुन उसके जवाब का इंतजार कर रहा था। रिया ने अर्जुन के तरफ देखा और प्यार से उसके चेहरे पर हाथ फेरते हुए कहा कि, “प्यार तो मैं तुमसे बहोत करती थी अर्जुन लेकिन तुम्हारे प्यार का हकदार मैं कभी नहीं हो पाई क्योंकि तुम इस रिया से नहीं दुसरी रिया से प्यार करते थे।

रणधीर चाचा- अर्जुन क्या तुम अब तक इस रिया को अपनी रिया समझ रहे थे?

अर्जुन- (सिर हिलाते हुए) हाँ।

रणधीर चाचा- क्या तुम्हें वो रिया याद नहीं?

अर्जुन- अभी तक तो नहीं थी पर अब याद आ गई है।

8

खुलासा वारदात का

बलवंत सिंह और अर्जुन की माँ समेत पूरा परिवार चिंतित ग्रस्त था। अर्जुन को जब भी कालेज से छुट्टियां मिलती वो छुट्टियां मनाने घर आ जाता था पर इस बार दो साल हो गए किन्तु अर्जुन घर नहीं आया। ठाकुर साहब जब भी फोन करते तो दुनिया भर के बहाने बनाने लगता। अब तो घर वाले ये भी कहने लगे हैं कि अर्जुन को शहर का हवा लग गया है। जितना कि घर वाले चिंतित थे उससे ज्यादा ठाकुर साहब चिंतित थे बल्कि ये कहें कि उनकी चिंता दुगुनी थी। इनकी दुगुनी चिंता का विषय था गांव वालों के समस्या का समाधान ना कर पाना। पंचायत के मुखिया होते हुए भी ये इन दिनों गांव वालों के लिए कोई उत्तम फैसले नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि लोगों के जहन में इनके इज्जत से ज्यादा किसी का डर बैठा हुआ था।

इस साल फिर से गर्मी की छुट्टियां मिल चुकी हैं। सभी लोग इस बार भी अर्जुन का आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इस बार भी इन लोगों ने अर्जुन से बात करने की कोशिश की लेकिन मुंशी जी ने जो अर्जुन के साथ शहर में रहते थे उन्होंने कहा कि अर्जुन इस बार भी नहीं जा पाएंगे। इस खबर से फिर सबके अरमान बिखर गए थे। बलवंत सिंह अपने आप को इस बात का जिम्मेदार मानकर चुप-चाप कुर्सी पर बैठे थे।

सबको इस बात पर सैयम करना पडा कि चलो अब अगली छुट्टी में अर्जुन जरूर आएगा। अगर नहीं आएगा तो हम खुद जाएंगे। मां को कहां सब्र था? वो तो डरी भी थीं और दीदार को उत्तेजित भी। उन्होंने बलवंत सिंह से कहा। अर्जुन की माँ- सुनिए! मुझे अब और कोई बहाने नहीं सुनने हैं। जाइये और उसे लेकर आइए।

ठाकुर साहब- मैं भी यही सोच रहा था। दूरभान जी(बलवंत सिंह के ड्राइवर)?

दूरभान- जी कहीए?

बलवंत सिंह- गाडी निकालिए हम शहर जा रहे हैं।

दूरभान- जी।

इतना कहकर दूरभान बाहर चला गया।

ठाकुर साहब अभी ठीक से खडे भी नहीं हुए थे तभी बाहर गाडी की आवाज सुनाई दी।

ठाकुर साहब- इतनी जल्दी गाडी चालू कर दिया? अरे दूरभान पांच मिनट रुको तो इतनी

जल्दी भी क्या है? जरा कपडा तो बदल लेने दो।

दूरभान- सिंह साहब ये मैं नहीं हूँ, अर्जुन बाबू हैं !

तब तक रामू काका दौड़ते हुए अंदर आए।

रामू काका- मालकिन देखीए अर्जुन बाबू आ गए।

अर्जुन की माँ उठ खड़ी हुई और दौड़ते हुए बाहर आई। अर्जुन माँ को देखकर मुस्कुराने लगा।

अर्जुन की माँ- यह तो अर्जुन है।

उसकी माँ वहीं पर खड़ी होकर उसके पास आने का इंतजार करने लगीं। जैसे ही अर्जुन पास आया उन्होंने एक छड़ी उठाई और उसी से उसको मारने लगीं। अर्जुन कुदने लगा।

अर्जुन- अरे मां क्यों मार रही हो?

अर्जुन की माँ- चौबीस साल का हो गया है तु लेकिन अब भी तुझमें समझ नाम की कोई चीज़ नहीं आइ। इतने दिनों तक घर क्यों नहीं आया?

अर्जुन- माँ पढाई का बहोत ज्यादा दबाव था इसलिए मैं घर नहीं आ रहा था। पर अब आ गया हूँ ना गुस्सा क्यों हो रही हो?

अर्जुन की माँ- हाँ पगले तू आ गया।

मुंशी जी-(गाडी के पिछे से सामान निकालते हुए) पता है मालकिन अर्जुन बाबू आपको सरप्राइज देना चाहते थे इसलिए उन्होंने मुझे फोन पर ऐसा कहने को कहा।

अर्जुन की माँ- (थोड़े गुस्से में) अच्छा क्या दो सालों से ये मुझे सरप्राइज देना चाहता था?

मुंशी जी-(हडबडाते हुए) न न नहीं मालकिन वो.. वो तो अर्जुन बाबू का यह सबसे कठिन परीक्षा था इसलिए वो यहां ना आकर पढाई में ध्यान देते थे।

बलवंत सिंह- क्या पढाई इतना ज्यादा जरूरी हो गया था कि दो दिन के लिए मिलने नहीं आ सकते थे?

अर्जुन ने जाकर अपने पिताजी के पैर छुए। बलवंत सिंह ने उसे गले लगा लिया और कहा तुम्हारी बहोत चिंता हो रही थी बेटे अगर तुम नहीं आते तो हम ही आने वाले थे।

अर्जुन- मुझे माफ कर दीजिए पिता जी अब दोबारा ऐसा नहीं होगा क्योंकि अब मेरी पढाई पूरी हो चुकी है और मैं वापस कहीं नहीं जाने वाला।

बलवंत सिंह- रामू काका घर को अच्छी तरह से सजवा दीजिए और रसोइयों को कह दीजिए कि पकवान बना दें। आज हमारे घर में खुशी का दिन है तो... वो क्या कहते हैं अंग्रेजी में? फाड़ी-शाडी मनाया जाएगा।

मुंशी जी- सिंह साहब उसे पार्टी-शार्टी कहते हैं।

सिंह साहब- मुंशी जी समझने के लिए शब्द नहीं एहसास जरूरी हैं।

शाम को पार्टी रखा गया। कई सारे सगे-सम्बन्धी भी न्यौते पर आए। यह माहौल शादी के माहौल से कम नहीं था। लोग पी खाकर जश्न मना रहे थे। बस कोई मंडप नहीं था। लोग पुछते कि सिंह साहब, आपने यह पार्टी किस खुशी पर दिया है? तो सिंह साहब सीना चौड़ा करके कहते अरे भाई हमारा बेटा अपनी पढाई पूरी करके अपने घर आया इसलिए हमने इस खुशी के मौके पर सोचा कि क्यों ना इस बात पर पार्टी हो जाए इसी बहाने आप लोगों

से मुकालात हो जाएगा... नहीं नहीं मेरा मतलब मुलाकात हो जाएगा। सिंह साहब ने भी आज दो चार पैक मार लीं थी इसलिए आज इनके अन्दाज थोड़े अतरंगी लग रहे थे। जो लोग इनके सामने सीधे खड़े होने से भी डरते थे आज उन्हें भी इनको पीते देखकर इनके सामने पीने से डर नहीं रहे थे जैसे रणधीर चाचा। बार-बार सिंह साहब से पुछते रहते थे कि भईया आप बोलें तो और एक पैक बनाउं? और पैक बनाते तो अपने लिए भी बढ़ाकर बनाते और इस तरह उनका भी काम हो जाता। आज इन लोगों को देखकर घर की औरतें भी हैरान हैं कि आज न जाने इन लोगों को क्या हुआ है? चलो जो भी हुआ है खुश तो हैं (आपस में बात करती हुई)। चाची ने कहा कि सब यहां जश्न मना रहे हैं लेकिन अर्जुन कहीं दिखाइ नहीं दे रहा? तभी मुंशी जी दिखाई दिए।

चाची- मुंशी जी जरा देखीए तो अर्जुन कहां है? सब यहां एक साथ है और वो पता नहीं कहाँ घुम रहा है? जरा देखीए तो!

मुंशी जी- जी हां मैं देखता हूं।

मुंशी जी कहीं पुछताछ किये बिना यहां-वहां देखे बिना छत पर चढ़े जा रहे थे जैसे उन्हें पहले से ही यह पता था कि अर्जुन यहीं पर होगा।

यह उनका शक था या तजुर्बा यह तो वो ही जाने लेकिन वे सही थे। अर्जुन छत पर ही खड़ा था आसमानों में नजर टीकाए। पता नहीं क्या देख रहा था? उसके चेहरे पर वो फीलिंग ही नहीं थी जो आज सबके चेहरे पर है।

मुंशी जी अर्जुन के पास आकर खड़े हो गये और गहरी साँस भरते हुए वे भी आसमान में देखने लगे।

मुंशी जी-(धीमे आवाज में) लोग वहां निचे जश्न मना रहे हैं और तुम यहाँ आसमान में तारें गिन रहे हो?

अर्जुन- लोग वहां जश्न इसलिए मना रहे हैं क्योंकि वे आज खुश हैं मेरे आने से। मुझे तो किसी बात की खुशी नहीं तो मैं जश्न क्यों मनाऊं?

मुंशी जी- तुम्हें खुश होना चाहिए क्योंकि वे तुम्हारे अपने हैं उनकी खुशी तुम्हारी खुशी होनी चाहिए।

अर्जुन- जानता हूं अंकल और कोशिश भी तो कर रहा हूं खुश रहने की पर क्या करूं मैं खुश होने का दिखावा भी नहीं कर पा रहा हूँ।

मुंशी जी- मैं जानता हूं अर्जुन कि इन दो सालों में तुम्हारे साथ जो हुआ है वो तुम्हें कभी खुल कर हंसने नहीं देगा लेकिन इसके वजह से तुम्हारे घर वालों की भी खुशियाँ छिन जाएंगी। जो हुआ उसे भुलने की कोशिश करो और अब आगे बढ़ने की सोचो।

अर्जुन- भुलना तो मैं भी चाहता हूँ लेकिन कैसे भूलुं समझ में नहीं आ रहा है।

मुंशी जी- लोगों के साथ में रहो, नये दोस्त बनाओ, नया मकसद बनाओ फिर देखो तुम्हारा ध्यान उसी में लगा रह जाएगा और तुम उस मंजर को धीरे-धीरे कर के भुला दोगे।

अर्जुन- आपको क्या लगता है ऐसा करने से क्या सच में मैं उसे भुला दूंगा?

मुंशी जी- कोशिश करने में क्या हर्ज है?

इसके बाद अर्जुन ने कोई सवाल नहीं पुछा और कहा “चलिए निचे चलते हैं”।

दोनों निचे आ गये। निचे आते ही मानो कि अर्जुन के उपर काम का पहाड़ टूट पड़ा। कोई

यहां बुलाता कोइ वहां बुलाता इतने सारे रिश्तेदारों का मेहमान नवाजी करना सचमुच अर्जुन को फुर्सत ही नहीं मिल रही थी किसी और बारे में सोचने की। मुंशी जी उसे इस तरह व्यस्त देखकर थोड़ा खुश हुए उन्हें यकीन हो गया कि यहाँ पर अर्जुन उस बेझीदा मंजर से जरूर बाहर निकल जाएगा।

खुशियों से भरा ये जश्न खत्म हुआ। सब अपने-अपने घर लौट गये। सभी लोग इतने थक चुके थे कि अब वो और खड़ा नहीं रह सकते थे। जैसे-तैसे सभी लोग सो गये। सुबह हुई और नौटंकी चालू हुआ। किसी को उल्टी हो रही है तो किसी को सर दर्द। अर्जुन की चाची उसके चाचा को डांट रही हैं कि क्या जरूरत थी इतना पीने की? और वो कह रहे हैं कि रोज-रोज थोड़ी पीता हूँ। अर्जुन की माँ सिंह साहब के लिए नींबू का शरबत दे रही हैं ये लीजिए इससे आपका सर दर्द खत्म हो जाएगा और नशा भी उतर जाएगा।

सिंह साहब- अर्जुन कहां है?

अर्जुन की माँ- सुबह-सुबह वो अपनी बाइक लेकर गांव का चक्कर लगाने गया है।

बलवंत सिंह- गांव का चक्कर लगाने? लगता है अभी तक उसका बचपना गया नहीं!

अर्जुन की माँ- आपका भी बचपना कल रात को दिखाइ दे रहा था।

बलवंत सिंह ने आगे कोई जवाब नहीं दिया।

उस तरफ अर्जुन गांव का सैर कर रहा था और अपना बचपन ताजा कर रहा था। नदी, तालाब झरने खेत खलीहानो का वो चक्कर काट रहा था। गांव के किसी भी आदमी ने इसे नहीं पहचाना कि ये गांव के मुखिया बलवंत सिंह का बेटा अर्जुन है क्योंकि अर्जुन जब भी गांव आता था तो तीन-चार दिन रहकर ही चला जाता था कहीं घुम भी नहीं पाता था। इस बात से अर्जुन बहुत खुश था कि उसे कोई पहचान नहीं पा रहा है जिससे वो बिना किसी रूकावट के आराम से कहीं पर भी घुम पा रहा था। उसने हर जगह का जायजा लिया। वापस लौटते वक्त उसे एक बरगद का पेड़ दिखा जहां पर कुछ गांव के बड़े-बुजुर्ग बैठ कर आपस में बातें कर रहे थे। अर्जुन भी वहीं पर जा बैठा।

वो वहां बैठे-बैठे बस उनकी बातें सुन रहा था। उसने जो उन लोगों से सुना उस पर उसे विश्वास नहीं हुआ और वो अपनी गाड़ी लेकर घर चला गया। वो सोचने लगा कि इस बारे में किससे पुछना बेहतर होगा? तभी उसने रामू काका को पौधों में पानी डालते देखा। वो रामू काका के पास गया।

रामू काका- और अर्जुन बाबू कैसे हो?

अर्जुन- ठीक हूँ काका। अच्छा काका आपसे एक बात पुछनी थी।

रामू काका- हाँ हाँ पुछो।

अर्जुन- गांव वाले हमारे बारे में भला बुरा क्यों कह रहे हैं?

रामू काका- क्या? आपसे यह बात किसने कही?

अर्जुन- मैंने खुद अपनी कानों से सुना।

रामू काका- क्या बताऊँ बेटे? अब माहौल पहले जैसा नहीं रहा। तुम्हारे पिताजी कमजोर हो गये हैं। अब इनकी बात कोई नहीं सुनता और इसी बात का फायदा उग्र ठाकुर उठाता है। उसने लोगों के दिल में अपने लिए डर बनाया है। दुकानदारों से वसूली करता है, खेतों में पानी चलाने के लिए भी फसल से हिस्सा मांगता है, गांव की लडकियों पर बूरी नजर

डालता है। परेशान करके रख दिया है सबको। पहले तो सिंह साहब ने उसे रोकने की बहोत कोशिश की लेकिन कुछ हासिल नहीं हुआ क्योंकि वो गुंडा है और सिंह साहब मुखिया। उसको अब कोई नहीं रोकता कैसे रोके जब सिंह साहब ने ही कुछ नहीं किया तो औरों का तो कोई बात ही नहीं है।

अर्जुन- क्या वो रोज वसूली के लिए आते हैं?

रामू काका- हाँ, लेकिन क्यों?

अर्जुन- (मुस्कराते हुए) क्योंकि मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।

रामू काका- नहीं ऐसा मत करना। एक तो ठाकुर साहब पहले से ही इस बारे में बहोत चिंतित हैं। अगर कोई और लापरवाही हो गयी तो न जाने उनपर क्या बितेगा?

अर्जुन- उन्हें पता चलेगा तब ना?

रामू काका- लेकिन ऐसा करने में खतरा है क्योंकि वो एक दो नहीं कइ सारे एक साथ आते हैं।

अर्जुन- पर मैं अकेला जाऊंगा।

रामू काका- लेकिन अकेले क्यों?

अर्जुन- क्योंकि यही एक असली क्षत्रिय की पहचान है और मैं यह बात फिर से साबित करूंगा कि हम जहां होते हैं वहां पर लोग अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं।

अर्जुन घर में गया और फिर तैयार होकर वो फिर से घर से निकल गया। वैसे तो उसे अधिकतम लोग नहीं पहचानते फिर भी अपनी पहचान छुपाने के लिए उसने अपने मुँह पर रूमाल बांध लिया और बीच बाजार में जा रुका। वहां पर वो एक चाय वाले के पास जाकर बैठ गया। दिखने में तो सब कुछ ठीकठाक ही था। लोग अपने काम में व्यस्त थे, काफी भीड़ भी थी। ऐसा शोर शराबा देखकर कुछ देर के लिए अर्जुन को राहत मिला कि चलो सब कुछ ठीक तो है।

अर्जुन- (चाय वाले से) भइया एक चाय दो ना!

अभी एक सीप भी नहीं मारा होगा तभी सामने से एक जिप से रेंगते हुए कुछ लोग आये। उन्हें देखकर बाजार में आए लोगों का बर्ताव बदलने लगा। कहां अब तक शोर शराबा था और अब सन्नाटा। आवाज सुनाई भी देती तो सिर्फ उन्हीं लोगों की जो अभी-अभी जिप से रेंगते हुए बाजार आए थे।

उन्हीं में से एक- चलो पैसे निकालो रोज-रोज तुमलोगों को बोलना पडता है। देखते ही पैसा निकाल दिया करो।

चाय वाला- आ गये गुंडा गर्दी करने। हम इनहे देंगे क्या और बचाएंगे क्या?

अर्जुन- यह लोग हैं कौन और आप लोगों से पैसे क्यों मांग रहे हैं?

चाय वाला- यह लोग उग्र ठाकुर के लोग हैं रोज हमसे वसूली करते हैं।

अर्जुन- आप लोगों ने यह बात मुखिया जी से नहीं बताई?

चाय वाला- हमने बताया लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई और जब इन लोगों को पता चला कि हमने इनकी शिकायत की है तो इन लोगों ने एक दुकानदार को जिंदा जला दिया।

अर्जुन- जिंदा जला दिया?

चाय वाला- हाँ, वो भी सबके सामने इसी चौराहे पर।

अर्जुन- (दांत पीसते हुए) आपको पता है मुखिया जी इस ताले की पहली चाभी थे और मैं दुसरी चाभी। पहले से कुछ नहीं हो पाया तो क्या हुआ दुसरा चाभी तो अभी बाकी है। अब यह बात न मुखिया जी के पास जाएगा और ना कोई कार्रवाई होगा अब जो भी होगा यहीं होगा।

चाय वाला अर्जुन की बातों को समझ नहीं पाया।

चाय को वैसी ही मेज पर रखकर अर्जुन उनके तरफ बढ़ने लगा।

चाय वाला- अरे भाई पागल हो गये हो क्या? कहाँ जा रहे हो? मरना है क्या? अरे कोई रोको इसे।

अर्जुन नहीं रूका। जाकर उनके जिप पर पैर पसार कर बैठ गया।

अर्जुन- (चुटकी बजाते हुए) भाइयों जरा यहां ध्यान दो। मेरे पास तुम्हे देने के लिए सिर्फ एक ही विकल्प है। चुप-चाप सबके पैसे वापस देकर वापस लौट जाओ और फिर यहां कभी मत आना। मैं ऐसा इस लिए बता रहा हूं क्योंकि अभी मैं गुस्से में नहीं हूँ। अगर गुस्से में आ गया तो सबको दौड़ा-दौड़ा कर मारूंगा। एक बार मैंने मारना शुरू किया तो तब तक नहीं रूकंगा जब तक मेरा गुस्सा ठंडा नहीं हो जाएगा और मेरा गुससा जल्दी ठंडा नहीं होता।

चाय वाला- अब तो ये पक्का मरेगा।

उनमें से एक- कौन है भाइ तु? हमारे ही गाडी पर बैठकर ऊंचा-ऊंचा डायलॉग मारकर हमे यहाँ से चले जाने के लिए बोल रहा है? गांव में नया आया है क्या?

अर्जुन- नहीं यार आया तो मैं चौबीस साल पहले ही था पर सॉरी तुम लोगों से पहले नहीं मिला। अगर मिला होता तो तुम कब के सुधर गए होते।

दुसरा- तो अब तु हमें सुधारेगा?

अर्जुन- मुझे जितना समझाना था मैंने समझा दिया अब आगे तुम्हारी मर्जी।

पहला- (अपने आदमी से) जाओ जरा इसकी गलत फहमी दूर कर दो।

उसके दो आदमी अर्जुन के तरफ बढ़े। जैसे उन्होंने उसका हाथ पकड़ने का कोशिश किया अर्जुन का दायाँ हाथ बाएं तरफ के आदमी के पेट में और बायाँ हाथ दायें वाले के पेट में जा लगा और दोनों वहीं बैठ गये।

अर्जुन- हम क्षत्रिय अपने लोगों का हिफाजत करने के अलावा दुश्मन को अपने पैरो में गिराने भी जानते हैं।

इतना कहने के बाद अर्जुन ने अपना नकाब हटा लिया।

चाय वाला फौरन समझ गया कि दुसरे चाभी का मतलब क्या है?

चाय वाला- (चिल्लाकर) ये तो सिंह साहब के बेटे हैं अर्जुन!

अर्जुन का नाम सुनकर दुश्मन के आंख बाहर निकल आए। यह तो बलवंत सिंह का बेटा अर्जुन है। सब के सब एक साथ दौड़े अर्जुन को मारने के लिए लेकिन किसी का हाथ अर्जुन तक पहुंच नहीं पाया जितना ज्यादा अर्जुन मे ताकत था उतना ही ज्यादा फुर्ती भी। एक झटके में उसने सबको रौंद दिया। उसको इस तरह से लडता देख सभी समझ गए कि यही वो शख्स है जिसका शायद इन लोगों को इंतजार था।

अर्जुन ने उन लोगों के साथ यह पैगाम भी भेज दिया कि, “यह हमारा गांव है यहाँ पर लोगों की तकलीफ हमारी तकलीफ है क्योंकि हम रखवाले हैं। इसलिये आइंदा कभी यहाँ गुंडा

गर्दी मत करना नहीं तो सर धड़ से अलग करने में थोड़ा भी देर नहीं लगाऊंगा”।

वो लोग उग्र ठाकुर के सामने सिर झुकाकर खड़े थे। इनके गंदे कपड़े और उनपर लगा खून को देखकर उग्र ठाकुर समझ गया कि ये लोग कहीं से मार खा कर आ रहे हैं पर इस इलाके में इसका इतना दबदबा होते हुए भी इसके आदमियों को मारने का दुस्साहस कौन कर सकता है ये सोचकर उग्र ठाकुर परेशान था।

उग्र ठाकुर- कौन था?

उसके आदमी- बलवंत सिंह का बेटा अर्जुन।

उग्र ठाकुर- अर्जुन? पहले तो कभी नाम नहीं सुना?

उसके आदमी- वो शहर से अभी-अभी आया है।

उग्र ठाकुर- आते ही हीरो बनने लगा? तुमसे झगडा कैसे हुआ?

उसके आदमी- हम तो वसूली कर रहे थे। तभी वो आया और धमकी देने लगा कि अगर हम लोग यहाँ से नहीं गये तो वो हमें दौड़ा-दौड़ा कर मारेगा और कहा कि मैं यहाँ पहले से होता तो तुम कब के सुधर गए होते।

उग्र ठाकुर- तो तुमने क्या कहा?

उसके आदमी- तो हमने कहा अब सुधार दे और हम उसे मारने के लिए गए लेकिन सब उल्टा पड़ गया उसने मारा भी और पैगाम भी भेजा।

उग्र ठाकुर- अरे गदहे कभी दिमाग भी चला लिया कर। एक आदमी सामने से आकर अकेले इतने लोगों को धमका रहा है। उसमें कुछ बात होगी तभी तो? अच्छा पैगाम क्या भेजा वो बता।

उसके आदमी- उसने कहा “यह हमारा गांव है यहाँ पर लोगों की तकलीफ हमारी तकलीफ है क्योंकि हम रखवाले हैं। इसलिये आइंदा कभी यहाँ गुंडा गर्दी मत करना नहीं तो सर धड़ से अलग करने में थोड़ा भी देर नहीं लगाऊंगा”।

उग्र ठाकुर- हमम ये भी अपने बाप का ही जबान बोल रहा है। नया खून है ना इसलिए इतना फड़फड़ा रहा है। समय आने पर इसके पंख हम काटेंगे। फिलहाल तो आज मेरी बेटी रिया आ रही है शहर से। उसे लेने स्टेशन जाना है।

उस दिन कुछ और लड़कियां जो कि स्टूडेंट्स थीं शहर से गांव आइ थीं। उसमें से भी एक का नाम था रिया। रिया एक एग्रीकल्चर इंजीनियर थी। इस गांव में अपने एक रिसर्च के लिए आइ थी। वो इस गांव में इसलिए आइ थी क्योंकि उसी गांव की उसकी एक दोस्त है प्राची। उसी ने गुंजा को यहां आने के लिए सुझाव दिया था।

अगले दिन सभी स्टूडेंट्स अपने रिसर्च के लिए गांव को निकल गयीं। रास्ते में बहोत से खेत-खलीहानों में किसान काम कर रहे थे। इन्होंने हर एक खेतों में से थोड़ा-थोड़ा मिट्टी लेकर खेतों के हिसाब से नंबर डाल दिया और किसानों से इसमें डाले गये खादों के बारे में जानकारी लेने लगीं। बात-बात में ही उनकी नज़र अर्जुन पर पड़ी। वो लोगों के खेतों में पानी चला रहा था।

रिया- यकीन नहीं हो रहा है कि इतना स्मार्ट लड़का खेती का काम रहा है?

प्राची- तुम भी तो इतनी स्मार्ट हो तुम भी तो एग्रीकल्चर कर रही हो?

रिया- ये तो मेरा सपना है एग्रीकल्चर कर के लोगों को खेती में बेहतर फसल उगाने में

मदद करना।

प्राची- उनका भी।

रिया- तुम उनका...क्यों कह रही हो? उसका... कहो ना!

प्राची- तुम एक आम इंसान होकर भी इन लोगों की मदद करना चाहती हो तो ये यहाँ के कुमार हैं ये पीछे कैसे रह सकते हैं?

रिया- कुमार?

प्राची- हाँ इसलिए तो उसका...उसका...नहीं उनका... उनका... कर रही हूँ।

रिया- लेकिन कुमार का मतलब मैं समझी नहीं?

प्राची- धीरे-धीरे सब समझ जाओगी। अभी चलो हमें और भी काम हैं।

सभी स्टूडेंट्स आगे की खेतों के तरफ चले गए। अर्जुन उनकी ओर बड़े ध्यान से देख रहा था पर उसके जहन में ऐसा कोई सवाल नहीं आया, जैसे ये लड़कियां कौन हैं? कहाँ से आई हैं? क्यों आई हैं? उसके चेहरे के भाव पूर्णतः सकारात्मक थे।

अगले दिन रिया और प्राची दोनों बाजार घुमने निकले। इससे पहले कि ये और किसी चीज की खरीदारी करतीं इन्हें पानी पूड़ी का दुकान दिख गया। अब लड़कियों को पानी पूड़ी दिखे और मुंह में पानी ना आए ऐसा हो ही नहीं सकता। वे पानी पूड़ी खाने लगीं। तभी प्राची का ध्यान अर्जुन पर गया जो चाय के दुकान पर बैठे चाय पी रहा था।

प्राची- ऐ उधर देख!

रिया- क्या देख?

प्राची- अरे वो चाय के दुकान पर।

रिया- ओह तो ये बाजार में है, मुझे तो लगा कि खेतों में पानी-वानी चला रहा होगा!

प्राची- अब बस भी कर कितना मजाक उड़ाएगी?

रिया- तो क्या करूँ? तु तो ऐसे दिखा रही है जैसे लाड साहब है कहीं का?

प्राची- वो तो हैं ही।

रिया- हैं? तु फिर से शुरू हो गयी? है बोल ना हैं क्यों बोल रही है?

प्राची- तु जानती नहीं वो कौन हैं? वो यहाँ के मुखिया बलवंत सिंह के बेटे हैं।

रिया- इसमें बड़ी बात क्या है?

प्राची- वो यहाँ के राजा जैसे हैं। कभी किसी पर कोई मुसीबत नहीं आने देते चाहे वो मुसीबत कुछ भी हो?

रिया- अच्छा। इसलिए ये भी उन्हीं के नक्शे कदम पर चल रहा है?

प्राची- हाँ।

दोनों की बातें यहाँ तक आकर रुक गयीं। वजह यह था कि अब रिया सवाल करने के मुड में नहीं थी। उसकी नजर तो अब भी अर्जुन पर टिकी थी।

प्राची- उनके तरफ ना देखो तो ही अच्छा है।

रिया- क्यों? क्यों नहीं देख सकती मैं उसके तरफ?

प्राची- क्योंकि तेरा कुछ होने वाला नहीं है।

रिया- क्यों?

प्राची- क्योंकि वो अमीर हैं।

रिया- किसी की पहचान अमीरी या गरीबी से नहीं उसके दिल से होती है और मेरा दिल कहता है कि इसका दिल बिल्कुल साफ है। अगर इसे अपनी अमीरी पर घमंड होता तो यह लोगों का काम आसान नहीं कराता बल्कि उन्हीं से काम करवाता।

प्राची- अब चलो यहां से नहीं तो उन्हें देखती रह जाओगी और प्यार हो जाएगा।

रिया- (मन ही मन) प्यार तो हो ही गया है।

अगले दिन से रिया अर्जुन के ही पिछे लगी रहती थी। ख्यालों में भी अर्जुन, ख्वाबों में भी अर्जुन, जागने के बाद मिठी मुस्कुराहट में भी अर्जुन हर जगह अर्जुन ही अर्जुन। मानो जैसे ये यहाँ रिसर्च के लिए नहीं बल्कि अर्जुन के लिए ही आइ हो। अर्जुन ने उसे अपने आसपास कई बार देखा पर उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। कुछ दिनों तक यह सिलसिला ऐसे ही जारी रहा। रिया अर्जुन के चक्कर में थी और अर्जुन अपने पिताजी का इज्जत फिर से लोगों में बनाने के चक्कर में। अर्जुन लगभग कामयाब भी हो चुका था। लोगों के दिल में अब डर के लिए कोई जगह नहीं था बल्कि सिंह साहब के लिए हमदर्दी फिर से बढ़ चुका था। ये अब सिंह साहब के सामने पहले जैसी हरकतें करने लगे हैं। सिंह साहब यह सब देखकर बहोत ही खुश हैं और आश्चर्यचकित भी कि लोगों में ये बदलाव कैसे आया?

रिया का सब्र का बांध टूट चूका था। अब वो ठान चुकी थी कि अर्जुन के आमने-सामने होना ही पड़ेगा। अगले दिन रिया बाजार गयी। उससे मिलने के लिए आज वो इतनी बेताब थी कि कभी अपने ही अंगुठे को अपने पैर से दबाए जा रही थी। कुछ देर बाद अर्जुन आया और चाय वाले के दुकान के सामने अपनी बाइक लगाकर खड़ा हो गया।

अर्जुन- अरे भईया थोड़ा चाय पिला दो तो।

चाय वाले ने अर्जुन को चाय दे दिया। अर्जुन खड़े खड़े चाय पीने लगा। रिया उसे देखते ही अपने आप को बहोत हिम्मत देने लगी कि डर मत सिर्फ वहां जाना है और... और चाय पिकर चले आना है! रिया कैसे भी दबे-दबे पाँव अर्जुन के पिछे जा खड़ी हुई। उसे कुछ और बहाना नहीं सुझा बस उसका बाइक खाली दिखा उसी पर बैठ गयी।

रिया- अरे ओ भईया थोड़ा चाय पीला दो तो।

चाय के दुकान पर कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया था। जब लोग रिया को देखे तो देखते ही रह गये। सबके मन में एक ही बात चल रहा था कि यह कौन है जो अर्जुन बाबू के बाइक पर बैठने की जुर्रत कर रही है और वट से चाय भी मांग रही है। लेकिन अर्जुन के मन में यह बात नहीं आयी उसके मन में तो सिर्फ यही चल रहा था कि हो सकता है बाय चांस आकर बैठ गयी होगी वैसे भी आजकल की लड़कियां थोड़ा फ्री माइंड की हैं, वो क्या करती हैं उन्हीं को पता नहीं होता। उसने उसे फिर से नजर अंदाज कर दिया। लेकिन रिया भी इस बार बिना बात छेड़े जा नहीं सकती थी। चाय वाले ने उसे चाय लाकर दिया। चाय पिते ही हममम यह कैसा चाय है ऐसा चाय होता है क्या कहीं? ऐसे रिया ने नौटंकी करना शुरू कर दिया। अर्जुन ने सोचा हम भी तो वही चाय पी रहे हैं लेकिन हमें तो खराब नहीं लग रहा है इसे क्यों खराब लग रह है? अर्जुन को यह बात खली नहीं और अर्जुन बोल पड़ा।

अर्जुन- क्या हुआ मैडम क्या हुआ? हम लोग भी तो वही चाय पी रहे हैं लेकिन हमें तो खराब नहीं लगी, आपको खराब क्यों लग रही है?

वहां पर बैठे सभी लोग खुश हो गये कि हां यह हुई ना बात तबसे बड़ा अकड़ रही थी। अभी

तो रिया की तरफ से जवाब आना बाकी था और यह बेचारे खुश हुए जा रहे थे।

रिया- चाय को मारो गोली! मैं तो यहाँ तुमसे बात करने आइ हूँ।

अर्जुन- मुझे?

रिया- हाँ। मैं बहोत दिनो से तुम्हारे आगे पीछे घुम रही हूँ तुम्हारा पिछा कर रही रहीं हूँ क्योंकि तुम मुझे बहोत पसंद हो। आइ लव यू मैं तुमसे प्यार करती हूँ।

झटके पर झटका झटके पर झटका देकर रिया ने वहाँ पर बैठे बड़े-बुजुर्गों का दिमाग गरम कर दिया। एक का कुछ ज्यादा ही गरम हो गया। वो उठ खड़ा हुआ और बोला, “अर्जुन बाबू! यह लडकी हद से आगे बोल रही है, इसे चुप रहने के लिए बोलिये नहीं तो हम...

अर्जुन- अरे नहीं-नहीं काका जाने दीजिए यह शहर की लडकियां ऐसी ही होती हैं थोडा ओपन टाइप।

बुजुर्ग- ओपन हैं तो क्या सब ओपन करके बोलेंगी? आस-पास बैठे बड़े बुजुर्गों का लिहाज है कि नहीं? इतना ओपन हमारे गाँव में नहीं चलेगा इससे हमारे गाँव की लडकियों पर क्या असर पड़ेगा?

अभी एक सनकी यह सब बात कर ही रहा था तब तक एक और उठा जो तबसे बैठकर दिमाग चला रहा था और बोला, “अर्जुन बाबू! आपको कैसे पता कि यह लडकी शहर की रहने वाली है?

अभी अर्जुन इस बात का जवाब देने ही जा रहा था कि अरे यह लडकी हमारे गाँव की नहीं है इसका मतलब यही हुआ ना कि यह शहर की रहने वाली है? लेकिन अर्जुन के जवाब देने से पहले उसने एक और सवाल कर दिया कि, “क्या आप इसे जानते हैं?”

रिया को बोलने एक मौका मिला गया और उसने इस मौके का एकदम सही फायदा उठाया। वो तुरंत बोल पड़ी हाँ हाँ ये मुझे जानते हैं हमने एक साथ ही तो पढाई की है।

अर्जुन- नहीं नहीं नहीं।

रिया- क्या नहीं नहीं झुठ क्यों बोल रहे हो?

अर्जुन- नहीं नहीं काका ऐसी कोइ बात नहीं। लगता है इसे... इसे कोई गलत फहमी हुआ है। मैं इसकी गलत फहमी दूर करके आता हूँ।

अर्जुन अब इन लोगों को क्या समझाए?

अर्जुन- मैडम! तो क्यों नहीं हम यहां से कहीं और चलें ताकि थोडा सही से बात कर सकें?

रिया- हाँ हाँ क्यों नहीं?

रिया अर्जुन के साथ बाइक पर बैठ गयी। अर्जुन ने बाइक स्टार्ट किया वहाँ से निकल गया। गाँव से थोडा बाहर जाकर दोनो रुक गये।

अर्जुन- उतरो।

रिया के उतरने के बाद उसने अपना बाइक एक साइड में खडा किया।

अर्जुन- अब बोलो कौन हो तुम और ये सब क्या था?

रिया- देखो मुझे पता है मेरे इस तरह से वहाँ बात करने से तुम मुझे गलत लडकी समझ रहे होगे लेकिन मैं एक शरीफ लडकी हूँ। वो तो मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि तुमसे कैसे बताऊँ कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ इसलिए जैसा भी मन में आया कर दिया। क्या करूँ प्यार है जितना छुपाती उतना दर्द होता।

अर्जुन- प्यार है? ऐसा प्यार? किसी के भी सामने कुछ भी कह दो?

रिया- हाँ प्यार ऐसा ही होता है। थोड़ा पागलपन थोड़ा एंटीक टाइप!

अर्जुन- देखो! ना तो मैं तुम्हें जानता हूँ और ना ही तुम मुझे जानती हो तो प्यार करने का सवाल ही नहीं उठता।

रिया- तो ठीक है ये शुभ काम अभी शुरू कर देते हैं। अभी एक दुसरे को जान लेते हैं। हाय मैं हूँ रिया और तुम?

अर्जुन कुछ देर तक उसे देखता रहा और फिर कहा, “ये तो पागल है” फिर बाइक चालू किया और उसे वहीं छोड़कर निकल गया। रिया खड़ी होकर उसे देख रही थी और मना रही थी कि काश एक बार पलट कर देख लेता तो उसके दिल में क्या है पता चल जाता! वो उसे एक टक देखी जा रही थी। अर्जुन ने न जाने उसके बारे में क्या सोचा कि वो रिया की तरफ पलट कर देखा और फिर आगे मुड़कर चला गया। उसके सिर्फ पलटने मात्र से रिया खुशी से उछलने लगी। उसके खुशी का तो ठिकाना नहीं था। उसे लगा कि अर्जुन के दिल में भी उसके लिए कहीं न कहीं थोड़ा सा प्यार तो जरूर है।

जिंदगी में जब कभी भी हमें किसी से प्यार होता है, तबसे न जाने क्यों मुसीबतें अपने आप बढ़ने लगती हैं। अनजान लोग मिलने लगते हैं, धमकियां मिलने लगती हैं, घर वालों का डर लगा रहता है और आखिर में जाती का। अगर इस प्यार को हम मुसीबत माने तो ये दोनो इस बात से बेखबर थे कि इनपर कोई मुसीबत आने वाली है और अगर इस्तेहान माने तो ये दोनो इसके लिए अभी तैयार नहीं थे।

जहाँ से अर्जुन रिया को छोड़ कर चला गया था वहाँ से रिया को पैदल ही घर जाना पड़ा। काफी रात हो चुकी थी। रिया को निंद नहीं आ रही थी। बिस्तर पर लेटकर लैंप को कभी चालू कर रही थी तो कभी बंद कर रही थी। इसके वजह से प्राची की भी निंद खराब हो चुकी थी।

प्राची- ये तु क्या तबसे लाइट बंद चालू बंद चालू किये जा रही है?”

रिया- क्या करूँ यार निंद नहीं आ रही है?

प्राची- तुझे निंद नहीं आ रही है तो मेरी निंद क्यों खराब कर रही है?

रिया- अच्छा तु सो मैं छत पर जाती हूँ।

इतना कहकर रिया छत पर चली गयी। रिया के चुपचाप चले जाने से प्राची को उस पर तरस आ गया। उसको अपनी गलती का एहसास हुआ कि उसे ऐसा कुछ ना कहकर उससे निंद ना आने का कारण पुछना चाहिए था। प्राची भी बिस्तर से उठी और छत पर चली गयी।

रिया छत पर खड़े आसमान में देख रही थी।

प्राची- क्या देख रही हो?

रिया- चांद को।

प्राची- और चांद मे? अर्जुन को? हा हा हा।

रिया- नहीं।

प्राची- फिर?

रिया- अपने आप को।

प्राची- अपने आप को?

रिया- हाँ।

प्राची- लेकिन मैं तो सुनी हूँ कि लोग चांद में अपने चाहने वाले को देखते हैं?

रिया- जैसे चांद है जिसकी कोई अपनी रौशनी नहीं है वैसे ही मैं भी हूँ जिसके ज़िंदगी में कोई खुशी नहीं इसलिए मैं खुद को चांद में देख रही थी। जैसे चांद पृथ्वी से रौशनी पाकर जगमगा उठता है वैसे मैं अर्जुन से प्यार पाकर जगमगा जाऊँगी। पता है जब तुने मुझे अर्जुन को खेत में पानी चलाते हुए दिखाया था उससे पहले ही मैंने अर्जुन को देख लिया था। वो बहोत पहले से ही मेरी तरफ देख रहा था। वो मुझे ऐसे देख रहा था कि मेरा मन किया कि मैं उसे हमेशा के लिए अपना बना लूँ। उससे मिलने का बहोत मन करता है, सोचती हूँ कि उसके साथ बहोत सारी बातें करूँ पर वो थोड़ा रूस्तम टाइप का है। उसकी आंखों से तो सब पता चलता है लेकिन जुबान से एक शब्द भी नहीं बोलता। मैंने उससे सारी बातें बता दी और उसने मुझे क्या कहा पता है? “पागल”।

प्राची- क्या सच में? हा हा हा।

रिया- मैं भी देखती हूँ कितना बड़ा रूस्तम है? जवाब तो लेके ही रहूँगी। मैं जा रही उसके घर।

प्राची- क्या उसके घर? इस वक्त इतनी रात गये?

रिया- हाँ।

प्राची- लेकिन ये काम कल भी तो कर सकती हो?

रिया- इतना सब किसको है?

प्राची- अरे लेकिन कुछ हो गया तो?

रिया- उसकी मुझे परवाह नहीं मैं तो अभी मिलने जा रही हूँ तुझे चलना है तो चल।

प्राची- नहीं! मैं तो नहीं जाऊँगी और तु भी कहीं नहीं जा रही है।

रिया- नहीं मैं तो जा रही हूँ। चिंता मत करना अर्जुन मुझे छोड़ने आ जाएगा।

प्राची- हाँ हाँ जो तुझे गांव के बाहर छोड़कर चला गया वो तुझे घर छोड़ने के लिए जरूर आएगा।

रिया- जब बोलती है अशुभ ही बोलती है।

प्राची- पता नहीं यह कैसा प्यार है जो एक रात भी सब नहीं कर सकता?

रिया अर्जुन से मिलने चली गयी। अर्जुन अपने कमरे में सोया हुआ था। अचानक किसी की आहट से इसकी आंखें खुल गयीं, उसे ऐसा लगा कि कोई उसके करीब सोया है इतना करीब कि उसकी सांसे भी इसे महसूस हो रही थीं। वो डरते-डरते पीछे घुमा। जैसे सामने उसने रिया को देखा वो डर कर बैठ गया और चिल्ला दिया। रिया ने तुरंत अपना हाथ उसके मुंह पर रख दिया और बोली अरे ये मैं हूँ रिया।

अर्जुन- तुम यहाँ मेरे कमरे में क्या कर रही हो?

रिया- मैं यहाँ तुमसे मिलने आई हूँ।

अर्जुन- लेकिन इतनी रात गये?

रिया- क्या करूँ तुमने जवाब नहीं दिया इसलिए निंद नहीं आ रही थी। तो सोची कि क्यों ना तुमसे आकर मिल लूँ?

अर्जुन आश्चर्य में पड़ गया। पल भर के लिए वो सोचता रहा कि यह कैसा पागलपन है? लेकिन वो ये जानता था कि प्यार में ऐसा करना जायज़ है। अगर रिया के जगह पर खुद अर्जुन होता तो वो भी यही करता।

अर्जुन को उसपर तरस आ गया। वो उसे समझाने की कोशिश करने लगा।

अर्जुन- देखो मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे बहोत प्यार करती हो लेकिन सोचो इतनी रात गये तुम मुझसे मिलने आइ। अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो? तो मैं तुम्हारे सवाल का जवाब किसको देता? तुम मुझसे सुबह में भी तो मिल सकती थी?

रिया- क्या करूँ कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था इसलिए... ।

अर्जुन-(मुस्कुराते हुए) तुम सचमुच पागल हो।

रिया- सिर्फ तुम्हारे लिए पागल हूँ। अगर तुम मिल जाओ तो ये पागलपन छोड़ दूंगी।

अर्जुन- तुम्हारा ये पागलपन ही तो मुझे पसंद है, अगर ये छोड़ दोगी तो मजा नहीं आएगा। ये बात सुनकर रिया के होठों पर मुस्कान आ गया।

अर्जुन- तो चलो तुम्हें सही-सलामत तुम्हारे घर छोड़ आता हूँ।

रिया-(खुश होकर) क्या सच में?

अर्जुन- हाँ फिर क्या तुम्हें अकेले तो नहीं जाने दे सकता ना?

रिया- हाँ मुझे पता है क्यों?

अर्जुन- अच्छा? क्यों?

रिया- क्योंकि तुम मुझसे प्यार करते हो और तुम्हें मेरी चिंता है।

अर्जुन- नहीं। क्योंकि तुम्हें कुछ हुआ तो मेरा नाम आएगा। अगर तुमने वो बाजार में नौटंकी ना की होती तो मैं जरूर बच सकता था।

रिया- कब तक छुपाओगे? अब बता भी दो!

अर्जुन-(थोड़े करीब आकर) थोड़ा इंतजार करो। इतनी आसानी से बता दिया तो प्यार बुरा मान जाएगा।

रिया का चेहरा तो देखने लायक था। अर्जुन जब उसके करीब गया तभी रिया ने अपनी आंखें बंद कर ली थी। उसे लगा कि अर्जुन कुछ ऐसा कहेगा जैसा वो सुनना चाहती है लेकिन बात नहीं बनी। दोनों सबके नजरों से बचकर वहां से बाहर निकल आए। रास्ते में साथ तो चल रहे थे लेकिन आपस में कोई बात नहीं हो रही थी। ठंड के वजह से गुंजा अपने दोनों कंधों पर हाथ रखकर कांपते हुए चल रही थी।

उसे कांपता हुआ देखकर अर्जुन ने अपना कोट निकाला और उसे पहना दिया। खुद अपने दोनों हाथ जेब में डाल लिए। उसका यह बर्ताव उसकी यह फिक्र देख रिया तो समझ चुकी थी कि अर्जुन भी इससे प्यार करने लगा है लेकिन अगर...अगर ये कुछ कहती तो अर्जुन फिर कोई बहाने बना देता। रास्ते खत्म हुए मंजिल भी आ गयी लेकिन अब तक दोनों के बीच कोई बात नहीं हुई। अब जाने की बारी आइ तो रिया ने हिचकते हुए उससे कहा, “तो फिर कल मिलते हैं।”

अर्जुन ने जवाब दिया, “हाँ बिल्कुल।”

बात खत्म हुई लेकिन कोई अपने जगह से हीला भी नहीं। बस दोनों एक दुसरे के जाने का इंतजार कर रहे थे। आखिर में अर्जुन ने कह दिया कि तो चलो मैं कल मिलता हूँ। इतना

कहकर वो चला गया। रिया जब अपने पिछे पलटी तो देखी कि प्राची छत पर से ही देख रही थी। रिया ने इशारा किया कि मैंने क्या कहा था कि अर्जुन मुझे घर छोड़ने जरूर आएगा? उस तरफ से प्राची ने इशारा किया हां यार मान गयी तुझे। उसके बाद रिया जाकर अपने बिस्तर पर लेट गयी और लेटते ही कब सो गयी पता ही नहीं चला। सोती भी कैसे नहीं अर्जुन से मिलकर इसकी बेचैनी जो खत्म हो गई।

अर्जुन घर पहुंचा। पहली बार अर्जुन अकेले में मुस्करा रहा था। ऐसे तो उसे कभी बेवजह हंसने की कोई वजह ही नहीं मिली लेकिन अब मिल गयी है। वो घर में जाने ही वाला था तब तक उसे वहां पिछे किसी के होने की आवाज़ सुनाई दी। जब वो पीछे मुड़कर देखा तो वहां कोई नहीं था। सिर्फ झाड़ियां हील रही थीं। उसे शक हुआ कि कोई इसका पिछा कर रहा है। उसने इसे नजर अंदाज कर दिया और जाकर सो गया।

आज दिन दोनों के लिए रोज से थोड़ा अलग है। रिया को अर्जुन से मिलने की उत्सुकता थी और अर्जुन को भी। अर्जुन की प्यार की तो बस अभी शुरूआत हुई थी इसलिए उसे कुछ पता नहीं था क्या करना है और क्या नहीं। बस रोज की तरह नहा धोकर बाजार चला गया ये सोच कर कि रोज की तरह रिया आज भी आएगी ही।

उस तरफ उग्र ठाकुर अपने आदमियों से हिसाब ले रहा था। कइ दिनों से उसका धंधा कम चल रहा था। कहीं से भी पैसे नहीं आ रहे थे।

उग्र ठाकुर- न बाजार से हफ्ता आ रहा है, ना तोल नाके का यहां तक की उगाइ का भी कोई हिसाब नहीं आ रहा है क्यों?

इन हर सवालों के पिछे उग्र ठाकुर को सिर्फ एक ही जवाब मिला “अर्जुन”। इनका सब का कारण अर्जुन ही था।

उग्र ठाकुर- वही अर्जुन ना जिसका तुमलोगों से हाथापाई हुई था? अब तक तुमलोगों ने उसे रास्ते से नहीं हटाया?

एक आदमी- उसे हटाना इतना आसान नहीं है। वो अकेला बीसों पर भारी पड़ता है और उस दिन उसकी लड़ाई देखकर हमारे सभी लोग डर गये हैं।

उग्र ठाकुर- डर गये हैं? क्या इसीलिए तुम लोगों को मैंने यहां रखा है? यही सुनने के लिए? तब तक उग्र ठाकुर का एक आदमी आया जो खबरी का काम करता था। आते ही उग्र ठाकुर को वो अपनी राय देने लगा।

खबरी- इन लोगों पर ऐसे चिल्लाने से सिर्फ आपकी बुद्धि भ्रष्ट होगी और कुछ नहीं होगा।

उग्र ठाकुर- चिल्लाउं नहीं तो क्या करूँ? एक लड़के के वजह से मेरा पूरा धंधा बंद होने पर आ गया है।

खबरी- कभी-कभी ताकत की नहीं दिमाग की भी जरूरत होती है। अगर उसे रास्ते से हटाना है तो रणनीति बनाओ।

उग्र ठाकुर- रणनीति? कैसी रणनीति?

खबरी- ऐसी रणनीति जो अचूक हो।

उग्र ठाकुर- क्या तुम्हारे पास है ऐसी कोई रणनीति? लेकिन उसे जान से मारने के लिए नहीं उसे बस इस बात का एहसास दिलाना है कि वो एक गलत इंसान से दुश्मनी निभा रहा है।

खबरी- जी बिल्कुल इसलिए तो मैं आया हूँ यहाँ।

उग्र ठाकुर- तो फिर बताओ।

खबरी ने शातिर नजरिए से मुस्कुरा दिया। इन लोगों में रणनीति रची जाने लगी क्योंकि आमने-सामने वे लोग अर्जुन से टकरा नहीं सकते थे।

यहाँ अर्जुन को बैठे-बैठे दोपहर हो गया। उसे कुछ ठीक नहीं लग रहा था। सोच रहा था कि रिया अब तक आइ क्यों नहीं?

चाय वाला- क्या हुआ अर्जुन भईया कोई परेशानी है क्या?

अर्जुन- हाँ? नहीं कोई परेशानी नहीं है। बस मैं ये सोच रहा था कि रिया अब तक कहीं दिखाइ क्यों नहीं दी? रोज तो यहीं अतृप्त आत्मा की तरह भटकते रहती थी आज क्या हुआ?

चाय वाला- कुछ तो बात है भईया उस लड़की में, कल तक वो आपको धुँढते रहती थी और आज आप उसे धुँध रहे हो।

अर्जुन का टेंशन बढ़ रहा था। अभी वो उसके घर जाने की सोच ही रहा था तभी उसे एक फोन आया।

अर्जुन- हैलो!

रिया- अ अर्जुन! मुझे यहां से ले चलो नहीं तो ये लोग...

अर्जुन- हैलो रिया? कौन लोग? कहां हो तुम?

तब तक कोई और बोलने लगा, “सुना हूँ कि तेरी रफ्तार बहोत तेज है? वो भी खुद मेरे लोगों ने मुझे बताया। बहोत तारिफ कर रहे थे तेरी। इतनी कि तेरी रफ्तार देखने का मन मुझे भी कर दिया। इसलिए सोचा कि क्यों न तेरा एक टेस्ट लूं? चल आज मुझे भी अपनी रफ्तार दिखा। तेरे पास सिर्फ पांच मिनट है। हम तुझसे सिर्फ तीन मिनट की दूरी पर हैं। तुझे दो मिनट एक्स्ट्रा इस लिए दे रहा हूँ क्योंकि तुझे पता नहीं है कि हम लोग कहाँ हैं? अगर तु पांच मिनट में हमारे पास पहुंच जाता है तब तु शायद इसे बचा लेगा? अगर नहीं पहुंच पाया तो इसके साथ वो होगा जो तुने कभी सोचा नहीं होगा?”

अर्जुन ने तो जब रिया का आवाज सुना था तभी वो उठ कर भागने लगा था।

अर्जुन- तु कौन है यह मैं नहीं जानता लेकिन आज तुझे मैं इस बात का एहसास जरूर दीलाउंगा कि तुने उस लड़की को छुकर अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी भुल कर दी है। उस तरफ से- जान गर्दन में आकर फंस गया लेकिन आवाज थोड़ा भी दबा नहीं। जैसा तेरे बारे में सुना था तु बिल्कुल वैसा ही निकला लेकिन आज तेरा यह गुस्सा किसी काम का नहीं बस तु हमें ढुंढने पर ध्यान दे।

अर्जुन- शिकारी को अपना शिकार कहां मिलेगा यह शिकारी को अच्छे तरीके से पता होता है।

तभी तक उसका एक आदमी किनारे से बोला, “ भुवन भईया अर्जुन आ रहा है”।

सब हक्के-बक्के हो गये। ऐसे कैसे हो गया? अर्जुन को कैसे पता चला कि हम यहाँ हैं? जब भुवन ने बाहर आकर देखा तो अर्जुन उस तरफ से दौड़ते हुए आ रहा था।

भुवन- तुझे कैसे पता चला कि हम यहां कारखाने में हैं?

अर्जुन- एक यही तो ऐसी जगह है जहाँ तुमलोग अपने आप को शेर समझते हो। और यही

ऐसी जगह है जहाँ पर पहुंचने में मात्र तीन मिनट लगते हैं। तुझे मेरी रफ्तार देखनी थी ना अब देख तु मेरी रफ्तार अभी सिर्फ दो मिनट हुए हैं एक मिनट और रुक जा तेरा साम्राज्य खत्म करने आ रहा हूँ।

भुवन के कुछ लोग डर के मारे कारखाने के पिछले दरवाजे से भागने लगे।

भुवन- कहां जा रहे हो तुम लोग? कोई कहीं नहीं जाएगा।

कोई भी भुवन का एक नहीं सुन रहा था।

उसमें से एक- निकलो यहां से जल्दी नहीं तो तुम भी पछताओगे।

अपने लोगों में डर देखकर और उनके उकसाने पर भुवन को भी मजबूरन वहाँ से निकलना पड़ा। जब तक अर्जुन वहां पहुंचा वो लोग निकल गए।

रिया होश में नहीं थी। उसके सर पर चोट लगा हुआ था जहाँ से काफी खून बह चुका था। अर्जुन उसका खून देखकर घबड़ा गया। वो रिया को जगाने लगा, “हे रिया! उठो ना देखो मैं हूँ मैं अर्जुन, तुम्हीं ने तो मुझे बुलाया ना? अब तुम कुछ बोल भी नहीं रही हो? कुछ तो बोलो ना यार? मैं तुम्हें पसंद नहीं हूँ तो ठीक है मैं जा रहा हूँ।

इतना कहते ही रिया ने तुरंत उसका हाथ पकड़ लिया लेकिन अभी भी वो पूरी तरह से होश में नहीं थी। रिया के हाथ पकड़ते ही अर्जुन ने उसे गले लगा लिया। उसके बाद उसने बिना वक्त गवाए मुंशी जी को फोन किया।

अर्जुन- हैलो अ अ अंकल जल्दी से गाड़ी लेकर पास के कारखाने आ जाइए।

मुंशी जी- क्या हुआ अर्जुन?

अर्जुन- बाद में बताऊंगा अंकल अभी बस आप गाड़ी लेकर आ जाइए।

मुंशी जी- हाँ हाँ ठीक है मैं आता हूँ।

अर्जुन ने रिया को अपने गोद में उठाकर बाहर लाया। कुछ देर बाद मुंशी जी गाड़ी लेकर वहाँ पहुँचे। उन्होंने देखा कि अर्जुन किसी लड़की को गोद में लिया हुआ है। वो वहाँ पहुंचकर गाड़ी से उतरे और अर्जुन से पुछने लगे कि क्या हुआ कौन है ये...? जब उनका ध्यान उस लड़की पर गया तो उनकी आवाज वहीं दब गयी। उन्होंने अर्जुन के तरफ देखा और कहा ये तो...

अर्जुन ने अपना सर हिलाया और कहा हाँ। मुंशी जी ने उन्हें गाड़ी में बिठाया और फौरन हास्पिटल के लिए निकल गये।

अर्जुन बाहर टेबल पर सर पकड़े बैठा था। मुंशी जी उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे सहानुभूति दे रहे थे। तभी नर्स आयी और कही कि आप में अर्जुन कौन है?

अर्जुन उठा और कहा कि मैं ही हूँ अर्जुन।

पेशेंट को होश आ गया है और वो आपको बुला रही है। आप जाकर मिल सकते हैं। नर्स ने जवाब दिया।

अर्जुन- थैंक्स।

अर्जुन अंदर गया। जाकर रिया के बेंड पर बैठा। रिया उसे देख कर मुस्कुरा रही थी। यह उसके घाव को देख रहा था और उस पर हाथ फेर रहा था। रिया ने जब उसकी कलाई पकड़ी तो तब जाकर उसका ध्यान उस चोट पर से हटा।

अर्जुन- काश की मैं तुमसे मिला ही नहीं होता, तो आज तुम्हारे साथ यह सब नहीं हुआ

होता।

रिया- तुम मुझसे मिले ही कहाँ? मिली तो मैं तुमसे हूँ और आज जो भी हुआ वो मेरी वजह से हुआ है तुम्हारे नहीं।

अर्जुन- देख लिया ना मुझसे प्यार करने का नतीजा?

रिया- नतीजा अगर यही है तो तुम्हारे प्यार में तो मैं इससे सौ मर्तबा गुजर सकती हूँ।

अर्जुन- सौ मर्तबा तो दूर की बात है अब तो तुम्हें दुसरी मर्तबा भी कोई भुल के भी नहीं छुएगा।

रिया- क्यों नहीं छुएगा?

अर्जुन- क्योंकि मैं उनका हाथ तोड़ दूंगा।

रिया-(मुस्कुराते हुए) इसका मतलब तुम मुझसे प्यार करते हो।

अर्जुन मुस्कुराया और जवाब दिया।

अर्जुन- हाँ बहोत ज्यादा। इतना ज्यादा कि मैं बता नहीं सकता। हर शब्द कम पड जाएंगे इतना प्यार करता हूँ मैं तुमसे।

रिया- फिर बता क्यों नहीं रहे थे?

अर्जुन- क्योंकि मैं तुम्हें और तडपाना चाहता था।

रिया- अच्छा? तो इतनी जल्दी क्यों बता दीए?

अर्जुन- ताकि तुम्हारी तकलीफ कम हो जाए।

रिया- बस तुम मेरे हो जाओ सारी तकलीफ खत्म हो जाएंगी।

अर्जुन- लो आज हो गया तुम्हारा। अऽ मैं डाक्टर से मिल कर आता हूँ तब तक अंकल यहीं हैं जो चाहिए होगा उनसे कह देना।

अर्जुन वहां से उठा और बिना डाक्टर से मिले उग्र ठाकुर के घर चला गया। उग्र ठाकुर के घर पर आज कोई ग्रहण लगा हुआ था। उसके लोग तो पहले से डरे हुए थे पर इस समय उग्र ठाकुर के भी गले का पानी निचे उतर रहा था क्योंकि प्लैन फेल हो गया था और अर्जुन को पता चल गया था कि यह सब किसने किया है? यहां पर सिर्फ एक भुवन ही गुस्से में था। वो अभी भी अर्जुन से रूबरू होकर उससे लडना चाहता था।

उग्र ठाकुर पुछ ही रहा था कि इतना नौटंकी करने की क्या जरूरत थी सीधा उसे मार देना चाहिए था ना?

इन लोगों की बातें हो ही रही थीं तब तक बाहर से चिखने-चिल्लाने की आवाजें आने लगीं। सब घबडा गए। खबरी तो कांपने लगा और कहने लगा कि अब क्या होगा?

उग्र ठाकुर- आ गया तो क्या लेकिन जाना नहीं चाहिए। भुवन, तु जा।

भुवन- इसी का तो मैं इंतजार कर रहा था पापा।

सभी आदमी अर्जुन को रोकने में लग गये लेकिन उसके हवे से भी तेज रफ्तार के सामने कोई टीक नही पा रहा था। भुवन सबको पिछे ढकेलते हुए आगे आया और अर्जुन को एक मुक्का मार दिया। अर्जुन और भुवन का पहली बार आमना सामना हुआ। अर्जुन अब तक बस लड रहा था पर अब वो कुछ अलग करने के मुड में आ गया। वो अब सबको पकड कर उसकी गर्दन ऐंठने लगा, उसका हाथ तोडने लगा सिवाय भुवन के। वो इस लिए क्योंकि उसने अर्जुन को मारा और अर्जुन उसे बिना मारे डर का एहसास दिलाना चाहता था।

भुवन को पहली बार अर्जुन का गुस्सा और बे दरियादिली का एहसास हुआ। उसके हर एक वार पर भुवन को झटका लगने लगा। अर्जुन जितनी की हड्डियां तोड़ता भुवन का उतना ही मनोबल टूटता। सबको मारते-मारते अर्जुन की आंखें लाल हो चुकी थीं। जब वो सबको मारकर भुवन के तरफ मुड़ा तो भुवन अचानक डर गया और गिर कर छटपटाने लगा। अर्जुन अंदर गया और उग्र ठाकुर को एक लात मारकर कुर्सी पर बैठा दिया। खुद भी सामने रखी कुर्सी पर बैठ गया।

अर्जुन- जिसकी औकात मेरा कॉलर पकड़ने की भी नहीं उसने मेरी जान को हाथ लगाया, कैसे? तु जो यह सब देख रहा है तुझे पता है यह सिर्फ मेरा प्यार है। इसलिए बहोत कम नुकसान करके जा रहा हूँ। जिस दिन मैं अपनी दुश्मनी निभाने लगूंगा उस दिन तुम्हें चैन से नहीं जीने दूंगा। मुझे बहोत कम बोलने की आदत है। फिलहाल के लिए इतना ही। आइंदा से उसे किसी ने भी तकलीफ दी तो मैं कोई बात नहीं करूंगा सिधा गला काट दूंगा। अर्जुन का इतना तांडव इन लोगों के लिए काफी था। वो वापस लौटने लगा। वह जैसे ही पीछे घुमा तो देखा एक लड़की सीढ़ी पर खड़ा होकर यह सब तमाशा देख रही थी। वह लड़की रिया थी उग्र ठाकुर की बेटी। उग्र ठाकुर इसके पिता हैं लेकिन फिर भी रिया ने उनके लिए बचाव की कोई अपेक्षा नहीं की। अर्जुन चला गया। उग्र ठाकुर शर्म के मारे रिया के तरफ भी नहीं देख रहा था। रिया चुपचाप अपने कमरे में लौट गई।

आज दुसरे दिन रिया हॉस्पिटल से डिस्चार्ज हो गई। अर्जुन उसे अपने साथ ले जाकर उसे उसके घर तक छोड़ा।

अर्जुन- ठीक है तो फिर मैं चलता हूँ।

रिया- तब? अब कब मिलेंगे?

अर्जुन- दिन में मिलते हैं ना!

रिया- ठीक है मैं इंतजार करूंगी।

उग्र ठाकुर का बेटा भुवन का घर पर ही इलाज चल रहा था। पहले से उसे थोड़ा आराम था। डाक्टर ने बताया है कि बहोत ज्यादा डरने के वजह से इन्हें ऐसा झटका आने लगा था। ऐसा अब फिर से हो सकता है। हो सके तो आप उस डर को इनसे दूर रखें या फिर इन्हें उस डर से। इस चक्कर में उग्र ठाकुर सर पकड़े पैर के बल झुक कर बैठा था। तभी वो खबरी दबे-दबे पाँव आया।

खबरी- क्या हुआ सरकार? आप ठीक तो हैं?

पहले तो उग्र ठाकुर ने उठ कर उसे एक जोरदार थप्पड़ लगाया फिर बात करना शुरू किया।

उग्र ठाकुर- क्या मैं तुझे ठीक लग रहा हूँ? सब तेरी वजह से हुआ। पता नहीं मैं कैसे तेरी बातों में आ गया? ना तेरे कहने पर मैं उस लड़की को उठवाता और ना ही आज ये सब होता। इतना कुछ होने के बाद भी तु मुझसे पुछ रहा है आप ठीक तो हैं?

खबरी- नहीं सरकार वो तो मैंने ऐसे ही पुछ लिया था।

उग्र ठाकुर- जिंदगी में पहली बार मेरे साथ ऐसा हुआ है। मेरे ही घर में घुसकर किसी ने मेरी ही बेटी के सामने मेरी सीने पर लात मारा। लोगों में से मेरे नाम का डर खत्म हो गया। मैं कहीं का नहीं रहा। कुछ देर तक के लिए खबरी शांत हो गया।

जब बात करते-करते कोई अपने आप शांत हो जाए तो समझ लो कि वो कुछ न कुछ सोच रहा है। कुछ देर बाद उसने फिर से अपनी जुबान खोली।

खबरी- सरकार मेरे पास एक तरकीब है।

उग्र ठाकुर-(गुस्से में) तु अपनी तरकीब अपने पास रख।

खबरी- अरे सरकार सुन तो लिजिए! यह कोई ऐसी-वैसी तरकीब नहीं रामबाण तरकीब है। सुन तो लिजिये सुनने में क्या जाता है?

उग्र ठाकुर- हमम।

खबरी- आपको अगर अपनी बेइज्जती का बदला लेना है और फिर से हर जगह अपना धाग जमाना है तो आपको सबसे पहले अर्जुन को अपने रास्ते से हटाना होगा और...

उग्र ठाकुर- वो तो मुझे भी पता है कि उसे रास्ते से हटाना है। लेकिन तु बोल तो ऐसे रहा है जैसे रास्ते से पत्थर को पैर मारना है? अरे इतना आसान नहीं है उसे हटाना वो कोई पत्थर नहीं एक भैंस है जिसके पीछे कितना भी भांपू बजाओ वो हटती नहीं है।

खबरी- अहमम पहले मेरी पूरी बात तो सुनिये! अर्जुन को हम नहीं बल्कि कोई और हटाएगा।

उग्र ठाकुर- कौन हटाएगा?

खबरी- गांव वाले।

उग्र ठाकुर- लेकिन वो तो गांव वालों के लिए मसीहा है? वो लोग भला उसे क्यों हटाएंगे?

खबरी- क्योंकि गांव वालों के लिए उनके प्रथा से बढकर कुछ नहीं। हम बस इसी बात का फायदा उठाएंगे।

उग्र ठाकुर- कौन सी प्रथा? तु इतना क्यों घुमा रहा है? सब साफ-साफ बता ना!

खबरी- देखिए। गांव में एक बहोत पुरानी प्रथा है कि यहाँ कोई एक दुसरे से प्यार नहीं कर सकता खास करके भिन्न जाती वाले। अगर ऐसा कोई करता है तो खुद गांव का मुखिया बलवंत सिंह के नेतृत्व में पंचायत किया जाता है। अब तक के पंचायत के इतिहास में हमेशा एक ही निष्कर्ष सामने आया है कि दोनो प्यार करने वालों में से किसी एक का गांव से निष्कासन कर दिया जाता है।

उग्र ठाकुर- अगर अर्जुन के बजाय उन्होंने उस लडकी का निष्कासन कर दिया तो? वैसे भी वो लडकी तो कुछ ही दिनों के लिए यहाँ अपने रिसर्च के लिए आइ है। अगर ऐसा हुआ तो?

खबरी- ऐसा नहीं होगा।

उग्र ठाकुर- क्यों ऐसा नहीं होगा?

खबरी- क्योंकि आप और मैं अर्जुन को अच्छी तरह से जानते हैं। वो उसे अकेले नहीं छोड़ेगा। या तो वो उसे यहाँ अपने साथ रखेगा या तो उसे अपने साथ कहीं ले जाएगा।

अगर उसने इन दोनो में से कुछ भी किया तो वो पंचायत के नियमों के खिलाफ हो जाएगा क्योंकि पंचायत का नियम है सिर्फ एक को ही बाहर निकालना अगर दोनो एक साथ हो जाएंगे तो पंचायत का कुछ फायदा ही नहीं। तो अगर वो पंचायत के विरुद्ध आ जाता है तो उसे रास्ते से हटाने में हमारा काम आसान हो जाएगा। कैसी थी तरकीब?

उग्र ठाकुर- रामबाण!

खबरी- तो अब आप अपने चार पाँच लोगों को फौरन गांव में भेज दीजिए ताकि वो अर्जुन

और उस लडकी के बीच के संबंध को लोगों में विस्तार से फैला सकें।

उग्र ठाकुर ने अपने कुछ आदमियों को गांव में भेज दिया यह खबर फैलाने के लिए कि अर्जुन और रिया एक-दूसरे से प्यार करते हैं। उन्होंने किसी एक से कहा, वो एक ने किसी और एक से कहा ऐसे ही धीरे-धीरे बात हर जगह पर फैल गयी और अंत में उस आदमी के कान में यह खबर आ गई जो उस दिन चाय के दुकान पर रिया पर भड़क गया था। उसने कहा, “मुझे तो उसी दिन उन दोनों पर शक हुआ था और आज यह बात साफ हो गयी।”

दूसरा- लेकिन भईया हम क्या कर सकते हैं वो तो मुखिया जी के बेटे हैं और हमारी भी तो इतनी मदद करते हैं?

तिसरा- मदद करके ही तो वो सोचते हैं कि उन्होंने हम पर एहसान किया है और इसके चलते हम लोग कुछ नहीं कहेंगे लेकिन ऐसा नहीं होगा हमारे लिए हमारी वर्षों पुरानी प्रथा से बढ़कर कुछ नहीं।

पहला- अगर आज हमने कुछ नहीं कहा तो कल और कइ लोग ऐसा करने का दुस्साहस करेंगे। हम आज ही मुखिया से कहकर इस बात पर टिप्पणी करेंगे और पंचायत बैठाएंगे।

तिसरा- हाँ तुम बिल्कुल सही कह रहे हो हम पंचायत बैठाएंगे।

जब हम पर कोई आपदा आने वाली होती है तो उसके कुछ देर पहले तक भी हम हमेशा की तरह सामान्य रहते हैं। हमें कुछ नहीं पता होता कि अगले ही पल हमारे साथ क्या होने वाला है? काश कि हमे पहले ही पता होता कि इस समय जो हमारे साथ बैठ रहा है, हंस रहा है, बातें कर रहा है, प्यार कर रहा है वो अगले ही पल हमसे छिन जाएगा तो हम पहले ही उसे दुनिया से चुरा कर कहीं दूर चले जाते। पर हमें पता नहीं होता।

अर्जुन को इस बात का एहसास पहले से था क्योंकि वो यहां के रीति-रिवाजों को अच्छे से जानता था।

दिन को मिलने के वादे के मुताबिक रिया और अर्जुन दोनों बगीचे में घुम रहे थे। रिया तो थी ही थोड़ी बचकानी जैसी। पता नही उसके मन में क्या आया अचानक वो भागने लगी और कहने लगी अपनी आंखे बंद करो उसके बाद मुझे ढूंढ के दिखाओ। अर्जुन भी उसके साथ यह खेल खेलना चाहता था इसलिए उसने अपनी आंखे बंद कर लीं। उसके बाद उसने आंखे खोली और रिया को यहां वहां ढूंढने लगा। रिया यहां से वहां पेड़ों के पीछे-पीछे छुप रही थी। दौड़ते वक्त उसके बाल उसके सर पर गिर गिरकर उड़ रहे थे, उसका दुपट्टा मानों जैसे आसमान में पतंग सरसरा कर उड़ रहा था, उसकी खिलखिलाहट से जैसे पूरे बगीचे में शोर हो रहा था। अर्जुन चाहता तो उसे पल भर में पकड़ लेता लेकिन वो उसे पकड़ना नहीं चाहता था। वो इन पल इन यादों को समेट कर रखना चाहता था, उसे जी भर के देखना चाहता था।

काफी देर तक यह लुक्का छिपी चलती रही और अर्जुन रिया को पकड़ नहीं पाया।

रिया- क्या हुआ हार गए ना हा हा हा।

अर्जुन- हाँ मैं हार गया। अब बाहर आ जाओ।

रिया कहने लगी मैं जानती थी कि तुम मुझे नहीं ढूंढ पाओगे। इसके बाद वो अर्जुन के पीठ पर टंग गयी। अर्जुन कहने लगा, “तुम बहोत भारी हो”।

रिया- क्या मैं भारी हूँ ? अभी तो शुरुआत हुई है पूरी जिंदगी तुम्हें मुझको ऐसे ही लेकर चलना है।

अर्जुन बिना कोई जवाब दिए चलता रहा। कुछ दूर तक चलते रहने के बाद रिया को उस पर तरस आ गया और वो वहीं उतर गयी।

अर्जुन- क्या हुआ उतर क्यों गयी?

रिया- तुम थक गये रहोगे ना इसलिए।

अर्जुन- मैं तो तुम्हें जिंदगी भर ऐसे लेकर चलने के लिए तैयार था लेकिन तुम तो बिच रास्ते में ही उतर गयी। क्या ऐसे ही जिंदगी भर साथ निभाओगी?

अर्जुन की बात रिया को लग गयी और वो उसके सीने से जा चिपकी।

रिया- नहीं, ऐसे मैं बिच रास्ते में तो क्या मरते दम तक तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगी।

अर्जुन मुस्कुराने लगा। उसके बाद दोनों वहीं बैठ गये। रिया के गोद में अर्जुन अपना सिर टिका कर लेट गया।

रिया- अर्जुन! एक बात कहूँ ? तुम ना इतना गुस्सा, लडाइ-झगडा मत किया करो।

अर्जुन- अच्छा वो क्यों?

क्योंकि गुस्सा करने से लडाई-झगडा करने से सिर्फ मुसीबतें बढ़ती हैं उनका हल नहीं होता।

अर्जुन- अच्छा है! यही तो मैं चाहता हूँ कि मुसीबतें बढे और मुझे मरने का मौका मिले।

रिया - हमेशा उल्टा ही जवाब देते हो? और कभी यह मुसीबत मुझपर आ गयी और मुझे कुछ हो गया तो?

अर्जुन- इसलिए तो मैं कह रहा हूँ कि प्यार का डंका मत बजाया फिरो तुम भी इसकी आदत डाल लो!

रिया- नहीं! ना मैं लडना सीखूंगी और ना ही तुम्हें लडने दूंगी, हम प्यार करते हैं हम तो प्यार से ही सबको हरा सकते हैं फिर लडने की जरूरत ही क्या?

अर्जुन- प्यार से कोई नहीं हारता “रिया” अगर किसी को हराना है तो लडना पडेगा और देखना एक दिन खुद तुम मुझसे जरूर कहोगी कि तुम सही थे। वैसे भी ये लडाई मैं शौक से नहीं लडता बल्कि लोगों के भलाई और हक के लिए लडता हूँ। अगर इसके वजह से मुझे कुछ हो भी जाता है तो भी मुझे कोई गम नहीं।

रिया- मान लो कि तुम्हें कुछ नहीं हुआ बल्कि मुझे कुछ हो गया तो?

अर्जुन- ऐसा क्यों कह रही हो? हम एक ही तो हैं! है न?

रिया- हाँ हम एक ही हैं लेकिन मेरे कहने का मतलब वो नहीं था। अर्जुन समझने की कोशिश करो अगर इस वजह से हम में से किसी एक को भी या फिर मुझे कुछ हो गया तो? क्या तब हम एक रह जाएंगे?

अर्जुन- नहीं, नहीं रह पाएंगे पर मुझे इतना पता है कि मेरी वजह से या मेरी दुश्मनी की वजह से तुम्हें कुछ हुआ तो मैं एक छण भी बिना वक्त गंवाए खुद को मौत के हवाले कर दूंगा।

रिया- अच्छा! मेरे लिए जान दे सकते हो लेकिन हमारे लिए ये लडाई-झगडा नहीं छोड सकते?

अर्जुन- हमारे लिए मतलब? अब तक तो तुम अपने बारे में सोच रही थी कि मुझे हो गया तो और अब हमारे लिए?

रिया- तो फिर हमारे लिए नहीं सोचूं तो किसके लिए सोचूं? तुम ही सोचो ना अभी तो हमें शादी करना है उसके बाद सुहागरात मनाना है और फिर बच्चे पैदा करना है, उनके साथ खेलना है, उन्हें बड़ा होते देखना है।

अर्जुन- वैसे अभी तुमने जितना कुछ भी कहा उसमें से मैंने सिर्फ दो बातें ही नोटिस की सुहागरात और बच्चा। अऽ अगर तुम मंजूरी दो तो ये काम मैं शादी के पहले भी कर सकता हूँ।

रिया- बक! जब देखो तब बस तुम्हें मजाक ही सुझता है।

अर्जुन- हा हा हा।

अभी इन्होंने अपनी जिंदगी के बारे में सिर्फ इतना ही सोचा था। तभी एक छोटा सा लडका दौड़ते-दौड़ते उनके पास आया।

लडका- अर्जुन भईया, अर्जुन भईया!

अर्जुन- क्या हुआ छोटे? भागे-भागे कहां जा रहा है?

लडका- आपके पिताजी ने आपको बुलाया है।

अर्जुन- ठीक है तू जा मैं बाद में आता हूँ।

लडका- अर्जुन भईया! उन्होंने आपको अभी बुलाया है।

अर्जुन- अभी?

अर्जुन ने सोचा कि क्या बात है पिताजी तो कभी ऐसे अचानक में नहीं बुलाया करते?

अर्जुन- क्या हुआ छोटे? सब कुछ ठीक तो है ना?

लडका-(गले से पानी उतारते हुए) अर्जुन भईया! आपके पिताजी को आपके बारे में सब पता चल गया है।

अर्जुन- क्या पता चल गया है?

लडका- यही कि आप इनसे प्यार करते हो। गांव वालों ने ही आपके पिताजी को यह सब बताया है।

अर्जुन- ठीक है तू जा।

रिया- तो क्या हुआ अर्जुन? हम कह देंगे कि हम एक दुसरे से प्यार करते हैं और शादी भी करना चाहते हैं।

अर्जुन- नहीं रिया। तुम शहर की रहने वाली हो तुम्हें इस बारे में कुछ नहीं पता। यहां के लोग प्यार को नहीं प्रथा को पुजते हैं और इनकी यह बहोत पुरानी प्रथा है कि एक जाति के लोग किसी और जाति के लोगों से ना तो शादी कर सकते हैं और ना तो प्यार।

रिया- क्या लेकिन ऐसा कहां होता है?

अर्जुन- ऐसा यहां होता है।

रिया- तो अब क्या करें?

अर्जुन ने रिया को देखा और कहा, “घर चलते हैं”।

अर्जुन घर पहुंचा। सभी लोग एक जगह चुप लगाकर खड़े थे और अर्जुन को देख रहे थे। अर्जुन आगे गया और जाकर उसके पिताजी के सामने खड़ा हो गया।

अर्जुन- पिताजी, आपने बुलाया?

बलवंत सिंह- हाँ मैंने बुलाया था।

अर्जुन- कुछ काम था?

बलवंत सिंह- नहीं कुछ खास काम नहीं था। अब ये पुछना था कि गांव वाले तुम्हारे बारे में कुछ कह रहे थे। कह रहे थे कि तुम किसी से प्यार करते हो? वो भी किसी और बिरादरी के लडकी से? देखो सोच समझ के अपना जवाब देना कहीं ऐसा ना हो कि थोड़ी सी गलती के वजह से जिंदगी भर पछताना पड़े।

अर्जुन ने तो पहले ही यह फैसला कर लिया था कि पिताजी को आज सब कुछ सच-सच बता दूंगा।

अर्जुन- जी पिताजी गांव वाले जो कह रहे हैं वो सच है।

बलवंत सिंह- तुमने यह सब मुझसे बताया क्यों नहीं?

अर्जुन- कैसे बताता आपको? अभी तो मुझे उससे प्यार हुए चार दिन नहीं हुए। मैं तो यह सोच रहा हूँ कि इतनी जल्दी गांव वालों को कैसे पता चला?

उसकी यह बात सुनकर उसके चाचा हंसने लगे। बलवंत सिंह भी मन ही मन मुस्कुरा रहे थे लेकिन उन्होंने अपने चेहरे पर इसका हलसा सा भी भाव नहीं आने दिया।

बलवंत सिंह- यह बात मायने नहीं रखती कि गांव वालों को कैसे पता चला या कैसे नहीं हमें बस इतना पता है कि तुमने यहाँ के सदियों से चली आ रही प्रथा को तोड़ने की कोशिश की है।

रणधीर चाचा- भईया अर्जुन को यहाँ के रीति रिवाज के बारे में क्या पता? वो तो शुरू से ही शहर में रहा है।

बलवंत सिंह- गलती शहर में करता तो चलता लेकिन इसने गलती गांव में की है। यहाँ ऐसी गलती की कोई गुंजाइश नहीं है।

अर्जुन- पिताजी, प्यार तो मुझे आप सब से भी है लेकिन क्या सिर्फ इसलिए है क्योंकि आप सब मेरे परिवार हैं? नहीं, परिवार से प्यार नहीं होता बल्कि प्यार से परिवार होता है। रामू काका को देख लीजिए, वो भी तो इतने सालों से परिवार के जैसे रहते आए हैं लेकिन क्या कभी ऐसा लगा कि वो हमारे परिवार नहीं हैं? क्या हमने कभी सोचा कि वो दूसरे जाती के हैं? नहीं ना क्योंकि हम सब उनसे प्यार करते हैं वे हम सब से प्यार करते हैं। ऐसे ही पिताजी मुझे भी उससे प्यार हो गया और उस समय मुझे कोई जाति नजर नहीं आई बस एक भरोसा दिखाई दिया और उसे भी मुझ पर भरोसा था इसलिए वो मेरे साथ यहां आने को तैयार हो गई। अर्जुन ने द्वार के तरफ हाथ दिखाकर इशारा किया।

सब द्वार के तरफ बेसब्री से देखने लगे। सबकी निगाहें उस दरवाजे पर टीकी थी। तब रिया दिखाई दी। सिर झुकाए हुए धीरे-धीरे अन्दर आ रही थी। उसे देखकर सबका दिल हर्षित हो गया। ऐसा किसी को लग ही नहीं रहा था कि अर्जुन ने कोई गलती की है। उसका मन मोह लेने वाला वो चांद से भी ज्यादा सुंदर चेहरा देखकर किसका मन हर्षित नहीं होता। अर्जुन की माँ तो इस तरह खुश हुईं जैसे मानो इन्हें ऐसी ही बहू की तलाश थी। उनकी नजर उससे हट ही नहीं रही थी। चाचा मन ही मन अपने भतीजे को शाबाशी दे रहे थे। सभी लोगों को तो रिया बहोत पसंद आयी। आज सबसे बड़े दुविधा में फंसे हैं सिंह

साहब। उनके समझ में नहीं आ रहा था कि रिश्ते निभाएं या फर्ज। उनका भी दिल कर रहा था कि दोनों के सीर पर हाथ रख कर आशिर्वाद दे दूँ। तभी अर्जुन की माँ बोल पड़ीं। अर्जुन की माँ- इतना क्यों सोच रहे हैं? दोनों का प्यार सच्चा है। इन्होंने कोई गलती नहीं की और ना ही किसी का भरोसा तोड़ा है। मुझे तो ये पसंद है अब आप भी मान जाइए। बलवंत सिंह- आप बड़े ही आसानी से फैसला कर सकती हैं लेकिन हम नहीं। हमें रिश्ता भी निभाना है और फर्ज भी। मैं अगर आज इनका प्यार अपना भी लूँ लेकिन फिर भी कल पंचायत इन्हें नहीं अपनाएगा।

रणधीर चाचा- आज यहां कोई पंचायत नहीं है भईया आज आप बस एक पिता हैं और आपको आज एक पिता होने का रिश्ता निभाना चाहिए। पंचायत कल है कल क्या होगा यह सब कल पर छोड़ दीजिए।

बलवंत सिंह थोड़ी देर तक संकोच में डूबे रहे। फिर उन्होंने इस संकोच को नजरअंदाज करके पिता होने का फर्ज निभाया।

बलवंत सिंह- मैं तुम दोनों को अलग करके तुम्हें दुखी नहीं देखना चाहता। मेरे पास आओ। दोनों बलवंत सिंह के नजदीक गए और उनके पैर छुए।

बलवंत सिंह- सदा सुखी रहो!

फिर उन्होंने मां का भी आशिर्वाद लिया।

बलवंत सिंह- बेटे शाम होने को आ गया है। बहू को खाना-वाना खिलाकर घर छोड़ देना।

अर्जुन- जी पिताजी।

अर्जुन की माँ- (रिया से) आओ ना बेटा बैठो!

रिया- जी मैं ठीक हूँ।

अर्जुन की माँ- अरे बैठो।

दोनों कंधों पर हाथ रखकर अर्जुन की माँ ने रिया को सोफे पर बैठा दिया।

अर्जुन की माँ- और बताओ बेटा तुम्हारे माता पिता क्या करते हैं?

रिया- जी मम्मी हाऊस वाइफ हैं और पापा रिटायर्ड टीचर।

अर्जुन की माँ- और कौन-कौन हैं घर में?

रिया- जी मम्मी, पापा और मैं।

अर्जुन की माँ- फिर घर का खर्चा कैसे चलता होगा?

रिया- जी मैं कालेज के साथ-साथ पार्ट टाइम में घर पर ही ट्यूशन पढ़ाती हूँ और पापा का भी थोड़ा बहोत पेंशन आ जाता है जिससे घर का खर्चा निकल जाता है।

रिया के मेहनत को देखकर सभी मंत्र मुग्ध हो गये।

अर्जुन- अरे अब कुछ खिला भी दो कि सवाल ही करोगी?

तब तक अर्जुन के चाची ने अन्दर से नाश्ता लाया। नाश्ता वगैरह करने के बाद अर्जुन रिया को घर छोड़ने निकल गया। जल्द ही वे दोनों पहुंच गए। रिया कल को लेकर काफी डरी हुई थी। उसने अर्जुन से पुछा, “अर्जुन? कल क्या होगा?”

अर्जुन-(उसका हाथ पकड़कर) चाहे जो भी होगा मुझे बस इतना पता है कि मैं तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ूंगा।

रिया- मुझे बहोत डर लग रहा है।

अर्जुन- आज रात के लिए डर को भुल जाओ। कल सब कुछ सही हो जाएगा मुझपर विश्वास करो।

रिया- तुम पर ही तो विश्वास है।

अर्जुन ने रिया के सिर पर किस किया और फिर घर लौट गया।

9

वारदात से पहले की कहानी

बलवंत सिंह अकेले कुर्सी लगाए बैठे थे। कल के बारे में सोचकर उन्हें निंद नहीं आ रही थी। बस चुपचाप ही आगे-पिछे आगे-पिछे डोल रहे थे। तभी मुंशी जी आए।

बलवंत सिंह- अरे मुंशी जी आइए। आप अब तक सोए नहीं?

मुंशी जी- आप भी तो नहीं सोए।

बलवंत सिंह- सुबह का सवेरा यह तय करने वाला है कि इस घर का भविष्य क्या होगा? कौन कहाँ बिखर जाएगा? ऐसे में निंद किसे आएगी?

मुंशी जी- नहीं सिंह साहब ऐसा मत कहिए कोई कहीं नहीं बिखरेगा। सब यहीं रहेंगे बस आप धैर्य रखीये।

बलवंत सिंह- कैसे धैर्य रखूं मुंशी जी। सोच-सोच कर मेरे हाथ-पैर कांप रहे हैं कि जब मुझे ही अपने बेटे को यहां से... यहां से बेदखल करना होगा तो मैं...मैं यह सब... कैसे करूंगा?

मुंशी जी- नहीं, ऐसा मत कहिए। ऐसा कुछ नहीं होने वाला।

बलवंत सिंह- आपको पता है मुंशी जी जब मैंने अर्जुन को शहर भेजने का फैसला किया था? तब मुझे लग रहा कि मैंने जो कुछ किया है ठीक ही किया है लेकिन...लेकिन आज मुझे ऐसा लग रहा है कि मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी। मैं उसे कोई सिख नहीं दे सका ना ही अपना परम्परा का कोई ज्ञान। ऐसा लगता है आज जो भी हो रहा है यह सब मेरी वजह से हो रहा है।

मुंशी जी- नहीं ठाकुर साहब आप गलत सोच रहे हैं। एक क्षत्रिय का बेटा क्षत्रिय ही होता है कोई भगौडा नहीं। यह चीज तो खून में ही होता है। वो मुकाबले के लिये हमेशा तैयार होता है कभी पीठ दिखाकर भागता नहीं है। आपसे दूर होकर भी अर्जुन हमेशा आप की बातों का जाप करता था। जब स्कूल में सब बच्चों से पुछा जाता था कि तुम क्या बनना चाहते हो? तो सबका जवाब एक ही तरह का आता था। कोई कहता इंजीनियर, कोई कहता डाक्टर लेकिन पूरे क्लास में सिर्फ एक अर्जुन का ही जवाब अलग होता था “मैं बस अपने पिताजी के जैसे बनना चाहता हूं”। बहुत कम लोग होते हैं जो अपने पिता के जैसे बनना चाहते हैं। वो आपके सिख को ही अपना धर्म मानता था। लोग इसके तौर तरीकों से जानना चाहते थे कि इसके पिता कौन हैं और आप कह रहे हैं कि आपने अर्जुन को कोई सिख नहीं दिया? अर्जुन ने सिर्फ इतनी ही गलती कर दी कि वो प्यार कर बैठा। सच तो ये

है कि किसी ने आज तक अर्जुन के बारे में कुछ सोचा ही नहीं। उसने आज तक किसी के भी बात को टाला नहीं जिस किसने भी जो भी कहा उसने आसानी से मान लिया लेकिन उसने ऐसा कभी पुछा नहीं कि मैं ऐसा क्यों करूँ? मैं शहर क्यों जाऊँ, मैं शहर में क्यों पढ़ूँ? मैं अपनो से दूर क्यों रहूँ? मैं अपने मां से दूर क्यों रहूँ? इतने सवालों को अपने जहन में दबाए वो चुपचाप हाँ में हाँ मिलाते गया। किसी ने नहीं सोचा कि एक बार उसकी बातों को समझ लूँ, एक बार पूछ लूँ कि वो क्या चाहता है? इतने साल उसने आप लोगों के बिना शहर में अपने हर दिन कैसे काटे हैं? इसका दर्द तो सिर्फ वही समझता सकता है हममें इतनी दर्द महसूस करने की काबिलियत नहीं है सिंह साहब। जब वो बड़ा हुआ तब तक उसे अपनों की कमी ने पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया था फिर भी उसने कोई शिकायत नहीं की क्योंकि वो आपके फैसलों की कदर करता था और आप कह रहे हैं कि आपने अर्जुन को कोई सिख नहीं दिया? बिना सीख के कोई किसी के बातों का इतना मान नहीं रखता। फिर एक दिन उसे रिया मिली। आप जानते हैं अर्जुन रिया को शहर से ही जानता है। रास्ते में आते-जाते कोई हमसे एक दिन मिल जाए तो हम उसे अगले दिन भुला भी सकते हैं लेकिन कालेज में मिल जाए तो इस बात की कोई गुंजाइश ही नहीं है कि अगले दिन उसका हम इंतजार ना करे। ठीक इसी तरह अर्जुन के साथ हुआ था। अर्जुन ने उसे पहले दिन कालेज में देखा था। रिया एक ऐसी लडकी थी जो सिर्फ घर से कालेज और कालेज से घर और इसके बीच में सिर्फ पढाई। इसे देखकर अर्जुन को ऐसा लगा कि इस कालेज में कोई तो है जो इससे भी ज्यादा शरीफ है वरना यहां तो लोग पढाई करने ही कहाँ आते हैं? रिया का समय निश्चित था। वो बाकियों की तरह समय से पहले आकर अपना वक्त जाया नहीं करती थी। अर्जुन ने भी सोचा कि पहले आकर उसका इंतजार करने से अच्छा है कि मैं भी उसी के वक्त पर आऊँ क्या पता एक ही समय पर दोनों मिल जाएं तो? अगले दिन से अर्जुन भी देर से कालेज आने लगा और वो भी उसी रास्ते से जिस रास्ते से रिया आया करती थी। कभी कल क्या अब तो रोज अर्जुन रिया से मिल जाया करता था लेकिन सामने से कभी नहीं। हमेशा पीछे से। यह रोज की बात थी लेकिन अर्जुन ने उसे कभी इस बात का अनुभव भी नहीं होने दिया कि वो इसका पीछा कर रहा है। होता भी कैसे जब रिया ने अब तक अर्जुन को देखा ही नहीं?

एक बार रिया को शक हुआ था कि इसका कोई पीछा कर रहा है क्योंकि जो लफंगे इसे रास्ते में परेशान करते थे वो अचानक सुधर गये। रिया ने सोचा कि अब ये लोग परेशान क्यों नहीं करते? खैर जो भी है वो तो इस बात से काफी खुश थी कि चलो इन लोगों से थोड़ी राहत तो मिली।

कई दिन, हफ्ते और महीने ऐसे ही बीत गए। अभी भी कहानी वही थी क्योंकि रिया अब तक अर्जुन को नहीं देखी थी और ना ही जानती थी कि कोई उससे प्यार करता है। अर्जुन को तो अब खुद पर गुस्सा आ रहा था ये सोच कर कि कितना बड़ा डरपोक है? उसने सोचा कि ऐसे आखिर कब तक चलेगा? कभी ना कभी तो मुझे उसके सामने आना ही होगा। अगर मैं उसके सामने नहीं गया और ना ही उसे बताया कि मैं उससे प्यार करता हूँ तो उसे कैसे पता चलेगा कि कोई उसे प्यार करता है? फिर तो मेरे इतने दिनों का मेहनत भी बेकार हो जाएगा? नहीं मुझे रिया से मिलना ही पड़ेगा। कोई न कोई बहाना ढूँढकर

मुझे उससे बात करना होगा। तो ठीक है यही तय रहा।

अगले दिन अर्जुन रिया के पीछे-पीछे चला आ रहा था। तकरीबन आधा रास्ता उसको यही बात सोचने में निकल गया कि उससे कैसे बात करूँ? क्या कहूँ? कहीं उसे मेरी बात का बूरा लगा तो? अभी ऐसे ही अर्जुन खुद से बातें करते चला जा रहा था तब तक उसे कालेज सामने नजर आ गया। उसका पूरा रास्ता बीत गया रिया से बात करने के चक्कर में और अब कालेज भी आ गया।

अर्जुन- अरे ये कालेज इतनी जल्दी कैसे आ गया? अब क्या करूँ? छोड़ो ये सब मैं जाकर उससे सीधे बात कर लेता हूँ।

अर्जुन दौड़ते हुए गुंजा की तरफ बढ़ा। अस्सी की रफ्तार से दौड़ते हुए पैर में अचानक ब्रेक लगा और ब्रेक ऐसा लगा की मिट्टी तक भी उखड़ गयी। सामने देखा तो पता नहीं कहाँ से रिया की कोइ फ्रेंड आ टपकी और हाय हैलो करने लगी। अर्जुन इस लड़की को नहीं जानता था लेकिन ये लड़की उसी के गांव की थी। नाम था प्राची।

अर्जुन- (मन ही मन) एक तो इतनी देर इससे बात करने की कोशिश कर रहा था, हिम्मत जुटा रहा था और अब कैसे भी हिम्मत जुटाकर बात करने गया तो यह पता नहीं कहाँ से बिच में आ गयी? सच कहते हैं समय रहते ही सही काम कर लेना चाहिए नहीं तो फिर सही काम करने के लिए सही समय ही नहीं मिलता है।

अर्जुन मायुस होकर पिछे मुड़ गया। तभी प्राची की नजर अर्जुन पर पड़ गयी। उसे लगा कि वो इसे जानती। कुछ देर के लिए वो अर्जुन को नहीं पहचान पाइ फिर उसे याद आया कि यह तो अर्जुन हैं मुखिया जी के बेटे। उसकी आंखें बड़ी हो गयीं।

रिया- इतनी बड़ी आंखें करके किसे देख रही है?

प्राची- उस लड़के को देख रही है वो जो ब्लू टी-शर्ट में जा रहा है?

रिया- देख तो रही हूँ लेकिन उसका चेहरा नहीं दिखाई दे रहा है। क्यों कौन है वो?

प्राची- वो मेरे गांव के मुखिया के बेटे हैं।

रिया अर्जुन को नहीं देख पाइ। अर्जुन जा चुका था। क्लास भी लग चुकी थी। जैसे तैसे चार क्लास निकल गए और लंच हुआ। कुछ स्टुडेंट्स कैंटीन में बैठे थे और कुछ बाहर के गार्डन में। इन्हीं बाहर के गार्डन में अर्जुन भी बैठा था। खुद से सवाल जवाब में भिड़ा हुआ। तब तक प्राची उसके पास आइ।

प्राची- अ अगर मैं गलत नहीं हूँ तो आप अर्जुन हैं ना?

अर्जुन-(उसके तरफ असमंजस से देखते हुए) तुम्हें कैसे पता?

प्राची- क्योंकि मैं आप ही की गांव की रहने वाली हूँ।

अर्जुन- क्या सच में? फिर तो मेरा काम और आसान हो जाएगा(मन में सोचा)।

प्राची- हाँ। अच्छा सुबह में मुझे लगा कि आप हमारे तरफ आ रहे थे और फिर अचानक मुड़ क्यों गये?

अर्जुन- वो वो क्या है कि मैं तुम लोगों के तरफ नहीं मैं तुम्हारी उस दोस्त के पास आ रहा था।

प्राची- अच्छा रिया के पास?

अर्जुन- उसका नाम रिया है?

प्राची- क्यों आप उसे नहीं जानते हैं? फिर आप..उसके पास..क्यों जा रहे थे?

अर्जुन-(नजरें निचे झुकाकर) वो क्या है कि मैं उससे बात करना चाहता था।

प्राची- अच्छा बात करना चाहते थे! लेकिन क्यों?

अर्जुन- तुम्हारे हर सवाल का जवाब देना जरूरी है क्या?

प्राची- ठीक है कोई बात नहीं मत बताओ। अ मैं चलती हूँ।

अर्जुन- अरे क क कहां रूको तो, अच्छा बताता हूँ। वो क्या है कि मैं उसे चाहता हूँ और कई दिनों से उससे बात करने की कोशिश कर रहा हूँ। आज बहोत हिम्मत बांधकर मैं उससे बात करने जा रहा था तब तक तुम आ गयी।

प्राची- ओ मुझे पता नहीं था।

अर्जुन- अब फिर से डर लगने लगा है।

प्राची- कोई बात नहीं फिर से मौका मिल ही जाएगा।

अर्जुन- वही तो कर रहा था इतने दिन से।

प्राची- वैसे एक बात बताऊँ अगर आपको बुरा ना लगे तो?

अर्जुन- हाँ बताओ।

प्राची- मुझे लगता है कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।

अर्जुन- क्या मतलब? ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए?

प्राची- लगता है आप रिया को सही से नहीं जानते? देखिए सब की जिंदगी एक जैसी नहीं होती। किसी के जिंदगी खुशियों से भरी होती हैं और किसी की दुख और लाचारी से।

आपकी जिंदगी में दुख और लाचारी की कोई जगह नहीं है और रिया की जिंदगी में खुशी नहीं है। आपकी पढाइ का खर्च, आपके रहने खाने का खर्च आपके माता-पिता उठाते हैं लेकिन रिया की कहानी ठीक इससे उल्टी है। उसके माता-पिता का खर्च, उसके घर का खर्च खुद रिया उठाती है। पिता रिटायर होने के बाद से घर बैठे हैं और मां हाऊस वाइफ हैं वो क्या कर सकती है? ट्यूशन चलाकर तो वो इनका खर्च निकालती है। कोई भाई नहीं, कोई देखभाल करने वाला नहीं। ऐसे में इन सबके बोझ तले उसका एग्रीकल्चर करने का सपना। उसकी जिंदगी पहले से ही इतनी अस्त-व्यस्त है। बड़ी मुश्किल से तो वो इस कांटे भरे रास्ते पर पैर जमाए खडी है ऐसे में मुझे लगता है कि अगर आप उसकी जिंदगी में आ गए तो उसका ध्यान भटक जाएगा और वो लडखडा जाएगी।

ऐसा ना हो इसलिए मैं आपको पहले ही ये सब बता रही हूँ।

अर्जुन खामोश था। प्राची की ये बात सुनने के बाद उसके पास कोई शब्द ही नहीं बचा कुछ कहने के लिए।

प्राची- क्या हुआ?

अर्जुन- कुछ नहीं बस पिताजी की कही कुछ बातें याद आ गयीं थी। मैंने निष्पक्ष होकर इस बारे सोचा। तुमने बहोत सही काम किया मुझे ये सब बता कर। अब तुम चिंता मत करो मैं रिया से इस बात का कभी कोई जिक्र नहीं करूंगा और ना ही कभी उसके सामने आउंगा।

प्राची ने सर हिलाकर इशारे में कहा ठीक है।

अर्जुन- हाँ एक बात और, दुख सबके जिंदगी में होता है चाहे वो अमीर हो या गरीब। सुखी वही रहता है जो मुस्कुराना जानता है और प्यार करना जानता है। अगर हमें प्यार मिल

गया तो समझो हमें जिंदगी मिल गयी। यह मेरे पिताजी के शब्द हैं। रिया के लिए मैं यही दे सकता हूँ। उसे इस बात का पाठ पढा देना शायद इससे उसकी थोड़ी दिक्कतें खुशीयों में बदल जाए।

प्राची- ठीक है।

अर्जुन- अब तुम जा सकती हो और कभी किसी सहायता की जरूरत पड़े तो बे झीझक बता देना।

प्राची- आप बिल्कुल अपने पिताजी की तरह बातें करते हैं।

अर्जुन- थैंक्स।

अर्जुन ने बड़ी ही समझदारी के साथ यह फैसला लिया था। वो जानता था कि जब वो किसी की दिक्कतें कम करने लायक नहीं है तो प्यार करके उसकी जिंदगी में दखलंदाजी करने के लायक भी नहीं है। उसने वहीं पर अपने कदम रोक लिए पर अर्जुन के लिए उसे भुला देना इतना आसान नहीं था क्योंकि उसके साथ इसका रास्ता जुड़ चुका था। उस रास्ते से उसकी यादें जुड़ चुकी थीं। जब शक से रिया पीछे मुड़कर देखती और अर्जुन छुपकर उसकी तराशते हुए नजरों को देखता वो नजरे जुड़ चुकी थीं। इन सब चीजों को भुलाने के लिए अर्जुन धीरे-धीरे इन सब से दूर रहने लगा। उसने वो रास्ता ही बदल दिया। अब वो दूसरे रास्ते से ही कालेज आया-जाया करता था। देखते ही देखते कई महीने गुजर गये थे। अर्जुन इन सब चीजों से काफी दूर हो चुका था। सिर्फ दूर ही हुआ लेकिन भुला नहीं।

आखिरी साल का एग्जाम नजदीक आ गया था। अर्जुन ने भी सोच लिया था कि एग्जाम के होने के बाद वो हमेशा के लिए गांव चला जाएगा। एक दिन अर्जुन कालेज जा रहा था तभी उसे प्राची मिली।

प्राची- हाय कैसे हैं?

अर्जुन- हाय, बढ़िया हूँ। तुम कैसी हो?

प्राची- मैं भी ठीक हूँ।

अर्जुन- और तुम्हारी दोस्त रिया कैसी है?

प्राची- वो भी ठीक ही है।

अर्जुन- ठीक ही है मतलब? कोई दिक्कत है?

प्राची- दिक्कत कुछ नहीं बस आजकल थोड़ी टेंशन में रहती है।

अर्जुन- टेंशन में? लेकिन क्यों?

प्राची- क्योंकि एग्जाम नजदीक आ गया है और एग्जाम के बाद वो एग्रीकल्चर कर पाएगी की नहीं उसे पता नहीं इसलिए वो हमेशा टेंशन में रहती है।

अर्जुन- लेकिन उसे ऐसा क्यों लगता है कि वो एग्रीकल्चर कर पाएगी या नहीं?

प्राची- एग्रीकल्चर करने के लिए पैसे भी तो लगते हैं? इतने पैसे उसके पास कैसे आएंगे?

अर्जुन- ओह तो ये बात है। अच्छा क्या मैं कुछ मदद कर सकता हूँ?

प्राची- आप भले ही मदद करना चाहते हों लेकिन रिया इससे साफ इनकार कर देगी।

अर्जुन- जानता हूँ लेकिन इसका मतलब ये तो नहीं कि मैं सब कुछ जान कर भी अनजान रहूँ? मुझे तुम्हारी मदद चाहिए।

प्राची- कैसी मदद?

अर्जुन- मेरे पास कुछ पैसे हैं। अगर इससे कुछ काम नहीं हुआ तो ये चैन गिरवी रखकर उसके दाखिले के लिए पैसा इकट्ठा हो ही जाएगा।

प्राची- क्या? लेकिन नहीं ऐसा करना सही नहीं है। पैसा तो समझ में आता लेकिन ये चैन? ये चैन तो आपके पुर्वज की निशानी है। आप इसे कैसे बेच सकते हैं?

अर्जुन- तुमने जो कहा मैंने माना। अब तुम्हें मेरी ये बात माननी होगी। बाद में मेरे पास जैसे पैसा होगा मैं इसे वापस ले लूंगा।

प्राची- लेकिन आप यह सब करोगे कैसे?

अर्जुन- बस देखते जाओ।

प्राची- ठीक है बाद में मिलते हैं।

अर्जुन- ठीक है मैं तुमसे बाद में मिलता हूँ।

अर्जुन वहाँ से कालेज के तरफ नहीं बढ़ा। मुड़कर वापस घर चला आया। मुंशी जी उस वक्त घर पर थे। फोन पर अर्जुन के पिताजी से बात कर रहे थे। तभी अर्जुन घर पहुँचा।

मुंशी जी- अरे अर्जुन बाबू? आप तो कालेज गये थे ना?

अर्जुन- हाँ अंकल गया था लेकिन फिर मुझे एक काम याद आ गया इसलिए वापस चला आया।

मुंशी जी- अऽ पिताजी फोन पर हैं, बात करोगे?

अर्जुन- हाँ हाँ दीजिए।

बलवंत सिंह- अर्जुन?

अर्जुन- पाए लागू पिताजी।

बलवंत सिंह- खुश रहो। कैसे हो?

अर्जुन- ठीक हूँ।

बलवंत सिंह- पढाई कैसी चल रही है?

अर्जुन- ठीक चल रही है। आप कैसे हैं और मां कैसी हैं?

बलवंत सिंह- सब कोई ठीक है। तुम्हारी माँ ही बस परेशान रहती हैं।

अर्जुन- क्यों?

बलवंत सिंह- क्योंकि तुम्हें देखने का बड़ा मन करता है उनका। दो साल तो हो गये तुम्हें गांव आए। इस बार आओगे कि नहीं?

अर्जुन- देखता हूँ पिताजी। अगर फुर्सत मिली तो जरूर आऊंगा।

बलवंत सिंह- कोशिश करना आने की।

अर्जुन- ठीक है।

फोन कट गया। अर्जुन गहरी साँस लेकर सोफे पर लेट गया।

मुंशी जी- क्या हुआ अर्जुन बाबू? आज थोड़ा उखड़े हुए लग रहे हो?

अर्जुन- और रोज कैसा लगता हूँ अंकल?

मुंशी जी- रोज तो आप दमकते सूरज जैसे लगते हो। क्या हुआ? सूरज ढल क्यों रहा है?

अर्जुन- सूरज इसलिए ढल रहा है अंकल क्योंकि उसे कल फिर से लोगों की जिंदगी में नया सवेरा लाना है।

मुंशी जी- किसी एक के लिए क्यों इतने लोगों को बीच में ला रहे हो? बताओ किसके

जिंदगी में सवेरा लाना है?

अर्जुन- जाने दो अंकल जान कर क्या कर लोगे?

मुंशी जी- अरे अर्जुन बाबू आप बस बताइए तो। आप के लिए इतना भी नहीं कर पाउंगा तो लालत है मुझपर और सिंह साहब को दिये हुए वचन पर कि मैं आपको किसी चीज़ की तकलीफ नहीं होने दूंगा।

अर्जुन- अंकल मेरा जो ये काम है वो आपके सिंह साहब को दिए गये वचन के दायरे में नहीं आता। ये काम अलग है।

मुंशी जी- तो फिर आप मुझे अपना दोस्त समझ लीजिए। फिर बताइए कि बात क्या है?

अर्जुन- अऽ ठीक है बता तो दूंगा लेकिन? आप को मुझसे ये वादा करना होगा कि आप ये बात पिताजी को नहीं बताएंगे।

मुंशी जी- नहीं बताउंगा।

अर्जुन- ठीक है।

अर्जुन ने रिया के मिलने से लेकर उसके एडमिशन तक कि सारी बातें मुंशी जी को बता दी।

मुंशी जी- आज आप में मुझे आप के पिताजी नजर आ रहे हैं। आपने जो फैसले किए हैं वो सच में सबके बस की बात नहीं है। अब आप देखिए मैं क्या करता हूं? इतने सालों का पहचान कब काम आएगा?

मुंशी जी ने अपना फोन निकाला और मिश्रा जी नामक सेव किए गए नम्बर को डायल कर दिया।

अर्जुन- किसे फोन कर रहे हैं?

मुंशी जी- बस आप देखते रहिये।

फोन लग गया।

मुंशी जी- और मिश्रा जी कैसे हैं?

मिश्रा जी- अरे मुंशी जी! हम तो अच्छे हैं, आप बताइए। कैसे याद किये? और सिंह साहब कैसे है?

मुंशी जी- सब कोई ठीक है। बस अर्जुन है ना उन्हीं को आपसे कुछ काम था।

मिश्रा जी- क्या काम था बताइए? अरे आपके काम नहीं आएंगे तो किसके काम आएंगे?

मुंशी जी- जी अब फोन पर क्या बात करें? मिलकर ही बता देंगे।

मिश्रा जी- ठीक है तो आप कल हमारे कालेज आ जाइए। बैठकर बात करेंगे।

मुंशी जी- ठीक है। चलिए कल मिलते हैं।

फोन कट गया।

अर्जुन- अंकल आप किससे बात कर रहे थे?

मुंशी- ये सेंट जेवियर्स इंजीनियरिंग कालेज में एक प्रोफेसर हैं। कल मिलने के लिए कालेज बुलाए हैं। देख लिए ना हमारी पहुंच?

अर्जुन- हांऽ वो तो कल पता चलेगा।

अर्जुन और मुंशी जी अगले दिन प्रोफेसर मिश्रा जी से मिलने उनके कालेज गए। मिश्रा जी अपने आफिस में ही बैठे थे। दोनो जन वहाँ पहुँचे।

मिश्रा जी- आइए मुंशी जी। अभी आप के बारे में ही सोच रहा था। आइए बैठिए।

मुंशी जी- जी धन्यवाद।

मिश्रा जी- तो बताइए क्या सेवा कर सकता हूँ मैं आपकी?

मुंशी जी- जी ये अर्जुन बाबू हैं। इन्हीं को आपसे बात करनी थी।

मिश्रा जी- हाँ अर्जुन तो बताओ कैसे आना हुआ?

अर्जुन- जी अंकल वो क्या है कि मुझे किसी का एडमिशन कराना था।

मिश्रा जी- एडमिशन? बस इतनी सी बात?

अर्जुन- सर, दरअसल बात ये है कि एडमिशन अभी कराना है।

मिश्रा जी- क्या? अभी कराना है? लेकिन एडमिशन शुरू होने में तो अभी दो महीने बाकी हैं?

अर्जुन- जानता हूँ इसलिए तो परेशान हूँ। इतना समय नहीं है मेरे पास। एग्जाम होते ही मैं गांव चले जाने वाला हूँ। अगर मैं चला गया तो कोई ठीक नहीं है कि वो आगे पढ़ पाएगी कि नहीं?

मिश्रा जी- कौन?

अर्जुन क्या जवाब देता कि किसके बारे में वो बात कर रहा है? इसके और रिया के बीच में ऐसा कोई रिश्ता नहीं थी जिससे वो प्रोफेसर को समझा सके। उसने प्रोफेसर को सारी बातें बता दीं ताकि वो ठीक तरीके से समझ सकें कि मसला क्या है?

मिश्रा जी-(आह भरते हुए) तोह...ये बात है। तुम उसका एडमिशन इस लिए अभी कराना चाहते हो ताकि वो अभी से निश्चित हो जाए और अपना एग्जाम अच्छे से पूरा कर सके?

अर्जुन- जी बिल्कुल।

मिश्रा जी- लेकिन दिक्कत ये है कि एडमिशन अभी कैसे हो सकता है? अच्छा ये बताओ तुम ये भी कह रहे हो कि उसे पता ना चल पाए कि उसका एडमिशन किसने कराया है? तो अगर उसका एडमिशन हो भी जाता है तो क्या वो इस बारे में सोचेगी नहीं या पूछेगी नहीं?

अर्जुन- इसलिए तो मैं आपके पास आया हूँ सर। आप ही सोचिये कि यह सब कैसे होगा? प्रोफेसर मिश्रा जी सोच में डूब गये और कुर्सी से उठकर टहलने लगे। आखिर ये कैसे मुमकिन है कि एडमिशन भी अभी हो जाए और किसने कराया पता भी ना चले? कुछ देर बाद कुछ सोचकर प्रोफेसर मिश्रा जी ने अर्जुन से सवाल किया।

मिश्रा जी- एक रास्ता है। देखो अभी एडमिशन तो नहीं हो सकता लेकिन अगर हम किसी भी तरह रिया को इस बात का यकीन दिला दें कि उसका एडमिशन बिना किसी दिक्कत और बीना पैसे के इस कालेज में हो जाएगा तो?

अर्जुन- आइडिया तो अच्छा है लेकिन ये होगा कैसे?

मिश्रा जी- अऽ रिया का फर्स्ट और सेकंड इयर में कितने मार्क्स थे?

अर्जुन- अऽ वो तो पता नहीं। जरा एक मिनट रुकिये मैं अभी पता करके बताता हूँ।

अर्जुन ने प्राची को कॉल किया।

अर्जुन- हैलो प्राची?

प्राची- हाँ बोलिए!

अर्जुन- वो मैं पुछ रहा था कि रिया का फर्स्ट और सेकंड इयर में कितने मार्क्स थे?

प्राची- अऽ फर्स्ट इयर में पचासी पर्सेंट था और सेकेंड इयर में बयासी।

अर्जुन- ठीक है।

इतना कहकर उसने फोन रख दिया।

अर्जुन- जी फर्स्ट इयर में पचासी पर्सेंट और सेकेंड इयर में बयासी।

मिश्रा जी- तो ठीक है। हम रिया के लिए कालेज के तरफ से एक ऑफर नोटिस भेजेंगे जिसमें रिया की पढाई सम्बन्धित हुनर का तारिफ किया जाएगा और उसे इसी आधार पर खुशी जताते हुए हम उसे अपने कालेज में निःशुल्क एडमिशन कराने के लिए निमंत्रित करेंगे। इससे उसे लगेगा कि ये दाखिला उसके हुनर के कारण हुआ है और तुम्हारा राज़, राज़ ही रह जाएगा।

प्रोफेसर मिश्रा जी के राय सुनकर पल भर में ही अर्जुन की सारी दिक्कतें छू करके गायब हो गयीं। वो रिया के लिए इतना खुश हो गया कि उसने झुककर प्रोफेसर मिश्रा जी के पैर पकड़ लिए।

अर्जुन- आपका धन्यवाद कैसे करूँ मुझे समझ में नहीं आ रहा है। आपने मेरी सारी मुश्किलें एक झटके में ही खत्म कर दी। शायद इसलिए भगवान भी सबसे पहले गुरु के चरण स्पर्श का ही वर्णन करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि वो सिर्फ जिंदगी ही देते हैं लेकिन गुरु जिंदगी को जितने का सही रास्ता।

मिश्रा जी- अरे ये क्या कर रहे हो? अर्जुन उठो! बेटे जब तुम एक अंजान शख्स के लिए इतना कर सकते हो तो मैं तो एक गुरु हूँ। एक छात्र के लिए क्या मैं इतना भी नहीं कर सकता?

अर्जुन ने अपने जेब से वो पैसे निकाले जो उसने रिया के दाखिला के लिए जुटाए थे। उसने वो पैसे प्रोफेसर मिश्रा जी को दे दिए।

अर्जुन- सर मेरे पास इतने ही पैसे हैं। अगर कम पड़े मुझे बता दीजियेगा।

मिश्रा जी- लेकिन अब पैसों की कोई जरूरत नहीं।

अर्जुन- जरूरत है सर। मैं चाहता हूँ कि सिर्फ रिया के लिए ये निःशुल्क दाखिला हो लेकिन इस कालेज बाकि लोगों के लिए बाकी सभी स्टूडेंट्स की तरह दाखिला हो ताकि वे इस बारे में रिया से कभी बात ना करें।

मिश्रा जी- जैसी तुम्हारी मर्जी।

अगले दिन सुबह रिया के घर पर कालेज का कोरियर पहुंचा। कोरियर वाले ने बाहर से आवाज लगाया। आवाज सुनकर रिया बाहर आई।

रिया- जी बोलिए?

कोरियर आया है (कोरियर वाले ने कहा)।

रिया- कोरियर?

कोरियर लेकर रिया ने रिसीव पेपर पर साइन किए।

कोरियर के उपर बड़े अक्षरों में लिखा था सेंट जेवियर्स इंजीनियरिंग कालेज। रिया के हाथ में एक मशहूर इंजीनियरिंग कालेज का चिट्ठी था जो देखकर रिया घबड़ाइ हुई थी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि ये क्या है? उसने लिफाफे में से उस चिट्ठी को बाहर निकाला।

जैसे-जैसे वो उस चिट्ठी में लिखे शब्दों को पढ़े जा रही थी वैसे-वैसे उसकी आँखें

बड़ी होती जा रही थीं और होठों पर मुस्कान बढते जा रहा था। चिट्ठी पढने के बाद उसने जोर से चिल्लाया, “येस” और फिर अपना मुंह दबाकर यहां-वहां देखने लगी कि मुझे चिल्लाते हुए किसी ने देखा तो नहीं?

अर्जुन और प्राची छुप कर रिया के रिएक्शन देख रहे थे। रिया की ये खुशी देखकर अर्जुन का दिल हर्ष के मारे उभर उठा था। रिया अन्दर से बाहर उछल कूद कर रही थी। अर्जुन की निगाहें रिया को देख रही थीं और होंठ इसके दिल की खुशी मुस्कुरा कर बयां कर रही थी। प्राची सिर्फ अर्जुन के ही देख रही थी और सोच रही थी कि इन्हें यह सब करके क्या मिला? क्या इसके पिछे इनका कोई स्वार्थ है या और कुछ?

सवाल बर्दाश्त नहीं हुआ और वो पुछ बैठी।

प्राची- क्या मैं आपसे एक सवाल कर सकती हूं?

अर्जुन ने रिया के तरफ देखते हुए ही हामी भरी, “हुमम”।

प्राची- आपको रिया के लिए यह सब क्या मिला? क्या आपके यह सब करने से गुंजा आपको मिल जाएगी?

दोनों वहाँ से चलने लगे। अर्जुन ने इस सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। प्राची अर्जुन के जवाबों का इंतजार कर रही थी। जब उसने दोबारा सवाल पुछने की कोशिश की अर्जुन के तरफ देखा, तो देखा कि अर्जुन मुस्कुरा रहा था। प्राची ने फिर से अपनी बात दोहराई, “मैं आपसे कुछ पुछ रही हूं और आप हैं कि बस मुस्कुराए जा रहे हैं”?

अर्जुन का ध्यान प्राची पर आया और कहा, “हुमम क्या कह रही थी”?

प्राची- मैं कह रही थी कि आपने रिया के लिए यह सब क्यों किया? क्या आपके यह सब करने से रिया आपको मिल जाएगी?

अर्जुन- तुम्हारे सवालों का जवाब अभी तो था मेरे होठों पर। तुम्हें कभी प्यार नहीं हुआ है इसलिए शायद तुम्हें पता नहीं। मैं समझाता हूँ। जब हम किसी से प्यार करते हैं और वो दुखी हो तो सीने में आग सी लगी रही है ऐसा लगता है कि परेशान वो है और तडप हम रहे हैं और जब वो खुशी से जगमगाकर उछल कूद करता है तो दिल को इतना खुबसूरत एहसास मिलता है जैसे मानो कि सब कुछ मिल गया हो। इसलिए मैंने यह सब किया ताकि वो खुश रह सके और मैं भी। रही बात कि ऐसा करने से रिया मुझे मिल जाएगी कि नहीं तो तुम्हें बता दूँ कि मुझे रिया नहीं चाहिए बस उसकी खुशी चाहिए। मैं उसके करीब रहूँ या ना रहूँ वो बस खुश होनी चाहिए। वैसे भी एग्जाम के बाद मैं अपने गांव चला जाऊंगा। फिर वहां देखने के लिए रिया नहीं रहेगी इसलिए जाने से पहले उसके लिए कुछ करना चाहता था और आज तुम्हारे वजह से कर भी लिया। अब चैन से मैं अपने गांव जा पाऊंगा।

10

कहानी का अंत

मुंशी जी- (सिंह साहब से) कुछ दिनों बाद एग्जाम शुरू हो गया। अर्जुन अपना एग्जाम खत्म करके वापस गांव चले आए। गांव आने के कुछ महीनों बाद ही रिया अपने रिसर्च के लिए यहां आई और यह सब हुआ। अर्जुन ने अब तक जो भी किया आपके सिखाए रास्ते पर चलकर ही किया निष्पक्ष होकर किया। आप ही बताइए अर्जुन क्या करते जब उसका प्यार उसके पीछे चलते-चलते यहां तक गया? दोबारा अपने प्यार से रूबरू होकर अर्जुन कैसे पीछे मुड़ सकते थे?

बलवंत सिंह- मुंशी जी आज आपने मुझसे यह बात बताकर मेरे मन की दुविधा दूर कर दी। मुझे लगता था कि अर्जुन अपने आप को नहीं सम्भाल सकता पर आज पता चला कि वो तो अपने साथ-साथ अपनों का भी अच्छी तरह से खयाल रख सकता है। अब जाकर सो जाइए मुंशी जी बहोत रात हो गयी है।

कुछ देर बाद अर्जुन भी रिया को घर छोड़कर वापस आ गया। जब उसने देखा कि कोई भी जागा नहीं है तो वो भी अपने कमरे में जाकर सो गया। अभी उसकी आँख लगी ही थीं कि उसे उसके कमरे में कुछ गिरने की आवाज़ सुनाई दी। वो पलंग पर से उठा और देखा कि कागज़ से लिपटा हुआ एक पत्थर गिरा हुआ है। अर्जुन ने वो कागज़ खोला।

“अगर जानना चाहते हो कि ये सब बातें बाहर कैसे आई तो मुझसे अभी मिलो। तुम्हारे घर के पीछे वाले रास्ते पर हूँ।”

अर्जुन- इतनी रात गए कौन हो सकता है?

अर्जुन ठीक उसी पीछे वाले सड़क पर गया जहां उस अनजान शख्स ने बुलाया था। जब अर्जुन वहां पर गया तो देखा एक लड़की खड़ी है। जब वो उसके और नजदीक गया तो देखा कि ये रिया है उग्र ठाकुर की बेटी।

अर्जुन- तुमने मुझे यहां क्यों बुलाया?

रिया- ये बताने के लिए कि तुम्हारे साथ जो हो रहा है तुम्हारे बारे में जो अफवाह फैलाया जा रहा है वो मेरे पिताजी की साजिश है। तुम्हें रास्ते से हटाने के लिए।

अर्जुन- लेकिन ये अफवाह नहीं सच है। वैसे तुम्हारे पिताजी को शुक्रिया करता हूँ। उन्होंने यह बात मेरे पिताजी तक पहुंचाने में मेरी बहोत मदद की है। पर एक बात समझ में नहीं आ रहा है तुम ये सब क्यों कर रही हो? यह सब मुझे क्यों बता रही हो?

रिया- क्योंकि मुझे तुम्हारी परवाह है। मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे साथ कुछ गलत हो।

अर्जुन- ऐसा क्यों? तुम्हें मेरी परवाह क्यों है?

रिया- ऐसे ही। कुछ रिश्ते होते हैं जिनका कोई नाम नहीं होता।

अर्जुन- ऐसे रिश्ते सिर्फ दर्द और तकलीफ देते हैं। खास करके तब जब आप पहले से ही जानते हों कि वो किसी और से प्यार करता है।

रिया- मेरे लिए ये जरूरी नहीं है, अगर कुछ जरूरी है तो वो है तुम्हें चाहना। मैं जानती हूँ तुम किसी और से प्यार करते हो पर मैं भी क्या कर सकती हूँ? दिल तुमपर आ गया और मैंने बता दिया। खैर मैं तो यहां सिर्फ यही बताने आई थी। अब चलती हूँ।

अर्जुन- ठीक है।

रिया- अच्छा क्या मैं तुम्हारे साथ एक फोटो ले सकती हूँ?

अर्जुन- हां बिल्कुल।

रिया फोटो लेकर वापस चली गयी।

रात बीत गयी। सवेरा फिर से हुआ। रोज की तरह लोग आज अपने खेत-खलिहानों में काम नहीं कर रहे थे बल्कि अपने द्वार पर बैठकर पंचायत का ढोल बजने का इंतज़ार कर रहे थे। कुछ लोग तो पहले से ही उस स्थान पर बैठ गये थे जहां पर हमेशा से पंचायत होते आया है, जहाँ पर पहले भी कई एक-दूसरे से प्यार करने वाले का किस्मत तिसरे और चौथे ने तय किया है। आज भी यहाँ वही होने वाला था। कुछ देर बाद अचानक से एक ढमममम करके डरावना सा आवाज़ गांव वालों के कान को छूकर गुजर गया। सभी सावधान हो गए। समय आ गया था इस गांव के रीति के इतिहास में दो और लोगों का नाम दाखिल होने का। उस ढोलक के डरावने और भड़काऊ आवाज़ सुनकर आदमी से लेकर औरत तक सब सैकड़ों के तादाद में इकट्ठा हो गये। सिंह साहब सहित पंचायत के पांचो सदस्य भी वहां पर मौजूद थे। अर्जुन और रिया भी एक किनारे खड़े थे। यकीन नहीं हो रहा था कि ये दोनों आज ऐसे जगह पर खड़े थे जहाँ पर इन्हें कैसे जिना है इसका फैसला कोई और करने वाला था। उग्र ठाकुर के लिए तो ये बेहद खुशी की बात थी। आज इसके रास्ते का कांटा जो निकलने वाला था! इस पल को वो कैसे खो सकता था? वो भी इस पंचायत में शामिल हुआ।

पांचो सदस्यों में से एक सदस्य गांव का लिखा हुआ शिकायत पत्र पढ़ रहा था।

पहला सदस्य- अगर सिंह साहब की अनुमति हो तो क्या हम ये पंचायत प्रारंभ करें?

सिंह साहब-(कुर्सी से खड़े होकर) जी बिल्कुल और मैं उम्मीद करता हूँ कि इस पंचायत फैसला हमेशा की तरह सही होगा।

दूसरा सदस्य- इस शिकायत पत्र में जो कुछ भी लिखा है वो हमने पढ़ा लेकिन हम जानना चाहते हैं कि इस पत्र में जो लिखा है वो सब आपके समर्थन से लिखा है या नहीं इसलिए आप लोगों को यह शिकायत मुंह जबानी करनी होगी ताकि हम जान सकें कि ये सत्य है या नहीं?

सभी लोग इंतज़ार कर रहे हैं कि कोई उठकर उस शिकायत को सही करार दे लेकिन कोई नहीं उठा सब एक दूसरे का चेहरा देख रहे थे। सबके गले से पानी निचे उतर रहा था। सभी लोग अपने शिकायत से पीछे हट गये। क्योंकि उनके दिल कहीं ना कहीं ऐसा चल रहा था कि शायद ये गलत हो रहा है? तभी उग्र ठाकुर ने अपने एक आदमी को इशारा किया जो उन्हीं लोगों के बीच में बैठा था। वो आदमी उठा और बोला, “हाँ मैं करता हूँ इस

शिकायत पत्र का समर्थन। मैं इस गांव के वर्षों से चले आ रहे इस रिती का उलंघन नहीं होने दूंगा। सबने देखा है कि अर्जुन और ये लडकी दोनो एक दूसरे के बहोत करीब रहते हैं बगीचों में अकेले घुमते हैं। इससे हमारे गाँव के लडकियों पर क्या असर पड़ेगा?”

इस आदमी ने बुझते हुए आग में घी डालने का काम कर दिया। अब आग को तो भडकना ही था। उसकी ये आवाज सुनकर दुसरोँ में भी जोश आ गया। जिसने भी अर्जुन और रिया को एक साथ देखा था वो उठकर इस बात की पुष्टिकरण करने लगा। देखते-देखते सभी लोग अर्जुन के खिलाफ हो गए। उग्र ठाकुर को पूरा यकीन हो गया कि अब अर्जुन का निष्कासन तय है। वो अपने मूंछों को ताव देने लगा। रिया, अर्जुन के और करीब खडी हो गयी। उसकी आंखों में डर समाया हुआ था। उसे ऐसे माहौल का कोई अनुभव नहीं था। फिर ऐसे में सबके सामने खडा होना और सबका ध्यान इन पर होना, डर नहीं लगेगा तो और क्या होगा?

तिसरे सदस्य ने अर्जुन से पुछा कि, “अर्जुन इस सब के बारे में तुम्हें क्या कहना है?”

अर्जुन-(गहरी साँस भरते हुए) हाऽ अब मैं क्या बोलूँ? इन्होंने ने तो पहले ही सब सच बता दिया है। अब सच्चाई को मैं कैसे झुठला सकता हूँ?

तिसरा सदस्य- तो क्या तुम मानते हो कि यह सब सच है?

अर्जुन- हाँ बिल्कुल मानता हूँ कि यह सच है... लेकिन सिर्फ आधा।

तिसरा सदस्य- तो आधा सच क्या है?

अर्जुन- यही कि हमने कोई गलती नहीं की हैं और आधा सच तो आपने इनके जुबानी सुन ही लिया है कि, “मैने देखा था अर्जुन को इस लडकी के साथ बात करते हुए मैने सुना था कि इस लडकी को अर्जुन के बाइक पर बैठकर चाय पीते दोनो एक दुसरे से प्यार करते हैं” वगैरह-वगैरह। सिर्फ यही एक मात्र मुझे सच लगा बाकि सब झुठ था। आखिर हमारे प्यार करने से लोगों पर बुरा असर कैसे पड सकता है? प्यार क्या इतना गिरा हुआ है? अगर इतना गिरा हुआ है तो क्यों राधाकृष्ण की माला जपते हो? क्यों उनके प्यार की गुणगान करते हो? क्या सिर्फ इसलिए क्योंकि वे भगवान् थे?

विरोधी- पर ये मत भुलो कि उन्हें भी एक दिन अपने प्यार को त्यागना पडा था क्योंकि उन्हें भी समाज की फिक्र थी।

अर्जुन- हाँ सही कहा। उन्हें समाज की फिक्र थी इसलिए तो उन्होंने अवतार लिया था। लेकिन इस वजह से उन्होंने राधा को नहीं छोडा था। उन्होंने राधा को इस लिए छोडा क्योंकि उन्हें अपना उद्देश्य पूरा करना था। कंस का वध करके लोगों को उसके अत्याचारों से मुक्त करना था।

पहला सदस्य- तो क्या तुम्हारे पास कोइ ऐसा दुसरा उद्देश्य नहीं है जिससे तुम इस लडकी से दूर रह सको?

अर्जुन- दुसरा उद्देश्य? था। गांव में रहकर अपने पिता की तरह लोगों का मदद करना, लोगों के खेती करने के लिए पानी का संचार करना, गांव में विकास लाना, बाजार और आस-पास में हो रहे गुंडागर्दी के परेशानी को दूर करना, लोगों को एक आजाद और निडर जिंदगी जीने का साहस देना। ये उद्देश्य था मेरा पर अब नहीं है क्योंकि मैं जानता हूँ कि जिन लोगों का सोच नहीं बदल सकता, उनका कभी विकास नहीं हो सकता। अब मेरा एक

ही उद्देश्य है सिर्फ रिया।

विरोधियों में से एक- तो क्या अब तुम हमारा विरोध करोगे?

अर्जुन- हाँ बिल्कुल। मैं तुम लोगों का विरोध करूंगा।

विरोधियों में से एक- सरपंच जी! देख लिया आपने? इसी से पता चलता है कि अर्जुन इस लड़की से प्यार करता है और उसके चलते ये हमसे भी विरोध करने को तैयार है।

अर्जुन- क्या सच में तुम्हें लगता है कि मैं इस लड़की से प्यार करता हूँ इसलिए तुमसे लड़ने के लिए तैयार हूँ?

विरोधियों में से एक- हाँ बिल्कुल और क्या वजह हो सकता है?

अर्जुन- लिजिए मिल गया जवाब। सरपंच जी, इन्हें लगता है कि मैं इस लड़की से प्यार करता हूँ इसलिए आप लोगों से लड़ने के लिए तैयार हूँ। तो मैंने उग्र ठाकुर से भी आप लोगों के लिए लड़ाई की थी इसका मतलब ये हुआ कि मैं तुम सब से भी प्यार करता हूँ और अगर मैं तुम सब से भी प्यार करता हूँ तो मेरे साथ तुम लोग भी दोषी हो और तुम्हें भी इस गांव से निकाला जाना चाहिए।

पहला सदस्य- ऐसे कैसे हो सकता है इस प्यार में और उस प्यार में बहोत फर्क है।

अर्जुन- क्या फर्क है आप मुझे बताइए? इन लोगों ने मुझे इस लड़की के साथ बातें करते देखा, घुमते देखा एक साथ देखा इसलिए ये लोग इसे प्यार समझ बैठे तो क्या मैं इन लोगों के साथ बातें नहीं करता था? क्या इन लोगों के साथ नहीं घुमता था? क्या इन लोगों के साथ नहीं रहता था? तो क्या मैं इसे प्यार नहीं कह सकता? तो ये साबित हुआ कि मैं तुम लोगों से भी प्यार करता था और तुम लोग भी दोषी हो।

विरोधियों में से एक- तुम हमसे प्यार करते थे हम तुमसे नहीं इसलिए दोषी सिर्फ तुम हो।

अर्जुन- क्यों जब बात खुद पर आइ तो पसीने छुट गये? सब के सब पीछे हट गये? चलो तो ठीक है। रिया से प्यार मैं करता था रिया मुझसे नहीं इसलिए मैं अपने आप को दोषी मानता हूँ रिया का इसमें कोई दोष नहीं।

रिया-(अर्जुन का हाथ पकड़ते हुए) अर्जुन, ये क्या कह रहे हो?

अर्जुन- मेरी बात सुनो रिया! यह वक्त सही नहीं है सच बताने का। अगर तुमने सच बता दिया तो ये लोग तुम्हें यहां से निकाल देंगे। तुम्हारी रिसर्च अधूरा रह जाएगा। अभी तुम्हें अपनी पढ़ाई पूरी करनी है अपना सपना पूरा करना है। मैं नहीं चाहता कि तुम अभी इन सब में फंसो। मेरे हां में हां मिला दो बचने का यही एक रास्ता है।

एक सदस्य- ये आपस में क्या बातें हो रही हैं? रिया, क्या अर्जुन सही कह रहा है तुम उससे प्यार नहीं करती?

अर्जुन ने ये बात कह कर रिया का दिल दुखा दिया। रिया अर्जुन को एक अजीब तरीके से देख रही थी क्योंकि उसके मन में एक बात चल रही थी जो वो अर्जुन को बताना चाहती थी।

दूसरा सदस्य- रिया, हम पुछ रहे हैं कि क्या अर्जुन सच कह रहा है? क्या अर्जुन ही तुमसे प्यार करता है तुम उससे प्यार नहीं करती?

रिया- (अपने आंसू पोछते हुए) यह शब्द भले ही आप लोगों के लिए और अर्जुन के लिए भी कोई मायने नहीं रखती हो लेकिन मेरे लिए ये जीने की वजह है। कइ लोगों को देख रही हूँ

मैं यहां पर जो प्यार इस तरह से निभा रहे हैं। आज जब उस इंसान को इनकी जरूरत है जो इनके लिए जी जान से लड़ा अपनी जान की कभी कोई परवाह नहीं की तब यह लोग पीछे हट रहे हैं। एक बार भी नहीं सोचा कि ऐसा करने से उस इंसान पर क्या बितेगा? बस कुछ लोगों ने बहकाया और ये बहक गये। पर मैं नहीं बहकुंगी और ना अर्जुन को अकेले छोड़ कर पीछे हटुंगी। अर्जुन जो कह रहा है वो झुठ है। सच ये है कि मैं भी अर्जुन से प्यार करती हूँ।

दुसरा सदस्य- अर्जुन, तुम जानते हो इस जवाब का क्या अंजाम हो सकता है?

अर्जुन- रिया प्लीज़ बात को समझो ये वक्त सही नहीं है। तुम्हारे सारे सपने टूट जाएंगे।

रिया- तुम रहोगे तो सभी सपने पूरे हो जाएंगे। अगर अपने एक सपने के लिए मैंने तुम्हें छोड़ दिया तो मुझसे बड़ा बुद्धू इस दुनिया में कोई नहीं होगा।

अर्जुन- लेकिन...

रिया- अब और जिद मत करो। मैं अपने फैसले से मुकरने वाली नहीं हूँ।

तिसरा सदस्य- पंचायत तुमलोगों का जवाब का इंतजार कर रहा है।

एक बार फिर अर्जुन ने रिया के तरफ देखकर उसके फैसले को बदलने की कोशिश की लेकिन उसे रिया के आंखों में फिर से वही जवाब नजर आया।

अर्जुन-(पंचायत से) हम दोनो एक दुसरे से प्यार करते हैं। इसमें कोई संकोच नहीं है।

पहला सदस्य- पंचायत तुम्हें एक और मौका देती है। तुम अपने बोल वापस ले सकते हो।

अर्जुन- आप भूल रहे हैं कि आप उसे अपना बोल वापस लेने के लिए कह रहे हैं जिनका बोल ही यही है “जान जाय पर वचन ना जाए।” मैं अपनी बात वापस दोहरा रहा हूँ, “मैं और रिया दोनो एक दूसरे से प्यार करते हैं”।

अर्जुन का जवाब सुनकर सिंह साहब ने गहरी साँस ली। उग्र ठाकुर खुशी से अपने जांघ थपथपाने लगा। सभी पंचायत सदस्य आपस में बातें करने लगे। फैसला जानने के लिए लोगों में सन्नाटा छा गया। रिया ने अर्जुन के बांह पकड़ लिए। पंचायत सदस्यों ने अपना फैसला कर लिया।

पहला सदस्य- हम सभी सदस्यों ने मिलकर इस गांव के हीत के लिए हमेशा की तरह सही और सटीक फैसला लिया है। इस गांव की लड़कियों पर इन सब का बुरा असर ना पड़े इसलिए गांव में प्यार का या कोई भी गैर बाहरी सम्बन्ध का कोई मिलाव नहीं हो सकता। अगर कोई ऐसा करता है तो उसे इस गांव से निकाल दिया जाता है। ऐसा नहीं है कि उन्हें अपनी गलती सुधारने का मौका नहीं दिया जाता है। उन्हें मौका दिया जाता है कि वे दोनो अपने सम्बन्ध तोड़ कर अपने सजा से बच सकते हैं। अर्जुन को भी ये मौका दिया गया था लेकिन उसने इस मौके को ठुकरा दिया। इसलिए हम पंचायतों का ये फैसला है कि रिया को आज ही ये गांव छोड़कर जाना होगा।

पंचायत का फैसला सुनकर उग्र ठाकुर के चेहरे से उसकी खुशी गायब हो गयी। जिसके लिए उसने इतना मेहनत किया क्या वो नहीं होगा? क्या अर्जुन इस गांव से नहीं जाएगा? अभी उग्र ठाकुर सही से उदास भी नहीं हुआ तब तक अर्जुन बोल पड़ा।

अर्जुन- मुझे मंजूर नहीं है।

तिसरा सदस्य-(भड़कते हुए) अर्जुन! हम तुमसे पुछ नहीं रहे हैं बल्कि पंचायत का फैसला

सुना रहे हैं।

अर्जुन- मैंने कहा मुझे मंजूर नहीं है। रिया के साथ मैं भी जाऊंगा।

पहला- अगर तुम्हें एक साथ होने दिया तो पंचायत का मतलब ही क्या हुआ? फिर हमारे इस फैसले से लोगों को क्या सिख मिलेगा?

अर्जुन- वो... तुम्हारी दिक्कत है। मुझे सिर्फ इतना पता है कि मुझे अपनी जिंदगी इसके साथ बितानी है और इसके लिए मुझे कोई नहीं रोक सकता।

दूसरा सदस्य- तो तुम अब हमसे बगावत करोगे?

अर्जुन- शायद इसी भाषा में तुम मेरी बात समझ पाओगे।

सिंह साहब- अर्जुन! तुम्हें पंचायत का मान रखना ही होगा।

अर्जुन- नहीं पिताजी। अब मैं स्वार्थी हो गया हूँ। अगर किसी को मेरी परवाह नहीं तो मुझे भी किसी की परवाह नहीं।

दूसरा सदस्य-(अपने पहलवानों से) बबन, भुजा, बबुआ इसे पेड से बांध दो और उस लडकी को गांव से बाहर कर आओ।

अर्जुन- अगर किसी के मन में ऐसा करने का ख्याल भी आया तो मैं उसे इसी पेड से लटकाकर उसकी चमड़ी खींच लूंगा।

बबन, भुजा और बबुआ तीनों में से कोई आगे नहीं आया। वो जानते थे कि वो उस स्तर पर नहीं हैं कि अर्जुन को हाथ भी लगा सकें।

तिसरा सदस्य- अर्जुन! तुमने फैसले को मानने से इनकार करके सिर्फ पंचायत का ही अपमान नहीं बल्कि अपने पिताजी के सालों की बनायी इज्जत को मिट्टी में मिला दिया।

अर्जुन- यहां पर सिर्फ ये मेरे सरपंच हैं और मुझे इनके फैसले को मानने से इंकार करने में कोई दिक्कत नहीं है। मेरे पिताजी मेरे घर पर मिलेंगे जो आज हमें अपने हाथों से खुशी-खुशी विदा करेंगे। जाने से पहले मैं आप लोगों से एक बात कहना चाहता हूँ। इस गांव की जो रिती है वो स्वयं किसी भगवान् ने नहीं बल्कि तुम लोगों ने ही बनाया है। मैं तो जा रहा हूँ लेकिन देख लेना एक दिन तुम लोग अपने ही बनाये हुए खड्डे में गीर जाओगे। फिर कोई नहीं रहेगा यहां तुम्हें बचाने वाला। तुम्हारे फिर से वही बूरे दिन शुरू होंगे। बल्कि इस बार और भी बदतर होगा।

सब उसकी बातों को सुनकर रह गए। किसी के पास भी इस बात का कोई जवाब नहीं था क्योंकि सबको पता था कि अर्जुन ने ही उग्र ठाकुर के गुंडइ को खत्म किया था और अब ये यहाँ से दूर जा रहा है तो इनका ख्याल कौन रखेगा?

सिंह साहब के घर यह खबर पहुंच चुकी थी। अर्जुन कु माँ पर इस बात का कोई बुरा असर नहीं पड़ा। वो जस के तस ही थीं। ना कोई खुशी थी और ना कोई दुख क्योंकि वो जानतीं थीं कि एक ना एक दिन ऐसा होने वाला है। थोड़ी सी खुशी जरूर थी कि अर्जुन और रिया अलग नहीं हो पाए। सिंह साहब घर पहुंचे। अर्जुन की माँ अर्जुन के लिए सामान भर रही थीं। सिंह साहब ये सोच रहे थे कि इन्हें कैसे बताऊँ? बताने के बाद क्या ये अपने आप को सम्भाल लेंगी? अगर मैं नहीं बताऊंगा तो भी इन्हें पता तो चल ही जाएगा इससे अच्छा मैं ही बता देता हूँ।

बलवंत सिंह- सुनिए।

अर्जुन की माँ ने उन्हें सुना लेकिन उन्हें नजर अंदाज कर दिया।

बलवंत सिंह- पद्मिनी जी।

पद्मिनी जी रुक गयीं और कहीं आ गए?

बलवंत सिंह- पद्मिनी जी वो पंचायत...

पद्मिनी जी- रहने दीजिए मुझे सब पता है। हमेशा की तरह आज भी आपके पंचायत ने वही फैसला किया होगा।

बलवंत सिंह- आप तो ऐसे कह रही हैं जैसे इससे आपको कोई तकलीफ नहीं है।

पद्मिनी जी- कैसे होगी तकलीफ आज पहली बार थोड़ी किसी को गांव से निकालते हुए देख रही हूँ? पहले भी कई लोगों के साथ ऐसा हो चुका है। ये सब छोड़िये और ये सब सामान अर्जुन के साथ भेजवा दीजिए इसमें मैंने बेसन के लड्डू, चकली और आचार भी बांध दिए हैं।

बलवंत सिंह- जी ये तो मैं रखवा दूंगा लेकिन पहले आप बाहर चलिए। दोनों को विदा करना है।

सिंह साहब और अर्जुन की माँ अर्जुन को अलविदा कहने के लिए बाहर आए। सिंह साहब ने वो सारे सामान अर्जुन को दे दिए।

सिंह साहब- ये ले बेटे तेरी मां ने तेरे लिए तेरे मन पसंद लड्डू और आचार बंधवा दीए हैं।

अर्जुन- इनकी क्या जरूरत थी माँ? थोड़ी ना मैं आप लोगों से हमेशा के लिए दूर जा रहा हूँ?

सिंह साहब ने अर्जुन को गले लगा लिया।

सिंह साहब- “मुझे माफ कर देना बेटे मैं कुछ भी नहीं कर सका”।

अर्जुन- ऐसा मत कहिए पिताजी आपने अपना फर्ज निभाया और यही मेरे लिए सबसे बड़ी बात है।

सिंह साहब- मुंशी जी से कहकर शहर में बंदोबस्त करवा दिया हूँ। जाकर एक नयी जिंदगी शुरू करो। मैं और तुम्हारी मां तुमसे मिलने आते रहेंगे।

अर्जुन- पिछली बार भी आपने कहा था पर नहीं आया। मुझे ही आना पडा था। इस बार मैं चाह कर भी नहीं आ सकता इसलिए अब आप लोगों को ही आना होगा और वैसे भी ये लड्डू और आचार कुछ ही दिन में खत्म हो जाएंगे फिर कौन बनाएगा?

अर्जुन की माँ- बहू बनाएगी और कौन बनाएगा?

अर्जुन- नहीं मां आपके हाथ की तो बात ही कुछ अलग है। आपको आना ही होगा।

सिंह साहब- जरूर आएंगे बेटे। रणधीर, इन्हें स्टे
शन छोड़ दो।

अर्जुन- नहीं चाचा रहने दीजिए मैं चला जाऊंगा। आपने रहने का बंदोबस्त कर दिया यही बहोत बड़ी बात है।

रणधीर चाचा- ऐसा क्यों कह रहा हो? क्या हम तुम्हारे लिए इतना भी नहीं कर सकते?

अर्जुन- बात वो नहीं है चाचाजी। अब मुझे अपने ही दम पर जिना होगा इसलिए अभी से आदत डाल रहा हूँ।

अब इनके जाने का समय आ गया था। इन्होंने आखिरी विदाई ली और फिर वहां

से स्टेशन को निकल गए। सच में आज का दिन उग्र ठाकुर के जिंदगी का सबसे अनोखा दिन था। अर्जुन के जाने की खुशी में उग्र ठाकुर के घर आज जश्न का माहौल था। सब लोग शराब पीकर नाच गाना गाकर अपने आजादी का जश्न मना रहे थे लेकिन उग्र ठाकुर चुपचाप बैठा था। गुस्से से अपने आदमियों को अजीबोगरीब हरकत करते हुए देख रहा था। तभी शराब के नशे में नाच रहा खबरी का नजर उग्र ठाकुर पर पड़ा। वो झुमते-झुमते उग्र ठाकुर के पास आया।

खबरी- अरे ठाकुर साहब, सब कोइ शराब में डुबा है और आप सोच में ? ये लिजिए दो पैग मार लिजिए और आप भी मस्त हो जाइए ये लिजिये, अरे लिजिये ना!

उग्र ठाकुर उठा और उसके कान के निचे एक जोर का थप्पड़ लगा दिया। थप्पड़ का आवाज़ सुनते ही सभी जगह पर ही खड़े हो गए। जहां अब तक इतना शोर हो रहा था वहीं थोड़े ही देर में शांति छा गयी। खबरी का सारा नशा उतर गया। गाल पकड़े हुए खड़ा था वो।

उग्र ठाकुर- तुम लोग यहां जश्न मना रहे हो और मैं यहां बैठे-बैठे अर्जुन का दिया हुआ घाव गीन रहा हूँ। गांव से निकाल देने के बाद भी उसके चेहरे पर मुझे जरा सा भी संकोच नजर नहीं आया। उसे किसी बात का दुःख नहीं हुआ। अब वो जा रहा है फिर लौट के नहीं आएगा। अगर वो चला गया तो मैं उसे उसकी गलती का एहसास कैसे दिलाऊंगा? उसके चले जाने से ये बात खत्म नहीं होगी। जब तक मैं उसे रोता हुआ नहीं देखूंगा मुझे चैन नहीं मिलेगा। उसे मारना होगा।

खबरी- लेकिन वो तो गांव से कब का निकल चुका होगा? वैसे भी हम उसके सामने एक मिनट भी नहीं टिक सकते उसे जान से मारना तो दूर की बात है।

उग्र ठाकुर- मैं जानता हूँ उसे कैसे मारना है।

सभी लोग उग्र ठाकुर के साथ निकल गए। रिया ने छत से उन्हें जाते हुए देख लिया। उसे समझ में नहीं आया कि ये लोग कहाँ जा रहे हैं? वो दौड़ते हुए निचे आइ और एक आदमी से पुछने लगी कि वो लोग कहा गये?

वो लोग अर्जुन के लिए गए हैं

।उस आदमी ने जवाब दिया।

रिया एक पल गवाए बिना उनके पीछे भागने लगी। रिया बिना किसी साधन के गाड़ी के पीछे भागती रही। उस तरफ अर्जुन और रिया टांगे से होकर स्टेशन निकल चुके थे। दिन ढल रहा था और जल्द ही अंधेरा भी होने वाला था।

अर्जुन-(टांगे वाले से) भईया थोडा जल्दी चलो नहीं तो रात हो गयी तो कुछ दिखाइ नहीं देगा।”

टांगे वाला- जी भईया।

रिया अर्जुन के सीने से लिपट कर बैठी हुई थी। मन में एक नयी जिंदगी शुरू करने का उमंग था और गांव छोडने का दुःख भी। दोनो के दिल में बहोत सारे सपने थे। पर जैसा की हमेशा होता है, सपना कभी पूरा नहीं होता है। जैसा इन्होने सोचा था वैसा कुछ भी नहीं हुआ।

अर्जुन और रिया गांव से लगभग दूर आ चुके थे। बस आखिरी सिवान पार करना बाकी था। तभी एक कुल्हाड़ी हवे में घुमते हुए आया और टांगे के एक चक्के पर लग गया। चक्का टुटकर बाहर निकल गया और टांगा एक तरफ पलट गया। अर्जुन और रिया टांगे से निचे गिर गए।

अर्जुन जब रिया को उठाने के लिए खड़े होने की कोशिश की तो पता चला कि वो अपने दाएं हाथ से जोर नहीं लगा पा रहा था। उसका हाथ टूट चुका था। रिया जमीन पर ही लेटी हुई थी, ना उठ पा रही थी और ना उठने की कोशिश कर रही थी। रिया को ऐसे देखकर अर्जुन दौड़ते हुए उसके पास गया।

अर्जुन- रिया! रिया उठो। रिया।

रिया की आंखें ठीक तरह से नहीं खुल पा रही थी। अर्जुन उसे फिर से झकझोर कर उठाने लगा। अर्जुन के झकझोरने से रिया पूरी तरह से होश में आ गई। तभी तलवारों के खनखन करके बजने की आवाज़ अर्जुन को सुनाई देने लगी। जब वो पीछे मुड़ा तो देखा उसके सामने लगभग सैकड़ों लोग थे जिनके हाथ में चमचमाता हुआ तलवार था। रिया डरकर अर्जुन के पीछे छुप गई।

अर्जुन- मुझपर पीछे से वार क्यों किया?

इतने में उग्र ठाकुर सबके बीच में से निकल कर सामने आया।

उग्र ठाकुर- क्योंकि तुझे सामने से नहीं मारा जा सकता था।

अर्जुन- तो तुझे लगता है कि तू अभी भी मुझे मार सकता है?

उग्र ठाकुर- एक हाथ तो टूट ही गया, अब क्या एक हाथ से मारेगा इतने लोगों को?

अर्जुन- लगता है तुने मुझे अब तक ठीक से पहचाना नहीं? आज मैं तुझे अपनी पहचान अच्छे से करा दूंगा। तूने आज मुझे मेरा वो रूप दिखाने पर मजबूर कर दिया है जिसे मैं भी देखना पसंद नहीं करता हूँ।

उग्र ठाकुर - मैं जानता था तु कुछ ऐसा ही कहेगा। मुझे तेरी यही चीज पसंद नहीं आती। हर वक्त मुझे कचोटते रहती है...

उग्र ठाकुर ने अर्जुन को अपनी बातों में उलझाए रखा। ये इसके चाल का ही एक हिस्सा था क्योंकि वो जानता था कि सामने से ये इतने सारे आदमी भी अर्जुन का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। बात करते-करते उसने हाथ पीछे करके अपने एक आदमी को इशारा किया। वही आदमी जो खंजर चलाने में माहिर था। जिसे अर्जुन ने शिव जलाभिषेक के दिन त्रिशूल से मारा था। इशारा मिलते ही उस खंजर बाज़ ने छुपकर एक खंजर अर्जुन के तरफ चला दिया। खंजर नाचते हुए आइ और रिया को जा लगी। खंजर लगते ही रिया ने अर्जुन के कंधे पर से अपने हाथ हटा लिए और नीचे बैठ गई। जब रिया ने अर्जुन के कंधे पर से अपने हाथ हटाए तब जाकर अर्जुन को शक सा महसूस हुआ। अर्जुन जैसे ही पीछे रिया के तरफ मुड़ा तो एक और खंजर नाचते हुए आया और अर्जुन के कमर में जा घुसा। अर्जुन भी वहीं पर बैठ गया। रिया और अर्जुन दोनों आमने-सामने बैठे थे। रिया समझ गयी कि अर्जुन को भी खंजर लग चुका है। अर्जुन ने रिया के पेट से खंजर को निकाल कर उसे अपने गोद में सुला लिया।

रिया-(धीमी आवाज में) अर्जुन! मुझे और जीना है। मुझे तुम्हारे साथ रहना है।

अर्जुन- हाँ रिया, तुम जियोगी...मेरे साथ रहोगी... तुम्हें कुछ नहीं होगा।

रिया- मुझे ऐसा नहीं लगता, सब धुंधला सा नजर आ रहा है।

अर्जुन का एक आंसू उसके गाल से होकर रिया पर जा गिरा।

रिया- तुम रो क्यों रहे हो? हाऽ कितने सपने देखे थे? सब खुद से दूर जाते दिखाई दे रहे हैं।

अर्जुन- लेकिन तुम्हारा सपना तो मैं हूँ ना? मैं तो यहीं पे हूँ।

रिया- पर मैं तो जा रही हूँ।

अर्जुन- तुम कहीं नहीं जा रही हो। तुम्हें यहीं रहना है मेरे पास।

रिया- हम फिर से मिलेंगे।

पीछे से एक आदमी दौड़ते हुए आ रहा था। अर्जुन ने बैठे-बैठे ही उसका गर्दन पकड़ कर ऐंठ दिया और उठकर उनसे लड़ने जा रहा था लेकिन रिया ने उसके हाथ पकड़ लिए।

रिया- मुझे छोड़कर मत जाओ, इस आखिरी पल में यहीं रहो मेरे पास।

अर्जुन उसके बालों में हाथ फेरने लगा।

रिया- बहोत इच्छा थी तुम्हारे गले लगने की। मेरी ये इच्छा पूरी कर दो।

अर्जुन ने उसे अपने लगे से लगा लिया। वो रिया का धड़कन महसूस कर सकता था। दिल की धड़कन धीमे-धीमे कम हो रही थी। रिया अब कुछ नहीं कह रही थी ना उसकी शरीर में कोई हरकत हो रहा था। अर्जुन उसे जगाने की बहोत कोशिश कर रहा था लेकिन रिया अब जिद पर अड़ चुकी थी कि ना वो कभी आंख खोलेगी और ना कभी बोलेगी।

अर्जुन इस लम्हे पर भरोसा नहीं कर पा रहा था। यकीन नहीं हो रहा था कि रिया अब इस दुनिया में नहीं है। वो गला फाड़कर रोने लगा। उसकी आवाज से पहाड़ों में, जंगलों में, पक्षियों में नदियों में गूंजने लगी, मौसम बदलने लगे, बिजली कड़कने लगी। मानो जैसे ये एक अनहोनी थी कि रिया चली गयी शायद इसलिए कुदरत भी आज नाराज़ हो गया था। पर अब अर्जुन खामोश था। उसे किसी भी चीज़ पर गुस्सा नहीं आ रहा था। उसे सिर्फ यादें आ रही थीं रिया की। वो बातें जो रिया ने अर्जुन से बगीचे में कही थीं।

रिया- अर्जुन! एक बात कहूँ? तुम ना इतना गुस्सा, मार झगडा मत किया करो। क्योंकि गुस्सा करने से मार झगडा करने से सिर्फ मुसीबतें बढ़ती हैं उनका हल नहीं होता।

अर्जुन- अच्छा है! यही तो मैं चाहता हूँ कि मुसीबतें बढे और मुझे मरने का मौका मिले।

रिया- हमेशा उल्टा ही जवाब देते हो? और कभी यह मुसीबत मुझपर आ गयी और मुझे कुछ हो गया तो?

अर्जुन- इसलिए तो मैं कह रहा हूँ कि प्यार का डंका मत बजाया फिरो तुम भी इसकी आदत डाल लो!

रिया- नहीं! ना मैं लड़ना सीखुंगी और ना ही तुम्हें लड़ने दूंगी, हम प्यार करते हैं हम तो प्यार से ही सबको हरा सकते हैं फिर लड़ने की जरूरत ही क्या?

अर्जुन- प्यार से कोई नहीं हारता “रिया” अगर किसी को हराना है तो लड़ना पड़ेगा और देखना एक दिन खुद तुम मुझसे जरूर कहोगी कि तुम सही थे। वैसे भी ये लड़ाई मैं शौक से नहीं लड़ता बल्कि लोगों के भलाई और हक के लिए लड़ता हूँ। अगर इसके वजह से मुझे कुछ हो भी जाता है तो भी मुझे कोई गम नहीं।

रिया- मान लो कि तुम्हें कुछ नहीं हुआ बल्कि मुझे कुछ हो गया तो?

अर्जुन-ऐसा क्यों कह रही हो? हम एक ही तो हैं! है न?

रिया- हाँ हम एक ही हैं लेकिन मेरे कहने का मतलब वो नहीं था। अर्जुन समझने की कोशिश करो अगर इस वजह से मुझे हम में से किसी एक को भी या फिर मुझे कुछ हो गया तो? क्या तब हम एक रह जाएंगे?

अर्जुन- नहीं, नहीं रह पाएंगे पर मुझे इतना पता है कि मेरी वजह से या मेरी दुश्मनी की वजह से कुछ हुआ तो मैं एक छण भी बिना वक्त गंवाए खुद को मौत के हवाले कर दूंगा।

उसे रिया से किया हुआ अपना वादा याद आया। शायद वो सही कहती थी कि एक दिन इस दुश्मनी का असर हमारे प्यार पर पड़ेगा। रिया अब इस दुनिया में नहीं है। अर्जुन लडके भी क्या हासिल कर सकता है?

अर्जुन- ये वक्त हमारा नहीं था उग्र ठाकुर इसलिए रिया चली गयी पर याद रखना एक दिन ये वक्त फिर लौटकर आएगा। तब मैं भी रहूंगा, तु भी रहेगा और रिया भी रहेगी। तब मैं तुझे तेरे किए गलती का एहसास दिलाऊंगा।

उसने आगे कुछ नहीं सोचा और अपने प्यार से किया हुआ वादा पूरा करते हुए रिया को गले से लगाकर वो निचे दरिया में कूद गया।

उसके कुदते ही उग्र ठाकुर उनकी तरफ दौड़ा, ठीक उसी वक्त रिया भी वहां पहुंच गई और उन्हें गिरते हुए देख ली। उसने उन्हें रोकने की कोशिश की लेकिन वे उंचाई छोड़ चुके थे। वो जोर से चिल्लाकर वहीं बेहोश हो गयी। उग्र ठाकुर अपने घुटनों पर बैठ गया। जीत के भी आज वो हार चुका था क्योंकि वो अर्जुन को नहीं मार सका, बल्कि अर्जुन ने खुद अपने आप मार दिया था। अर्जुन और रिया दोनों कुछ देर तक हवे से निचे गिरते रहे। उनके गिरते ही एक जोर का आवाज आया। दरिया के आगोश में आते ही अर्जुन वापस वर्तमान में लौट आया। लोग जस के तस खड़े थे। अर्जुन भी उसी जगह खड़ा था जहाँ से वो रिया को लेकर दरिया में कूद गया था। उसकी नजर केवल उसी दरिया को निहार रही थी। पता नहीं वो असल में दरिया को देख रहा था या उसमें रिया को? आज उसे पता चला कि वो जिस अतीत के बारे में जानने के लिए इतना उत्सुक था वो एक अधूरा सा चित्र है जिसका कलाकार सालों पहले खो गया है। वो चित्र अर्जुन है और कलाकार रिया। उसके मन में उसे फिर से हासिल करने की कोई आस नहीं बची थी क्योंकि रिया ने अर्जुन के बांहों में ही अपना दम तोड़ा था।

अर्जुन- तुमने मुझे ढूँढा कैसे? तुम्हें कैसे पता चला कि मैं वहां पर हूँ?

रिया- उस दिन को गुजरे लगभग छह साल हो गये थे। दादी शहर से गांव आई थी। एक दिन मैं अकेले में तुम्हारे साथ ली हुई तस्वीर देख रही थी। दादी ने मुझे उस तस्वीर के साथ देख लिया।

दादी- यह तस्वीर किसकी है?

रिया- दादी ये अर्जुन है।

दादी- अर्जुन?

रिया- जी।

दादी- मेरी नजर अभी भी सही है। खराब नहीं हुई कि तुम मुझसे झुठ कह रही हो।

रिया- क्या मतलब दादी?

दादी- ये अर्जुन नहीं, ये आकाश है।

रिया- नहीं दादी ये अर्जुन है आपको पहचानने में कोई भूल हो रही है।

दादी- मैं भले ही बुढ़ी हो गयी हूँ लेकिन आज भी मेरी आंखे कभी धोखा नहीं खा सकतीं। ये आकाश है मेरे बगल में ही रहता है। यहां तक की ये मेरे घर भी आता-जाता रहता है।

मुझे दादी के बातों पर यकीन नहीं हुआ इसलिए मैं उनके साथ यहां आ गई। जब मैंने तुम्हें देखा तो मुझे ऐसा लगा कि तुम सच में अर्जुन नहीं हो बस उसके जैसे दिखते हो। इस बात को जानते हुए भी कि तुम अर्जुन नहीं हो मैं फिर से तुम्हारे करीब आने लगी, तुम्हारे साथ घुमने लगी, नाचने लगी गाने लगी क्योंकि मुझे लगा कि मैं उसी अर्जुन के साथ हूँ जिसे कभी मैं प्यार करती थी। जब तुमने बताया कि तुम छह साल पहले कौन थे, कहाँ से आए थे तुम्हें कुछ नहीं पता, तब जाकर मुझे यकीन हुआ कि तुम ही अर्जुन हो और तुम्हारी याददाश्त खो गयी है। मैं कुछ पल के लिए डर गयी थी कि कहीं तुम मुझे पहचान ना लो नहीं तो यह जो लम्हा मैं तुम्हारे साथ जी रही हूँ वो मैं खो दूंगी। न जाने उस दिन तुम्हारे साथ क्या हुआ था तुम्हें सपने में मैं दिखाई दी। उस दिन तुम वही बातें कर रहे थे जो हमने पहले भी की थी जब तुम अर्जुन थे। मैं समझ गयी थी कि तुम्हारी यादें लौट रही हैं इसलिए मैं अचानक वहां से चली गयी ताकि तुम मेरे लिए यहाँ तक आओ और अपने अतीत को जान सको।

अर्जुन- और... और... रिया कहाँ...?

रिया- पता नहीं, कुछ पता नहीं चला।

अर्जुन रिया के तरफ से पिछे मुड़ गया। दरिया के पिछे के खुले आसमानों को देखकर उसके बीते जिंदगी के हर पहलू को फिर से दोहराने लगा। बहुत दुखी था, तन्हा था। जिंदगी भर प्यार के लिए मैराथॉन करने के बाद भी आज इसके पास कुछ नहीं था। बस खाली हाथ फैलाए खड़ा था।

अर्जुन- ये दुनिया मेरे लिए बनी ही नहीं थी। इस बात का पता आज चला। सबके लिए मैंने जान न्यौछावर कर दिया लेकिन किसी को मेरी एक जरूरत पसंद नहीं आइ। एक हमसफर मिली थी जिसके साथ जिंदगी भर सुकून से रहना चाहता था लेकिन उसे भी तुम लोगों ने मुझसे छिन लिया। पता है कभी उग्र ठाकुर मेरा दुश्मन हुआ करता था। उस वक्त मेरे दिल में उसके लिए रत्ती भर का भी डर नहीं था। पर आज मैं डर गया हूँ। पता है किस से? तुम लोगों से। आज तुम लोग ही मेरे सबसे बड़े दुश्मन हो। ना तुम्हारी रीत होती, ना हमारा निष्कासन होता, ना इसका कोई फायदा उठाता और ना मेरी रिया मुझसे दूर होती। मुझे उसे देखने का दिल कर रहा है। मैं जानता हूँ प्यार करने वालों के लिए ये मुश्किल नहीं होता है क्योंकि वे मर के भी पास होते हैं। ना जाने कितने सालों से रिया मेरा इंतज़ार कर रही है, मुझे उसके पास जाना होगा तभी मेरा वचन अमर हो पाएगा।

उसने अपने आंख बंद करके हाथ फैला दिए। रिया चिल्ला पड़ी “नहीं”। सभी गांव वाले अपने जगह से हील गये। इन्हीं आवाजों के साथ अर्जुन को एक और अलग सी आवाज सुनाई दी।

अर्जुन- सौरव?

जब पिछे घुम कर देखा तो सौरव और उर्वशी दोनों सामने खड़े थे।

अर्जुन- सौरव? उर्वशी? तुम दोनों यहां?

सौरव- हां भाइ सोचा कि चलकर आपका अंतिम घड़ी देख लूँ क्या पता यहां से कुदने के बाद आप इस बार जिंदा बचेंगे कि नहीं?

अर्जुन- तो तु बिल्कुल ठीक समय पर आया है मेरे भाई।

उर्वशी- आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? वापस आ जाइए।

अर्जुन- क्या करूंगा वापस आकर? मेरे लिए जिने की कोई वजह नहीं बची है। उससे एक वादा किया था जो आज पूरा करने जा रहा हूँ।

सौरव- आपने तो मम्मी और पापा से भी वादा किया था कि आप वापस लौटकर आएंगे वो भी एक दुल्हन के साथ? आप ये वादा कैसे निभाएंगे?

अर्जुन- कह देना उनसे कि मैं जिस दुल्हन की बात कर रहा था वो दुल्हन ऐसी जगह चली गयी है जहाँ से लौटना नामुमकिन है। मैं उसे वापस नहीं ला सकता था, अंकल आंटी से किया वादा पूरा नहीं कर सकता था इसलिए मैं भी उसी दुल्हन के पास चला गया।

इतना कहकर अर्जुन पीछे घुम गया। तभी सौरव ने जवाब दिया, “किसने कहा वहाँ से लौटना नामुमकिन है? प्यार सच्चा हो तो मौत भी किसी को अलग नहीं कर सकती भाई।

सौरव के इस बात से अर्जुन का दिल जोर से धड़कने लगा। तभी एक हवा छुकर निकल गयी जिसमें एक जानी-पहचानी सी खुशबू थी। अर्जुन पीछे मुड़कर सौरव के तरफ देखने लगा। अर्जुन को सौरव के चेहरे पर एक मुस्कान नजर आई जिसने अर्जुन के धड़कते दिल को और तेज कर दिया। अर्जुन भीड़ की ओर बारीकी से देखने लगा। तभी उसे उस भीड़ में एक हलचल दिखाई देने लगी। अचानक उस भीड़ में खड़े लोग किसी को आगे आने के लिए रास्ता देने लगे। जैसे ही वो शख्स भीड़ से आगे आया अर्जुन की आंखें एकाएक भर गयीं और उसने घुटने टेक दिया। उसने अपने नजर निचे झुका लिए और रोने लगा। गांव वाले इस अद्भुत नजारे को देखकर भौचक्रे रह गए। कुदरत के इस फैसले पर लोगों को विश्वास नहीं हो रहा था। सब आपस में बात करने लगे और कहने लगे, “ये तो रिया है”।

अर्जुन वैसे ही अपनी नजर झुकाए बैठा था। रिया उसके पास आई। जब अर्जुन ने उसकी तरफ अभी भी नहीं देखा तो वो भी बैठ गयी और कहने लगी, “अब तक नहीं थी तो देखने के लिए तरस रहे थे, रो रहे थे और अब सामने हूँ तो नजरें चुरा रहे हो?”

अर्जुन- (आंख बंद रखते हुए) समझ में नहीं आ रहा है कि तुम आज भी सिर्फ याद हो या हकीकत?

रिया - (चेहरे पर हाथ फेरते हुए) अपनी आंखे खोलकर एक बार देखो तो, मैं तुम्हारी याद भी हूँ और हकीकत भी।

अर्जुन ने झट से अपने आंख खोली और उसके गले लग गया। गले लगते उसे जो सुकून मिला उस सुकून ने पल भर में अर्जुन के सारे दर्द को उसके दिल और दिमाग से बाहर कर दिया। अन्ततः दो आत्मा फिर से मिल गयीं। अर्जुन समझ नहीं पाया कि ये कैसे हुआ? सौरव ने रिया को कैसे ढुंढा?

अर्जुन- (सौरव से) ये सब तुमने कैसे किया?

सौरव- वैसे ही जैसे हमेशा करता हूँ। अनुमान लगाके, थोड़ा अलग सोचके, जासूसी करके वगैरा-वगैरा।

अर्जुन- लेकिन फिर भी तुम्हें यह कैसे पता चला कि रिया कहां होगी और तुमने तो रिया के बारे में सुना तक भी नहीं था तो कैसे किया?

सौरव- कहानी बाद में सुनाउंगा भाइ पहले ये बताइए कि अब करना क्या है?

अर्जुन-(गांव वालों की तरफ देखकर) वही करना है जो मैंने पहले किया था। सिर्फ अपने बारे में सोचना लोगों के बारे में नहीं। पंचायत करके ये लोग अपनी दिक्कतें खुद ही सुलझा लेंगे, यहाँ किसी अर्जुन की जरूरत नहीं है।

इतना कहते हुए अर्जुन उग्र ठाकुर के तरफ बढ़ा।

अर्जुन- अब से ये सब तुम्हारा। तुम्हें यही चाहिए था ना तो लो मिल गया। मुझे भी जो चाहिए था वो मुझे मिल गया। अब मैं जा रहा हूँ। उम्मीद है कि अब पहले जैसा नहीं होगा।

अर्जुन वहाँ से जाने लगा उस जगह जहाँ उसने अपनी एक नयी पहचान बनाई है। उसे लगा था कि उसके माता-पिता इस बात से राजी नहीं होंगे इसलिए, वो इसी गांव में रहकर ऐसे लोगों की मदद करेंगे जो खुद कभी किसी की परवाह नहीं करते इसलिए वो उन लोगों से साथ में चलने के लिए नहीं पुछने वाला था। जब वो उस भीड़ से बाहर आया तो उसके माता-पिता और चाचा-चाची सभी सामने खड़े थे।

ठाकुर साहब- तुम दोनों को फिर एक साथ देखकर

ठाकुर साहब- बेटे तु हमें यहाँ अकेले छोड़कर फिर से कहाँ जा रहा है?

अर्जुन- वहीं जहाँ पहले जा रहा था।

ठाकुर साहब- और हम? हम यहां तेरे बिना अकेले कैसे रहेंगे? हमें भी अपने साथ ले चल बेटे, हमें यहां नहीं रहना है।

अर्जुन- पर आप तो मुखिया...

ठाकुर साहब- मुखिया भी बदलते हैं बेटे।

अर्जुन और उसका पूरा परिवार गांव छोड़कर शहर को निकल गए। बीच में अर्जुन को मुंशी जी का खयाल आया कि वे कहीं दिखे क्यों नहीं? कहां हैं? उसने ठाकुर साहब से पूछा कि, "पिताजी? मुंशी अंकल कहां हैं?"

ठाकुर साहब- अरे अच्छा हुआ तुमने याद दिला दिया!

ठाकुर साहब ने रणधीर चाचा से कहकर मुंशी जी को फोन लगवाया।

मुंशी जी- अरे ठाकुर साहब नमस्ते।

ठाकुर साहब- नमस्ते नमस्ते। अच्छा ये बताइए हमारे काम का क्या हुआ?

मुंशी जी- जी काम तो लगभग पूरा हो गया है। बस थोड़ा सा मरम्मत का काम बाकी था वही हो रहा है।

ठाकुर साहब- घर ठीक-ठाक तो है ना?

मुंशी जी- ठाकुर साहब आपने जैसा कहा था ठीक वैसा ही घर खरीदा है। आप देखेंगे तो बहोत खुश होंगे।

ठाकुर साहब- ठीक है, ठीक है। चलिए बाद में फोन करता हूँ।

मुंशी जी- जी ठाकुर साहब।

अर्जुन- वो कहाँ हैं?

ठाकुर साहब- मुंबई।

सभी लोग अपनी नई शुरुआत को लेकर काफी उत्साहित थे क्योंकि जिंदगी में पहली बार पूरा परिवार एक साथ किसी नए जगह पर जा रहा था। अर्जुन अकेले रेल के दरवाजे पर खड़ा था। बाहर से गुजरने वाले सभी चीजों को गौर से देख रहा था या मानो किसी खयाल

में डुबा हुआ था। तभी वहां सौरव आ गया। उसने अर्जुन को किसी ख्याल में खोया हुआ देखा।

सौरव- क्या सोच रहे हो भाई?

अर्जुन-(पीछे घूमकर) हमम? नहीं कुछ नहीं।

सौरव- ऐसा तो हो नहीं सकता कि आप यहाँ अकेले खड़े हों और कुछ सोच नहीं रहे हों?

अर्जुन- तु तो बहुत बड़ा सायकोलोजिस्ट है ना? तो खुद ही पता कर ले कि मैं क्या सोच रहा हूँ?

सौरव ठठाकर हंसा फिर कहा, “इसमें कौन सी बड़ी बात है? आप यही सोच रहे थे ना कि मैंने गुंजा को कैसे ढुंढा?”

अर्जुन- हाँ हाँ तुम्हें तो सब पता है।

सौरव- मुझे इस बारे में कुछ भी नहीं पता था। उस दिन जब मैं आपके घर आपका सामान लाने गया था तभी मुझे रिया का चिट्ठी मिला था। जब मैंने चिट्ठी पढ़ा तभी मुझे शक हुआ कि इसमें कुछ गड़बड़ है। वहीं से मैंने इसकी छानबीन शुरू कर दी थी। फिर जब हम दूर पर गये थे वहाँ मुझे उर्वशी से पता चला कि उसे नदी में बहते हुए कुछ कागज मिले थे। जब मैंने वो पढ़ा तो उसमें आप के बारे में लिखा हुआ था और जिसने लिखा था उसका नाम रिया था। मैंने सोचा कि अगर रिया यहाँ है तो कागज कौन बहा रहा है? अगर रिया ने ही ये कागज बहाया है तो वो आपसे मिलने के बाद सब सच्चाई क्यों नहीं बताइ? यहाँ पर मुझे थोड़ा सा शक हुआ। बस मैंने और उर्वशी ने तभी सोच लिया कि इस पहेली को सुलझाना है। मैं और उर्वशी उस नदी के आस-पास के सभी गाँवों में जाकर पता लगाने लगे। पूरे दो दिन निकल गये लेकिन ऐसा कोई सुराग नहीं मिला जिससे हम कागज बहाने वाले का पता लगा सकें। हम रुके नहीं आगे बढ़ते गए और जाकर ऐसे मोड़ पर रुके जहाँ पर हमारा सुध-बुध काम करना बंद कर दिया। हम ऐसे जगह पहुँच गये जहाँ पर दो नदियाँ आकर मिलती हैं। अब कागज किस नदी से बहकर आया था हम कैसे पता करते?

अभी मेरा हौसला बरकरार था लेकिन उर्वशी हार के वहीं बैठ गयी।

उर्वशी- अब मैं आगे नहीं जा सकती यार।

मैं- अरे क्या हुआ तुम्हारा दिमाग तो बहुत ही शार्प था इतनी जल्दी कैसे हार मान गयी?

उर्वशी-(मायूस होकर) हाँ उडा लो मजाक।

सौरव- ठीक है चलो इन दोनों में से कोई एक उंगली पकड़ो(अपनी दो उंगली उर्वशी के सामने रखकर कहा)।

उर्वशी- इससे क्या पता चल जाएगा कि हमें कि तरफ जाना है?

सौरव- ये तो अब हमारा किस्मत ही बताएगा।

उर्वशी ने मेरी एक उंगली पकड़ ली जिसे मैंने दाहिने तरफ वाले नदी के लिए चुना था। यह रास्ता गलत भी हो सकता था लेकिन हमारे पास कोई और रास्ता भी तो नहीं था। हम दाहिने नदी के ओर चलने लगे। आस-पास के गाँवों में हमारा पूछताछ जारी था। नतीजा हम फिर से नाकाम रहे। मैं और उर्वशी थक हार के अपने कैम्प के पास बैठे थे।

उर्वशी- मैं कह रही थी ना कि उंगलियों के चुनाव से रास्ते नहीं पता चलते।

सौरव- हाँ शायद तुम ठीक ही कह रही थी।

उर्वशी- तो अब क्या करें?

सौरव- मुझे लगता है कि हम जैसा सोच रहे थे वैसा है ही नहीं। हो सकता है कि कोई और दूसरा ना हो बल्कि रिया ने ही यह सब किया हो और किसी और वजह से सच्चाई छुपाने की कोशिश कर रही हो?

मैं उर्वशी से बात कर रहा था और उर्वशी मेरे पीछे देख रही थी। मैंने पुछा क्या हुआ मैं सही कह रहा हूँ कि नहीं?

उर्वशी- हां? सौरव मुझे लग रहा है कि वहाँ पर कोई खड़ा है।

मैं जब पीछे मुड़कर देखा तो वहाँ एक छोटे से पूल पर रिया खड़ी थी। मैं तो उसे पहचानता नहीं था। उर्वशी ने कहा चलो चल कर पता लगाते हैं। मैंने कहा अरे पागल हो गयी हो?

क्या पता वो यहीं की रहने वाली होगी तो?

तो क्या हुआ? अब चलो(उर्वशी ने कहा)।

मैं तो डरा हुआ था लेकिन उर्वशी पूरे कॉन्फीडेंस में थी। हम उसके पास गये। वो सामने से आते हुए नदी के लहरों को गिन रही थी।

उर्वशी- लगता है आप यहां किसी का इंतजार कर रही हैं?

रिया-(आवाज सुनकर मुड़ गयी) हाँ सही कहा आपने। अफसोस की मुझे जिसका इंतजार है वो शायद नहीं आ पाएगा। वैसे आप लोग कौन हैं?

सौरव- मैं सौरव और ये उर्वशी हम दोनो मुंबई से यहां किसी की खोज में आए हैं।

रिया- खोज में? किसकी खोज में?

अर्जुन- एक ऐसे इंसान की खोज में जो सालों से यहाँ किसी के आने का इंतजार कर रहा है।

रिया- अच्छा? तो मैं भी तो वही कर रही हूँ तो क्या आप लोग मेरे खोज में आए हैं?

उसने हमसे ये सवाल ऐसे ही कर दिया था फिर भी हमने कोई जवाब नहीं दिया। वो हमें देखती रही। हम भी उसे मुस्कुराते हुए देख रहे थे। उसने हमारे मुस्कुराहट में छुपे राज़ को पढ़ लिया और

मेरी बात झट से समझ गयी। उसे पता चल गया कि हम जिसकी खोज की बात कर रहे थे वो कोई और नहीं बल्कि वही है। वो भीतर ही भीतर बहुत खुश थी लेकिन उस वक्त उसके होठों पर हंसी के बदले उसके आँखों आंसू आ गए थे। मैं उनका तकलीफ समझ सकता था। उन्होंने पुछा कि अर्जुन कहां है? मैंने उनसे सारी बातें बता दीं और ये भी कि आप गांव चले गये हैं। उसके बाद उन्होंने हमें यहाँ लाया। लिजिए तो अपनी बात साफ कर दी।

उससे अपनी आखिरी सवाल का जवाब पाने के बाद भी अर्जुन खामोश था।

सौरव- अब बता तो दिया आपको सारी बातें अब क्यों खामोश हैं?

अर्जुन- सोच रहा हूँ कि कोई किसी का इतने लम्बे समय तक इंतजार कैसे कर सकता है?

सौरव- शायद इसी इंतजार को प्यार कहते हैं भाइ। अगर ये इंतजार नहीं होता तो शायद प्यार को परखने के लिए कोई और रास्ता नहीं होता।

अर्जुन- हा हा। क्या बात है तु भी आज कल बहोत प्यारी-प्यारी बातें कर रहा है? मैं भी देख रहा हूँ तेरी और उर्वशी की केमिस्ट्री।

सौरव- क्या? न न नहीं अ अ ऐसा कुछ न नहीं है।

अर्जुन- बस अब रहने दे तेरे बात करने से पहले तेरी हकलाहट ही जवाब दे देती है।

सौरव- हाँ है लेकिन उससे पहले भाभी को आपका इंतजार है। जाइए और उनके इतने सालों के इंतजार को अपने उसी प्यार से मिटाने की कोशिश कीजिए।